अनुभवप्रकाश।

श्रीश्रीउमारामजीमहाराजकृत।

जिसको

श्रीश्रीसुखरामजीमहाराजके शिष्य ब्रह्मनिष्ठ
साधु श्रीअचलरामजीमहाराजने
संशोधन किया।

और

श्रीश्रीनवलनाथजीमहाराजकी आज्ञासे

बीकानेरनिवासी माहेश्वरी चिन्नाणी श्रेष्ठी वैजनाथजीके पुत्र सेठ
चम्पालाल तथा किसनगोपालने मुमुक्षुओंकेलाभार्थ

बंबई में

मुद्रित कराय प्रगट किया।

संवत् १९६५, शक १८३०

Printed at the K. S. Shri Venkateshwar Steam Press, Bombay.

प्रस्तावना।

सोरठा-आप्तवाक्य प्रमाण, नहि कारण भाषा संस्कृत।
सुनत करत तम हाण, अचलराम ब्रह्मविद्ब्रह्म ॥

समस्त सज्जनोंको आनन्दपूर्वक निवेदन करनेमें आताहै कि, उस सच्चिदानन्द आनन्दकन्द परमात्माको अनेकन प्रणामहै। जिसने वेदान्त सिद्धान्त वाक्यरूपसे हमारा मायाजाल काटकर उद्धार कियाहै और आनन्दमय अपना निजस्थान दरशायाहै। ऐसे दयावान् प्रभुकी दयालुताका हम क्या वर्णन करें? जिसने चौरासी-लक्ष योनियोंमें भ्रमतेहुए हमलोगोंको मनुष्य शरीर दिया। और हमारा अज्ञानान्धकार नष्ट करनेकेलिये सूर्यप्रकाशवत् वेदान्तशास्त्र प्रगट किया। वही परमात्मारूपसे प्रादुर्भाव श्री १०८ **श्रीवनानाथजी महाराजके** परम शिष्य श्रीअवधूत महात्मा वैराग्यवान् बडे अनुभवी श्रीवेदान्तसिद्धान्तके जाननेवाले ब्रह्मनिष्ठ वरिष्ठ **श्रीउमारामजी महाराजकृत** यह **"अनुभवप्रकाश"** ग्रंथ सर्वोपरि उत्तम बनाहै। इसमें संपूर्ण वेदान्तशास्त्रका सार प्रगटहै। यह ग्रंथ संपूर्ण जीवोंका उद्धार करनेवालाहै इसमें संदेह नहीं। इसमें विशेष करके गानेके अनेक रागरागिणियोंमें पद बनायेहैं। इस ग्रन्थके उत्तरभागमें २४ अक्षरी एक ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ गुरुमुखद्वारा पढनेसे अथवा श्रवण करनेसे मानो तत्कालही मोक्षका भागी होताहै।

इस शास्त्रका संशोधन **श्रीश्रीसुखरामजी महाराजके** शिष्य ब्रह्मनिष्ठ **श्रीअचलरामजी** महाराजने बडे परिश्रमसे कियाहै। भ्रमवशात् कहीं भूल रहगई हो तो सज्जन महात्मा सुधारके बाँचें। यह ग्रन्थ १००० एक हजार पुस्तक परमार्थकेलिये मुफ्त दिये जाँयगे।

सज्जनोंका कृपाभिलाषी-

चम्पालाल बिन्नाणी,

बीकानेर

॥ ॐ ॥

अथ श्रीउमारामजीमहाराजकृतवाणियोंकी अनुक्रमणिका ।



इति श्रीउमारामजीमहाराजकृतवाणियोंकी अनुक्रमणिका समाप्ता।

अथ श्रीअनुभवप्रकाशकी अनुक्रमणिका।

इति अनुभवप्रकाशकीअनुक्रमणिका समाप्त ।



॥ श्रीपरमात्मने नमः ॥

अथ श्रीउमारामजी महाराजकृत-
वाणियाँप्रारम्भः ।

गावणकेपद । राग आसावरी ।

साधो भाई सत्री संगत सुखपाया ॥ भया आनद कल्पना तूटी ॥
रहता गांव वसाया ॥ टेर ॥

सत्की संगतका भाव समाया ॥ साच करे ठहराया ॥
सत्की संगतमें सिमरथ सूज्या ॥ ज्यांसूं ध्यान लगाया ॥ १ ॥
सत्की संगतमें साच है केवल ॥ दूर किया विप दाया ॥
साहबसेती जाय मिलाणा ॥ जन्म मरण नहि आया ॥२॥
सत्की संगत परसे कोइ साचा॥ जिनही साच पठाया ॥
कर सत्संग चले कुसंगत ॥ ज्यांके हात न आया ॥ ३ ॥
सत्की संगत जगमें तत्सारा ॥ अगम निगम जश गाया ॥
कर सत्संग अनन्त उधरिया ॥ सतमें जाय समाया ॥ ४ ॥

वनानाथ गुरु मिल्या व्यापारी ॥ सौदा सही पजाया ॥
उमाराम सत्‌भाव पिछाण्या ॥ अभै अमाप अथाया ॥५॥१॥

राग आसावरी ।

साधो भाई भेदी भेद निहारा ॥ जाणी जाण लिया निरधोंके ॥
अब डर नहीं लिगारा ॥ टेर ॥
गुरूकी शोभा गाय सुणाऊं ॥ गुरू है अगम अपारा ॥
अगम निगम गात यूं गुरूकूं ॥ साधक किया विचारा ॥ १ ॥
गुरूअविगत अविनासी एकरस ॥ गुरूका सकल पसारा ॥
सबमें छता रहे निरबंधण ॥ अकथ जाण किरतारा ॥ २ ॥
गुरूकी महर भई जिन ऊपर ॥ कारज सबी सुधारा ॥
भक्ति दान अभै पद सूंप्या ॥ ऐसा गुरू दातारा ॥ ३ ॥
सुर नर असुर भेष सब वरणे ॥ महिमा अगम अपारा ॥
गुरूबिन मुक्ति हुवे नहिं किसकी ॥ ये साचा इतबारा ॥ ४ ॥
वनानाथ गुरू चेतन देवा ॥ सबकूं जाणण हारा ॥
उमाराम गुरू पद परस्या ॥ आवागवण निवारा ॥५॥ २ ॥

राग आसावरी ।

साधो भाई सतगुरू सैन अथाई ॥ जो समझ्या शिप सैन सतगुरूकी
जिनकूं गुरू दरसाई ॥ टेर ॥
सतगुरू चेतन ब्रह्म अनादी ॥ जिन सब सृष्टि देखाई ॥
है सब मांय सबी ते न्यारा ॥ रहता अलख सदाई ॥ १ ॥
जैसें नभ सबही घट, मठमें ॥ व्यापक बाहर मांई ॥

यूं सतगुरू पूरण गया न आया ॥ निरबंधण निज सांई ॥ २ ॥
सतगुरू शोभा कथी न जावे ॥ कहण सुणणमें नाहिं ॥
ज्यूं गूँगा गुड भीतर जाणे ॥ यूं शिष्य समझ्या माहिं ॥ ३ ॥
सतगुरू अनन्त कोट हंस तान्या ॥ पलमें पार लॅवाई ॥
वनानाथ गुरू अवर्ण थाया ॥ उमाराम गम पाई ॥ ४ ॥ ३ ॥

राग आसावरी ।

साधो भाई गुरूचेतन ब्रह्म रहवा ॥ सारा सन्त वेद ऐसेई कह, परख विचार भखेवा ॥ टेर ॥
ठीका ठीक पजाया सौदा ॥ साचे सत् गुरू देवा ॥
भव सिन्धुसूं किया किनारे ॥ आप मेंई कर लेवा ॥ १ ॥
आगेसूं आगे गुरू रहता ॥ महा निकालस भेवा ॥
शेष सदा आवे नाहिं जावे ॥ ऐसा गुरू पर सेवा ॥ २ ॥
गुरू पूरा परमेश्वर सांई ॥ नहि कोइ संग बिछेवा ॥
स्याई कलम विना गुरू सिमरथ ॥ कैई रचना रच देवा ॥ ३ ॥
सकल सृष्टिका सत् गुरू मालक ॥ गुरू विना हिले न केवा ॥
गरक भरया खलकमें गहरा ॥ भाव अभाव न गेवा ॥ ४ ॥
गुरूका भेद लखे शिष्य साचा ॥ जिनकूं गुरू दरसेवा ॥
साच बिना रीझे नाहिं सतगुरू ॥ अनन्त उपाय करेवा ॥ ५ ॥
वनानाथ गुरू अदल गुसांई ॥ असल मुद्दा वक्सेवा ॥
उमाराम पाया गुरू महर्म ॥ सत् चिद् आनन्द अखेवा॥६॥४॥

रागएली ।

अर्ज मेरी सॉभलो सईं ॥ सिमर्थ बांय संभाय ॥ टेर ॥

मो दुर्बलकी सुणो वीनती ॥ कृपालां कृपाल ॥
बांय ग्रह्यांकी लाज तुमई ॥ तुमई सन्मुख नाल ॥ १ ॥
तेरे बिना दूजा नहिं जाणू ॥ ये सुमती दो भाल ॥
याहीकी फारियाद पुकारूं ॥ यही बक्स गोपाल ॥ २ ॥
तेरेसे मैं सन्त कहवाया ॥ झूंव्या तेरी चाल ॥
मैं शरणागत शरण तुमारी ॥ काटो सबी जंजाल ॥ ३ ॥
तेरी बात हाथ तेरेही ॥ तेरेसूं रे पाल ॥
दूजी कोउ कारी नहि लागे ॥ तुमही करो रुखवाल ॥ ४ ॥
हिरणाकुस रावणसा जोधा ॥ दिया पलकमे गाल ॥
भक्तां काज लिया अवतारा ॥ स्याय करी ततकाल ॥ ५ ॥
असुर संहारण अन्तरयामी ॥ भूपाई भूपाल ॥
देवनका देवा तूं दाता ॥ सिमर्थ बडा दयाल ॥ ६ ॥
सुर नर असुर गात सनकादिक ॥ गावे शेष पैंयांल ॥
महिमा अगम जाय नाहि बरणी ॥ तेरी गती निराल ॥ ७ ॥
ग्रायन गाय सकू गुण तेरा ॥ कहांलग करूं निहाल ॥
उमाराम अर्ज कह दाखी ॥ तेराही विडद सँभाल॥ ८॥ ५ ॥

राग एली ।

विगत मेरी सांभलो सही ॥ यो दाता सतगुरू दीन दयाल॥ टेर॥
हूं मारी कांई अर्ज गुदारूं ॥ मोमे गुना हजार ॥
तेरे तौं आसान कहीजे ॥ छिनमे लेत उबार ॥ १ ॥
आश्रम वर्ण साध संसारी ॥ सबियनको दातार ॥
तेरे बिना सेवक क्यास्वामी ॥ कबहुं न उतरे पार ॥ २ ॥

जती सती धर्मी अरु कर्मी ॥ तारया अनन्त अपार ॥
फेर कांई स्वामी संसारी ॥ तोय तें होत उद्धार ॥ ३ ॥
गुण अवगुण क्रिया नहिं देखे ॥ सबी सुधारे कार ॥
महर निवाज महरका मालक ॥ यह साहब तेरी सार ॥ ४ ॥
जोर जबे किसका नहिं चाले ॥ बडा बडा गया हार ॥
सतचिदआनन्दअलखअजूणी ॥ थारो कांई वरणू विस्तार ॥५॥
तेरा पार आवे नाहिं कबहूं ॥ तूं सुखसिन्धु जहार ॥
जितनी प्यास जितांकी पूरे ॥ तूं सिमरथ निराधार ॥ ६ ॥
उमारामकी योही अर्ज है ॥ सुणियो सिरजण हार ॥
जन्म जन्म तुमरी सगराखो ॥ योही अर्ज किरतार ॥ ७ ॥ ६ ॥

रागएली ।

लख्या सोई भवपार ॥ गुरूजीके महरमकूं ॥ टेर ॥
मेरा भाव लग्या सतगुरूसूं ॥ जमका लगे न वार ॥
दुरमतका जहॉं दाव न लागे ॥ सतगुरू परम उद्धार ॥ १ ॥
दुरमत काम क्रोध मद कहिये ॥ लोभ अरु अहंकार ॥
सतगुरू शब्द धूंस मांयेलागी ॥ भागा सबी विकार ॥ २ ॥
गुरूका राज सदा सब ऊपर ॥ अब डर नहीं लिगार ॥
भागा भर्म कर्म नहिं लागे ॥ सतगुरू लिया उबार ॥ ३ ॥
जिन शिष्यभाव गृह्या ॥ सतगुरूका ले पूरा इतबार ॥
तत्व तारलिया गुरू ताकूं ॥ येही गुरूका उपकार ॥ ४ ॥
वनानाथ गुरू अलख अजन्मा ॥ सुधा अद्वैत अपार ॥
उमाराम पाय निज गुरूकूं ॥ भाख्या वचन विचार ॥५॥७॥

रागसारंग ।

साधो भाई परस्यामहरनिवाज ॥ मेरो सव सन्त सुधारण काज॥
धिन गुरू तेरा महरम अज्ञाद ॥ मुझकूंभेललियाकर याद॥टेर॥
सतगुरू मेरा सिर धणी ॥ शिरपर धरिया हात ॥
वहुत जुगनकी भूल भर्मना ॥ मेटी तिर्गुणरात ॥ १ ॥
अगम अगोचर अधरकी ॥ सही वताई वात ॥
है नही के मध्य विराजे ॥ चेतन ब्रह्म अजात ॥ २ ॥
उण सिमरथ सारी रची ॥ भेद अनन्ता सात ॥
सब घट माये भरया एकसारा ॥ नहिं आवे नहिं जात ॥ ३ ॥
अति विमल नित निरमला ॥ नाहिं कोइ दूर संगात ॥
तुरीया अतीत लगे नाहि कहणी ॥ असंग अनामी रैहयात ॥ ४ ॥
सो महरम सन्त जाणियां ॥ अन्दरमें ओलखात ॥
वनानाथ सतगुरूजीरा चेरा ॥ उमाराम लख गात ॥५ ॥ ८॥

राग मंगल ।

प्यारी ये अधर सधरकी सैन ॥ समझ घटमें धरी ॥
सुरत समाया भेव ॥ देव गुरू गमगरी ॥ १ ॥
नाभी किया निहार ॥ निगे सबकी करी ॥
पांचूं शस्त्र बांध ॥ पश्चिमदिशकूं फुरी ॥ २ ॥
इडा पिंगला सोझ ॥ सुषमणा निरखरी ॥
अखंड जोत प्रकाश ॥ त्रिवेणी तट भरी ॥ ३ ॥
गगन मंडल गुंझार ॥ राग अनहद घूरी ॥

मन पायो विश्राम ॥ खुली मुक्त गली ॥ ४ ॥
सुंन सायर भरपूर ॥ वास वेगम पुरी ॥
रहत अटल अविनाश ॥ राय ओ परापरी ॥ ५ ॥
वनानाथ गुरू देव ॥ दया मुझपर करी ॥
उमाराम पिछाण ॥ मिल्यो मोहन हरी ॥ ६ ॥ ९ ॥

रागमंगल ।

प्यारी ये सोझी सुरत विचार ॥ चली कर सार है ॥
लिया अगम अस्थान ॥ मिल्यो करतार है ॥ १ ॥
दर्शन दिया दयाल ॥ भया दुख दूर है ॥
सतसायरमें सहज ॥ सदा भरपूर है ॥ २ ॥
अविगत अखे अजीत ॥ जीत नांहिं हार है ॥
रहता ब्रह्म नचिन्त ॥ पुरुष नहीं नार है ॥ ३ ॥
लखे सन्त यह सैन ॥ ज्याकूं इतबार है ॥
उमाराम विचार ॥ कही निज सार है ॥४॥ १० ॥

राग मंगल ।

प्यारी ये ले सतगुरुकी सार ॥ धार कर निहार है ॥
देखत पेखत सैन ॥ समझ भव पार है ॥ १ ॥
तूटत छूटत फन्द ॥ निरत निरबंध है ॥
खंडत नहीं अखंड ॥ लगे नांहि दण्ड है ॥ २ ॥
जात न पांत न भांत ॥ रूप नांहिं रंगहै ॥
गम नहीं अगम अखेद ॥ अटल अणभंग है ॥ ३ ॥

नैन बैन विन सैन ॥ अगोचर जाण है ॥
उमाराम लख जाण ॥ कही परवाण है ॥ ४ ॥ ११ ॥

रागमंगल ।

प्यारि ये सत्कूं लिया पिछाण ॥ जाण मन जकिया ॥
परगत पांच पचीस ॥ जहां सब थकिया ॥ १ ॥
सन्त सदा निरलेप ॥ लेप नहीं कोइये ॥
निराकार निरदोप ॥ अखे निरभोइये ॥ २ ॥
नभ घट मठमें रहत ॥ अन्दर अरु बार है ॥
यूं आतम सब मांय ॥ सबीतें पार हैं ॥ ३ ॥
सत् स्वरूप निरवाण ॥ थया इक सारहे ॥
उमाराम साइ जाण ॥ किया निरधारहे ॥ ४ ॥ १२ ॥

राग मंगल ।

प्यारी ये ले सत्की प्रतीत ॥ जहां मन आणियां ॥
नित्यानित्य विचार ॥ असत् सत् छाणियां ॥ १ ॥
माया अनित्य असार ॥ इन्हींमें द्वैत है ॥
नित आतम सत् आप ॥ अखंड अद्वैत है ॥ २ ॥
अस्त अरु जड़ क्लेश ॥ माया सब मेटिया ॥
सत् चेतन आनन्द ॥ सोई निज भेटिया ॥ ३ ॥
उमाराम शुद्ध स्वरूप ॥ परमप्रकाश है ॥
नाहिं कोई भावाभाव ॥ निरास न आस है ॥४॥१३॥

रागमंगल ।

प्यारी ये सतगुरू शब्द पिछाण ॥ ढील मत लाइये ॥
यह निश्चय उरधार ॥ कर्म कट जाइये ॥ १ ॥
सतगुरू शब्द अगाध ॥ गाध नहिं आइये ॥
नित चेतन सुखरूप ॥ गुरू परसाइये ॥ २ ॥
निश्चल अति अडोल ॥ अपरमें थाइये ॥
सबमे रह अखेल ॥ सदा निरदाइये ॥ ३ ॥
सब सन्ता कह्या अपार ॥ वेद यूं गाइये ॥
लख्या जिनीकूं ठाय ॥ कह्या नहिं जाइये ॥ ४ ॥
वनानाथ गुरू देव ॥ विगत समझाइये ॥
उमाराम लीवी जाण ॥ भर्म नहिं काइये ॥ ५॥१४ ॥

राग कानडा ।

आदू राय जोगका योई॥अगम अरु निगम साख कह दोई ॥ टेर॥
सतगुरू मोपर कृपा कीजे ॥ पारब्रह्मकी सोजी दीजे ॥
भूला बहुत जुगनका प्यासा ॥ दया करे पूरो गुरू आशा॥१ ॥
सतगुरू दया करी अब ऐसी ॥ शब्द साधना कहिहै जैसी ॥
सोहं शब्द दिया तत सारा ॥ सो निश्चै हम उरमें धारा ॥२॥
ज्यामे सुरत धरी एक सारा ॥ हरदम सास उस्वास संभारा ॥
मन पवनाका बेला बाधा ॥अरध उरध जुगती कर साधा॥३॥
द्वादश खोज सरोध लाया ॥ इडा पिंगला दोनूं धाया ॥
चन्द सूर एकण घर लाया ॥ सुपमणके घर हंस मिलाया ॥४॥

ऐसे चढया त्रिकूटी घाटी ॥ अखंड जोत जले विन वाटी ॥
निरभै जाय गगन घर लिया ॥ बैठ गगन पर डंका दिया ॥५॥
सुंन मांय सहज मिल्या सुख धारा॥ज्यांतो जीव पीव नहि न्यारा॥
सधर सरोवर है इक सारा ॥ परसे गुरूमुख संत पियारा॥६॥
वनानाथ गुरू सार बताई ॥ निश्चै जाण परमपद पाई ॥
उमाराम भरम नहिं काई॥ कर महरम आसोजी गाई॥७॥१५॥

पद राग ॥

सॉभलो सन्त समझरी वातां ॥ हरी आप अदेख रहवाया ॥
सतगुरू जाण दीवी महा झीणी॥ कर निरणे दरसाया ॥ टेर ॥
अणघड अलख निरञ्जन देवा ॥ नहीं जहां जगत पसारा ॥
आपोई आप अलोगत स्वामी ॥ नहिं कोइ खिलका धारा॥ १ ॥
आदू खेल अमावस थरप्या ॥ सुरत सरोधे लाया ॥
सास उस्वास लग्या मन मेरा॥ समझ करे ठहराया ॥ २ ॥
पडवा पहल पिछाणी काया ॥ ॐकार जगाया ॥
देखत आप आपके भीतर ॥ दुरमत दूर हटाया ॥ ३ ॥
बीजम बीज हुवा प्रकाशा ॥ चेतन तार लगाया ॥
रोजो रोज सवाया दरसे ॥ आप अकाश बहवाया ॥ ४ ॥
तीजम तंत मिल्या त्रिवेणा ॥ भलकत जोत अखंडा ॥
हद बेहद लग हुवा उजाला ॥ सब संशयकूं खंडा ॥ ५ ॥
चौथम सुरत निरत मिल चाली॥ गगना रास रचाया ॥
आदू पीव रीझायो सुन्दर ॥ अनहद नाद घुराया ॥ ६ ॥
पंचम आतमदेव परसिया ॥ सुन घर शहर बसाया ॥

बेरंग वृछ अमर फल लागा ॥ अण रागी फल पाया ॥ ७ ॥
छठम छूट गई सब आशा ॥ हंस स्वतंत्र थाया ॥
पाया भेद भजन कर पूरा ॥ ममता सबी मिटाया ॥ ८ ॥
सातम सागा भया समझका ॥ सहज अमरपुर आया ॥
निरभै हंस भया निरबंधण ॥ अब कोई काल न खाया॥९॥
आठम अधर तख्त पर आसण॥ ब्रह्म रहत बिन काया ॥
सूरा होय मिल्या महरमले ॥ पिंड ब्रह्मंड नहिं दाया॥ १० ॥
नमी नाथ निरंजन निरख्या ॥ आप निगेसूं न्यारा ॥
रहता अलख सबीमें व्यापक ॥ खोजी किया विचारा ॥११ ॥
दशम दशमें देव निराला ॥ आठूं पहर निरदाया ॥
भरिया अधर अलोगत पूरण॥ जा घर सन्त रहवाया ॥१२॥
इग्यारस एकूं एक सारा ॥ उरे परे नहिं न्यारा ॥
पागी परख लिया परवाणा ॥ नहिं कोइ जीतनहारा ॥१३ ॥
बारस भेद रह्या न बेदा ॥ बाहर भीतर वासा ॥
आतम देवा रहत अभेवा ॥ जरा मरण नहिं त्रासा ॥१४ ॥
तेरसमें तेरा नहिं मेरा ॥ हूं तूं रह्या न कोई ॥
अलख पुरुपकी अवरण महिमा॥ अद्वितीय है सोई ॥१५ ॥
चवदश चाय रही नहिं काई ॥ नित निरवाण अचाई ॥
क्रिया करम क्लेश न जामें ॥ भेदाभेद न काई ॥ १६ ॥
पूनम नित पूरणहै निरमल ॥ सो अनुभव कर दीशा ॥
सोले कला समझ महाज्ञानी ॥ भाखी विसवा वीशा ॥ १७ ॥
वनानाथ गुरू चेतन सांई ॥ अखे स्वरूप अपारा ॥
उमाराम सोई सत थाया ॥ सर्वा अतीत विचारा॥१८॥१६

राग आसा।

साधो भाई निराकार दरसाया ॥ वा घरकी मैं कहूं सेनाणी ॥
सन्त समझलो भाया ॥ टेर ।
विन मुख बोल सुण्या विन सरवण ॥ विन पग पंथ चलाया ॥
विन नैणां निरख्यो निरबंधण॥ यूं कर सत् घर आया ॥ १ ॥
वो सत् नगर दिष्टसूं दूरा ॥ सो अविनाशी थाया ॥
धर बिन अधर रह्याविन आसे॥ निरालेप बिन काया ॥ २ ॥
हैअलख पुरुष आत्म नित चेतन ॥ नहिं थावर जंगम माया ॥
सो नहिं बिछड़्या नही मिलाणा ॥ नहिं कोइ गया न आया ॥३॥
नहिं कोई दूर नजीक न न्यारा॥ नाहिं भारी हलकाया ॥
उमाराम है ज्यूंका त्यूंही ॥ अवरण आप अजाया ४॥१७॥

राग आसा ।

साधो भाई निर्गुण खेल हमारा ॥ पट दरसण साधू सब सुणजो॥
अन अक्षर किरतारा ॥ टेर ॥
कर बिन राग छत्तीसूं छेडी ॥ पग विन खेल सुधारा ॥
आंधे अगम अगोचर देख्या ॥ बहरे सुण्या चौधारा ॥ १ ॥
मीन पपील राय पंछीका ॥ तीनो खोज विचारा ॥
दरस्या गैव गुरूका ज्ञाना ॥ प्रगट गुप्त मंझारा ॥ २ ॥
अखे अजाती सबका साथी ॥ बेरंग ब्रह्म विचारा ॥
चेतन थया एकरस आदू ॥ निरालंब निराकारा ॥ ३ ॥
बोध स्वरूप आतमा केवल ॥ नाम रूपसूं न्यारा ॥
उमाराम सुझ अनुभवकी ॥ प्रगट कही पुकारा ॥ ४ ॥१८॥

राग आसा।

साधो भाई रैवो सन्मुख गुरू सामा॥काटे जन्म जन्मका फंदा॥
अवर धरो नाहिं जामा॥ टेर॥

धूपन छांय दिष्ट नहिं पहुँचे॥ अगम ब्रह्म विसरामा॥
बिन सत् गुरू कोई पार न पावे॥ ज्यां नहिं सिंवरण कामा॥१॥
सत् गुरू ज्ञान लखाया केवल॥ निर्गुण अलख अनामा॥
भई पिछाण भर्म सब भागा॥ पाया सधर मुकामा॥२॥
नित निरवाण ब्रह्म वे नामी॥ धरण गगन विन गामा॥
समझ्या सन्त लखे वा घरकूं॥ भूला नर अभिमाना॥३॥
वनानाथ सत् गुरू दी सोजी॥ तत्व ज्ञान निज धामा॥
उमाराम आत्म लखी चेतन॥ क्रिया थकत तमामा॥४॥१९॥

राग आसा।

साधो भाई सत् शब्द प्रकासा॥ निश्चैं ओलख लिया निज तत्व
अनुभव कया विलासा॥ टेर॥

पांच तत्वकूं प्रगट परख्या॥ तोड़्या पचीसूं पासा॥
तीन गुणाका तिमिर मिटाया॥ शुद्ध स्वरूप माहीं वासा॥१॥
शुद्ध स्वरूप सुतेप्रकाशी॥ नहीं ज्यां तम प्रकाशा॥
आदि अरु अन्त मध्य नहिंवाको॥ नहिं ज्यां आशनिरासा॥२॥
सेवा सुरत निरत नहिं पहुंचे॥ नही वहां श्वास उश्वासा॥
अरध अरु ऊरध दशूंदिश नाहीं॥ नित चेतन इकरासा॥३॥
वा कारण कारज नहिं कोई॥ नहि कोई नाश अनासा॥

उमाराम आतम शुद्ध चेतन ॥ नहिं स्वामी नहिंदास॥४॥२०॥

राग आसा ।

साधो भाई निरतधेरे निरखाणा॥ सतशब्द लख कही पारखा ॥
परसे सन्त सुजाणा ॥ टेर ॥
सतगुरू शब्द दिया निरवाणा ॥ ज्या संग किया पियाणा ॥
मनका मता सहजमें खूटा ॥ करता लहर मिटाणा ॥ १ ॥
अनुभौ चस्मा खुल्या अगमका ॥ वे रंग ब्रह्म पिछाणा ॥
मिटगई त्रास आस नहि अंदर ॥ सतसायर गलताणा ॥ २ ॥
तामे करम धरम नहिं धरता ॥ नहिं गहला नहिं सैंणा ॥
अकल अरूप सकलमें व्यापक॥ गुरूमुख ज्ञानी जांणा ॥ ३ ॥
सो शुद्ध आतम सदा अचाई ॥ ज्यां कोई लाभ न हाणा ॥
उमाराम सोई पद पाया ॥ आदू अमर ठिकाणा ॥ ४ ॥ २१ ॥

राग आसा ।

साधो भाई समझ किया एक सारा॥ कटगया करम भरम सब भागा
दरस्या देव अपारा ॥ टेर ॥
सतगुरू सात द्वीप नवखंडपर ॥ सब घट किया पसारा ॥
जिनपर कृपा सो घट तारे ॥ यह गुरूका उपकारा ॥ १ ॥
होय सन्मुख सतगुरू संगलागा ॥ मिटगया अन्दर अँधारा ॥
सूज्या साम सकलसूं न्यारा ॥ दुरस किया दीदारा ॥ २ ॥
बाहर भीतर सघर सरोवर ॥ नाहिं दुश्मन नाहि प्यारा ॥
कहतां बण आवे नाहि कांई ॥ ज्यू गूंगे गुड विचारा ॥ ३ ॥

वनानाथ गुरू सत् चिद्आनन्द ॥ नित निर्गुण निराकारा ॥
उमाराम सोई निरवाणी ॥ नहिं कोइ द्वैत लिगारा॥४॥२२॥

राग आसा ।

साधो भाई समझे गुरूका बाला ॥ समझ्या दरसे आतम चेतन॥
कटे करमका जाला ॥ टेर ॥

फुरी अदेख देखले आया ॥ होय चेतन किया चाला ॥
क्रिया करममे भूल बंधाणा ॥ धरचा भरमका पाला ॥ १ ॥
चित्तमन बुध हंकारा कहिये ॥ यह चारूं वह बाला ॥
बांध स्वरूप स्वप्नहोय भरम्या ॥ चल्यो दे घर ताला ॥ २ ॥
पागी मिल्या परमगुरू पूरा ॥ उलटा किया निहाला ॥
अपणा खोज लिया आपहीमें ॥ खुली दिष्ट घर भाला ॥ ३ ॥
अधर आधार अखंड लिव लागी॥ आप अदेख उजाला ॥
ज्यांका था तांही मन [illegible] ॥ सो पद कहिये निराला ॥ ४ ॥
आदि अ[illegible]न॥ नहिं फुरण अफूरण जंजाल॥
[illegible]॥ पूरण अरथ संभाल॥ ५॥२३ ॥

[illegible] एली ।

[illegible] ॥ सब दुख दिया विसार ॥ टेर ॥
[illegible]वो ॥ मती लगावो वार ॥
[illegible]डा ॥ पारब्रह्म पिया सार ॥ १ ॥
[illegible] ॥ दातारां दातार ॥
[illegible]गेना ॥ वा पीतमकूं धार ॥ २ ॥

सदा अथाग थाग नहिं वाको ॥ केवल आनन्द अपार ॥
आदि अनादि अखंड अविनासी ॥ ऐसा वो करतार ॥ ३ ॥
वा पीतमके मिली मोहोले ॥ तूटा सर्वी विकार ॥
कृपा भई कटी सब क्रिया ॥ अमर पायो भरतार ॥ ४ ॥
विषकी वास तजे हंकारा ॥ पीतमसूं इतबार ॥
या विध जाण लीवि सोइ जीता ॥ यह विवेक ततूसार ॥ ५ ॥
याविधकूं जाणे नहिं जबलग ॥ सरे नहीं कोउ कार ॥
दूजा काज अकाज कहीजे ॥ जुग जुग मिटे न हार ॥ ६ ॥
अगम निगम शोभा कह थाकी॥ सब कहणीके पार ॥
उमाराम सूरा सन्तपरसे ॥ पीतमको दीदार ॥ ७ ॥ २४ ॥

राग एली ।

सुरत मेरी पीयेसूं लगी ॥ सत् गुरू दिया लखाय ॥ टेर ॥
मेरा पीव सकलका साहब ॥ सब पर रखे महर ॥
सबकी जाण उनींतें चाले ॥ रहता आपहि ठहर ॥ १ ॥
वो साहब सारामें सामल ॥ सबहीमें रहे गहर ॥
हैं सब माये रह निर आसे ॥ आप अनामी अलहर ॥ २ ॥
वो पीतम मेरेकूं दरस्या ॥ मिटया हमारा जहेर ॥
निज सुख रूप सदा एक सारा॥ लीया सुरता हेर ॥ ३ ॥
वा पीतमकी खबर न जिनकूं ॥ मिटे नहीं दुख लहेर ॥
और खबरतें काज न सीझे ॥ अगम निगम कह टेर ॥ ४ ॥
कोटक भाण रोमकी शोभा ॥ तां नहि सांझ सवेर ॥
अकथ उजालां कह्या न जावे ॥ कोई कहसके न फेर ॥ ५ ॥

सच्चिदानंद केवल करतारा ॥ सभर भरया चौंफेर ॥
उमाराम पीतमकी सना ॥ लखे संत कोई शेर ॥६॥२५॥

राग एली ।

सुरत मेरी दमसे लगीरे एली ॥ सो दम लिया पिछाण॥ टेर॥
दमका दम दमींकूं फोरे ॥ पिण्ड ब्रह्मंड सारा ॥
सबी दमासूं आप निरंतर ॥ वो सच्चिदानन्द प्यारा ॥ १ ॥
सबी दमांमें वो दम व्यापक ॥ सबका सिरजण हारा ॥
सबी दिखाय दिष्ट नहिं आवे ॥ वो दम अखी उजारा ॥ २ ॥
सारासार उन्हींतें भ्यासे ॥ वो दम रह एकसारा ॥
जाण स्वरूप अरूप अनादि ॥ सतनकूं इतबारा ॥ ३ ॥
वा दमकूं हम निश्चय जाण्या ॥ तूटा भरम अंधारा ॥
नाम रूप दम मिथ्या दरस्या ॥ वो दम अमर दीदारा ॥ ४ ॥
वेद सन्त वा दमकूं वरण्या ॥ नेती कह्या पुकारा ॥
उमाराम वा दमकी सैना ॥ सब कहणीके पारा ॥५॥ २६ ॥

राग एली ।

सधर सतसामकूं लख्यारे ॥ सतगुरूके प्रताप ॥ टेर ॥
सब्री कलपना मनकी मानी ॥ मतहीणा वेकार ॥
महामलीन विपैकूं बोरे ॥ झूठा करत व्योपार ॥ १ ॥
पांच विपैको मन अधिकारी ॥ मन क्रिया आसार ॥
अंतःकरण अविद्या सारी ॥ मिथ्यादिरस आकार ॥ २ ॥
सतगुरू भेद लखाया पूरा ॥ निश्चै किया विचार ॥

सदा अथाग थाग नहिं वाको ॥ केवल आनन्द अपार ॥
आदि अनादि अखंड अविनासी ॥ ऐसा वो करतार ॥ ३ ॥
वा पीतमके मिली मोहोले ॥ तूटा सबी विकार ॥
कृपा भई कटी सब क्रिया ॥ अमर पायो भरतार ॥ ४ ॥
विषकी वास तजे हंकारा ॥ पीतमसूं इतबार ॥
या विध जाण लीवि सोइ जीता ॥ यह विवेक तत्सार ॥ ५ ॥
याविधकूं जाणे नहिं जबलग ॥ सरे नहीं कोउ कार ॥
दूजा काज अकाज कहीजे ॥ जुग जुग मिटे न हार ॥ ६ ॥
अगम निगम शोभा कह थाकी ॥ सब कहणीके पार ॥
उमाराम सूरा सन्तपरसे ॥ पीतमको दीदार ॥ ७ ॥ २४ ॥

राग एली ।

सुरत मेरी पीयेसुं लगी ॥ सत् गुरू दिया लखाय ॥ टेर ॥
मेरा पीव सकलका साहब ॥ सब पर रखे महर ॥
सबकी जाण उनीतें चाले ॥ रहता आपहि ठहर ॥ १ ॥
वो साहब सारामे सामल ॥ सबहीमें रहे गहर ॥
है सब माये रह निर आसे ॥ आप अनामी अलहर ॥ २ ॥
वो पीतम मेरेकूं दरस्या ॥ मिट्या हमारा जहेर ॥
निज सुख रूप सदा एक सारा ॥ लीया सुरता हेर ॥ ३ ॥
वा पीतमकी खबर न जिनकू ॥ मिटे नही दुख लेहर ॥
और खबरतें काज न सीझे ॥ अगम निगम कह टेर ॥ ४ ॥
कोटक भाण रोमकी शोभा ॥ तां नहिं सांझ सवेर ॥
अकथ उजालां कह्या न जावे ॥ कोई कहसके न फेर ॥ ५ ॥

सच्चिदानंद केवल करतारा ॥ सभर भरया चौफेर ॥
उमाराम पीतमकी सना ॥ लखे संत कोई शेर ॥६॥२५॥

राग एली ।

सुरत मेरी दमसे लगीरे एली ॥ सो दम लिया पिछाण॥ टेर॥
दमका दम दमीकूं फोरे ॥ पिण्ड ब्रह्मंड सारा ॥
सबी दमासूं आप निरंतर ॥ वो सच्चिदानन्द प्यारा ॥ १ ॥
सबी दमांमे वो दम व्यापक ॥ सबका सिरजण हारा ॥
सबी दिखाय दिष्ट नहिं आवे ॥ वो दम अखी उजारा ॥ २ ॥
सारासार उन्हींतें भ्यासे ॥ वो दम रह एकसारा ॥
जाण स्वरूप अरूप अनादि ॥ सतनकूं इतबारा ॥ ३ ॥
वा दमकूं हम निश्चय जाण्या ॥ तूटा भरम अंधारा ॥
नाम रूप दम मिथ्या दरस्या ॥ वो दम अमर दीदारा ॥ ४ ॥
वेद सन्त वा दमकूं वरण्या ॥ नेती कह्या पुकारा ॥
उमाराम वा दमकी सैना ॥ सब कहणीके पारा ॥५॥ २६ ॥

राग एली ।

सधर सत्सामकूं लख्यारे ॥ सतगुरूके प्रताप ॥ टेर ॥
सबी कल्पना मनकी मानी ॥ मतहीणा वेकार ॥
महामलीन विपैकूं बोरे ॥ झूठा करत व्योपार ॥ १ ॥
पांच विपैको मन अधिकारी ॥ मन क्रिया आसार ॥
अंतःकरण अविद्या सारी ॥ मिथ्यादिरस आकार ॥ २ ॥
सतगुरू भेद लखाया पूरा ॥ निश्चै किया विचार ॥

सदा निराश लेश नहिं वाके ॥ निरबंधण किरतार ॥ ३ ॥
वो किरतारा सबमें थाया ॥ सबहीका दातार ॥
हाण लाभ न्यारा नहिं भेला ॥ आपोई आप अपार ॥ ४ ॥
वाकी शोभा कथी न जावे ॥ अगम निगम गई हार ॥
भेद अलेदा वचन न पहुँचे ॥ निरालम्ब निराधार ॥ ५ ॥
नाम रूप मन भाव मिटावे ॥ तजे विषेकी सार ॥
उमाराम केवल जब दरसे ॥ सही पुरुष दीदार ॥६ ॥२७ ॥

पदराग ।

पायाहे जी सतगुरू श्यामका ॥ दीदार मैं पायाहै ॥ टेर ॥
सोहं भेद दिया मेरे सतगुरू ॥ जाका सिवरण गया ॥
जागी जाण धरी धुन उनमें ॥ दुरमत दूरा भया ॥ १ ॥
अखी उजाला सबके पारा ॥ सन्मुख दरशण किया ॥
नूर अखंडित निहचल वासा ॥ सो तो गया न आया ॥ २ ॥
आदि रु अंत मध्य तिहुंमाहीं ॥ रहे चेतन एक राया ॥
सो समझ्या सतगुरूकी सैना ॥ जो जन महरम पाया ॥ ३ ॥
वनानाथ गुरू सतस्वरूपा ॥ नित निरवाण अथाया ॥
उमाराम सोई निज केवल ॥ मैं तूं भेद विलाया ॥४॥२८॥

प्रदराग ।

अबमैं जाण्या हैजी ॥ सत पीतम सम भाव ॥
अब मैं जाण्या ॥ टेर ॥
मेरा पीव पीतका गाढा ॥ पीत बिना नहिं पावै ॥

सबसूं तोड रखे पीतमसे ॥ जब पीतम दरसावे ॥ १ ॥
निज पीतम इच्छाका दाता ॥ सकल सिष्ट दिखलावे ॥
सबमें आप सरोवर थाया ॥ किसकी निजर न आवे ॥ २ ॥
आनन्द अपार पार नहिंवाको ॥ महिमा अगम अथावे ॥
नित केवल पीतम परमेश्वर ॥ प्रगट भाक सुणावे ॥ ३ ॥
जबलग पीत लगे नहिं वासूं ॥ तबलग दरद न जावे ॥
दूजी पीत करो कोड बहुती ॥ ज्यांसूं काज न थावे ॥ ४ ॥
अन अक्षर अक्षर नहि लागे ॥ क्या कहणी करगावे ॥
संत लखे पीतमकी सैना ॥ बुरी भलीडं निरदावे ॥ ५ ॥
वनानाथ गुरू शब्द सुणाया ॥ एकोएक लखावे ॥
उमाराम सही कर समझ्या ॥ अखंड अथाग रहवे॥६॥२९॥

पदराग।

अब मोय दिख्या है जी ॥ दिलदिलदारका दीदार ॥ टेर॥
अनन्त दिलांका दिल अविनासी॥ अनेक दिल दिखलावे ॥
सकलदिलांका वो दिलमालक ॥ अदली अदल चलावे ॥ १ ॥
सकल दिलांपर हुक्म उनीका ॥ पलभर चूक न पावे ॥
साच झूठ दोऊं चले हुक्मसूं ॥ आप रहे निरदावे ॥ २ ॥
जबलग वा दिलकू नहि जाणे ॥ तबलग गोता खावे ॥
दूजी जाण रखो बहु तेरी ॥ वा दिलमें नाहिं भावे ॥ ३ ॥
नापाकी दिल काट भगावे ॥ पाक महोबत थावे ॥
जब दिलदार रखे नाहिं परदा ॥ अरस परस मिल जावे ॥ ४ ॥
वा दिलकी गम कथी न जावे॥ वेद थक्या क्या गावे ॥

मुरसद महर करे जब सूजे ॥ दिलकूं दिल दरसावे ॥ ५ ॥
वनानाथ गुरू नित पूरणदिल ॥ दिष्ट मुष्ट नहि आवे ॥
उमाराम है दिल सोई । सत लख भाक सुणावे ॥ ६ ॥ ३० ॥

पद राग ।

दाता तेरी कुदरत पर कुरबाणी । तेरी गम विरला जाणी ॥टेर॥
सतगुरू मया आंकुर पूरबला ॥ साधु संगत सत ठाणी ॥ १ ॥
भव दरियाव तरंग चितवन बेहे ॥ पारकिया निरवाणी ॥ २ ॥
सदा अखूट कबहुं नहि खूटे ॥ सो चित्त लिया है पिछाणी॥३॥
आप अलोगत लोग रचाया ॥ सब रचलूं क्या सेलाणी॥ ४ ॥
उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम ॥ सबर भरया गरकाणी ॥ ५ ॥
अवरण महिमा वरणी नहिं जावे॥कोउ लगे नांहिं काणी ॥ ६ ॥
वनानाथ गुरू भव डर भाग्या॥उमाराम ठीक ठहराणी॥७॥३१॥

पदराग ।

तेरी गम अकथ कहाणी ॥ कोउ पहुंचे नहिं वाणी ॥ टेर ॥
अकल स्वरूपी कलियो नहिं जावे॥ आप अलेखी थाया ॥ १ ॥
तेरेसे सारी कल चाले ॥तूही अकल निरदाया॥ २ ॥
तूंहीं सकल सृष्टिको दाता ॥ तूही अपार रहाया ॥ ३ ॥
तेरी जाण तुझेही मालम ॥ तेरा भेद अथाया ॥ ४ ॥
तूं निकलंक निरालेप अनादू ॥ तूं पूर्ण थिर थाया ॥ ५ ॥
उमाराम शुद्ध आतम परस्या ॥ नहीं जहां करम न काया॥६॥३२॥

पद राग ।

लख्या मन केवल ब्रह्म अपार ॥ टेर ॥
सत् गुरू दाता कृपा कीनी ॥ दियां ज्ञान तत् सार ॥ १ ॥
जाण्यां ज्ञानां ब्रह्म विज्ञाना ॥ निरबंधण निराकार ॥ २ ॥
सबी खेलकूं आप देखावे ॥ सब वाके आधार ॥ ३ ॥
निकलंक स्वामी सबमें व्यापक॥ देख दिखावण हार ॥ ४ ॥
सन्त शास्त्र कहे कह थक्या ॥ कहणी लगे नाहिं लगार ॥ ५ ॥
नित निरवाणी अकथ कहाणी॥उमाराम परस्या विचार६॥३३॥

राग प्रभाती ।

या विध सुरत मिली पीतमसूँ॥ अपनी सार विचारी ॥
परमसुखी भई सदा सवांगण ॥ छेंद्या द्वैत विकारी ॥ टेर ॥
निज पीतमसूं सुरत विछूटी ॥ शुद्ध बुद्ध सबी बिसारी ॥
भ्यानक रूप जगत विध नाना ॥ ज्यांमे पच पच हारी ॥ १ ॥
च्यार खाणको अंत न आवे ॥ लख चौरासी वारी ॥
व्याधि रोग लग्यां अति उरमें॥ फिर फिर भई खवारी ॥ २ ॥
नर देह मिली बडा पुनांसू ॥ जाग्या भाग भलारी ॥
चेत अबे आई पुल आछी ॥ वे गई होय हुसियारी ॥ ३ ॥
सरदा झाल सवागण सेठी ॥ करो चलणकी त्यारी ॥
तेरा पीव वसे पद चौथे ॥ जासूं मिलो पियारी ॥ ४ ॥
चिदानन्द पीतम परमेश्वर ॥ अनत कला विसतारी ॥
सर्व भावसूं न्यारा खेले ॥ गुरू विना लगे न कारी ॥ ५ ॥
वे गुरू दयाल तिरण और तारण ॥ अशरण शरण उधारी ॥

परकारज लिया अवतारा ॥ वेद पुराण पुकारी ॥ ६ ॥
आलस त्याग उठी भट सुरता ॥ उठकर चली सवेरी ॥
चलकर गई शरण सतगुरूकी ॥ मैंहूं शरण तुम्हारी ॥ ७ ॥
बोले दयाल दयाके सिन्धू ॥ क्यूं आई ढिग मारी ॥
पूछे बात सवागण तोसूं ॥ कहो हकीकत थारी ॥ ८ ॥
उपजे मरे मरे फेर जनमें ॥ अजर पास वडभारी ॥
तुम बिन दरद कटे नहिं मेरा ॥ तुम गुरू काटण हारी ॥ ९ ॥
तिर्गुण मान लिया ज्या दिनसूं ॥ भूल गई भरतारी ॥
पीतम मिल्या कटे दुख सारा ॥ तज दो जगत विकारी ॥ १० ॥
दोयकर जोड अरजकी सुरता ॥ मैंहूं अति खुदियारी ॥
ज्या विध पीव मिले सोई भाखो ॥ करूं पीवसूं यारी ॥ ११ ॥
पीतमका महरम कह दाखूं ॥ लीज्यो ताय विचारी ॥
गुणा अतीत पीव सुण सुरता ॥ सब वाके आधारी ॥ १२ ॥
जाग्रत् स्वप्न सुषुपति कहिये ॥ ये तिर्गुण मायारी ॥
पीतम पद चौथाहै तापर ॥ अपणा आप अपारी ॥ १३ ॥
विश्वे जीव थूल देह धरके ॥ भलीभांतसूं धारी ॥
इन्द्रयां अर्थ करत केई किरिया ॥ जाग्रतका हंकारी ॥ १४ ॥
तैजस जीव मान मनोरथकूं ॥ सूंक्षम देह पसारी ॥
संकल्प अर्थ दृग लघु कल्पे ॥ सपन तणां इधकारी ॥ १५ ॥
प्राज्ञे जीव देह कारणकूं ॥ आदि अनादि निहारी ॥
भूल अर्थ सुंनगई सुषोपत ॥ तहां नाहिं याद लिगारी ॥ १६ ॥
पीतम पद तीनांको प्रेरक ॥ ज्यूंका त्यूं दिधारी ॥

आप सदा निरलेप निरंजन ॥ रेतिनमें तिन पारी ॥ १७ ॥
तिर्गुण भाव कलप पीतममें ॥ पीतम अखे मुरारी ॥
सतगुरू सूझ कही कर निरणे ॥ सुरता ताये लख्यारी ॥ १८ ॥
मोटी महर करी सत्सतगुरू ॥ दातारां दातारी ॥
पूरण ज्ञान दिया पेंता शुद्ध ॥ तिर्गुण मिटी अंधारी ॥ १९ ॥
वनानाथ गुरू पीतम परस्या ॥ सुरत सुवागण नारी ॥
उमाराम निमक नहिं खंडे ॥ रिलमिल भई एकसारी॥२०॥३४॥

पदराग ।

सत्गुरू मेरम लखाविया ॥ जगकूं दिया बिसार ॥
समझ सारिये ॥ गुरू बिन गेलो ना मिले ॥ टेर ॥
गुरू कृपा सत्संगतें ॥ दरस्या ब्रह्म विचार ॥
पारब्रह्म पिछाणिया ॥ वाको आर न पार ॥ १ ॥
आदि अन्त वाको नहीं ॥ नहि हलवा नहिं भार ॥
न्यारा भेलाको नहीं ॥ नहि कोई जीतनहार ॥ २ ॥
अविगत अकथ अलेप है ॥ ज्यां नहीं दिरस विकार ॥
असंग अनामी रहत है ॥ नित निर्गुण निराकार ॥ ३ ॥
वनानाथ सतगुरू मिल्या ॥ पाई चेतन सार ॥
उमाराम चेतन लख्या ॥ आपोई आप अपार ॥४॥३५॥

राग रेखता ।

सदा सत् परख्या निज नैणा ॥ नहीं वो मूर्ख नहीं सैणा॥ टेर ॥
जग्या केवल अनुभौ ज्ञाना ॥ तिमिर तन भेद मिट्या नाना॥

अखंड निज नूर प्रकाशा ॥ निकाल स चेतन निरआशा ॥१॥
ख्याली उन खेल दिखलाया ॥ सबी रच रहत निरदाया ॥
घटे वधे नाम रूप सारा ॥ आप निरलेप निराधारा ॥२॥
खेल सव मायाके माहीं ॥ शुभाशुभ दुख सुख सव याहीं ॥
भांत रंग रूप विस्तारा ॥ इन्द्र सम जाल आकारा॥ ३॥
पिंड ब्रह्मंड नहीं माया ॥ ज्यां कछु धूप नही छाया ॥
परब्रह्म गया नहि आया ॥ अकल अनलाग एक राया॥४॥
रमझ यह लखे संत सूरा ॥ बुद्धि मन चक्षुतें दूरा ॥
चिदानन्द निरमल निरवाणा॥सोई उमाराम निज जाणा५॥२६॥

राग रेखता ।

अनामी कह्या नहिं जावे ॥ लखे सोई महरम वो पावे ॥ टेर ॥
इस्क दा रायहै एडा ॥ चले वे धड़क फक्कर बैंडा ॥
काहूका ध्यान नहि धारा ॥ आपा तन खोय गया सारा ॥१॥
इस्क पद अटल आप देखा ॥ निरंतर निरसंधे पेखा ॥
अनादू निरबंधण नूरा ॥ सकलमें गरक भऱ्या पूरा ॥२॥
आपतां जगत नहिं जोगी ॥ अवर कोई हकीम नहिं रोगी ॥
वेद संत कह यूं दरसाया ॥ नितोनित केवल थिरथाया ॥ ३ ॥
तीव्रवैराग परम ज्ञाना ॥ तहां मन माया नहिं आना ॥
उमाराम चेतनहै सोई ॥ द्वैतका लेश नहि कोई ॥ ४ ॥ २७ ॥

रागरेखता ।

इस्क निरभेद लख गाया ॥ परमपद इस्कतें पाया ॥ टेर ॥

इस्ककी रीत कह दाखूं ॥ निगे कर सूझ ना भाखूं ॥
इस्क तो दोयहै भांतां ॥ खवर तो पडे कोई पांतां ॥ १ ॥
सवी जग झूठ है वाना ॥ अति दुख या जगमें जाना ॥
इस्क यो पकड्या सोई हारा ॥ जुगोंजुग भुगतेगा प्यारा ॥ २ ॥
साच सच्चिदानन्द निराधारा ॥ सदा सुखरूप एक सारा ॥
इस्क यो ग्रहा कोई साधू ॥ जिनी संत पाया घरआदू ॥३॥
इस्क दोउं खूव हम देखा ॥ साच अरु झूठका लेखा ॥
जैसा था जैसा वतलाया ॥ अरथ कर सागे दरसाया ॥ ४ ॥
गुरू वनानाथ दीवी लखता ॥ लग्या रंग रोम रोम मुक्ता ॥
उमाराम इस्कमें माता ॥ तोड़दिया जगत्का नाता ॥ ५ ॥ ३८ ॥

रागरेखता ।

ज्ञान निज आतमका योही ॥ संत सब सुरती कह सोही ॥ टेर॥
प्रगटी निरालंब सोजी ॥ निरखिया निरगुण निज खोजी ॥
यथार्थ भाखूं सोई वाणी ॥ जाण यों निशिदिन निरवाणी ॥१॥
अकरता पद अखे अध्ये ॥ ध्यान अरुध्यातानहिं कोईध्ये ॥
नहीं वा वाल तिरण दाना ॥ अधर धर पावत नाहिंआना ॥२॥
माया गुण कारण कारज होई ॥ आसरे चेतनके योई ॥
कर्म करता क्रिया भ्यासे ॥ सकलकूं चेतन प्रकासे ॥ ३ ॥
वाहर भीतर आतमसुधा ॥ हरष अरु विख्यात नहि धूंधा ॥
सदा सुखकंद अविनासी ॥ अनादि निरबंध एक रासी ॥४॥
ब्रह्मका गुंझ अति थाया ॥ गलत वां गुण कारण माया ॥
उत्पती परलो वां झूंटा ॥ अजन्मा तुष्ट नाहिं रुष्टा ॥ ५ ॥

रहतानित अन्येन स्वरूप देवा॥ इष्ट अनइष्ट नहीं भवो ॥
अद्रितीय उमाराम सोई ॥ नहीं कोई लघु दीर्घ दोई॥६॥३९॥

रागवसंत ।

होरी अनुभव जग्या विवेक ॥ जी साधो जीयो ॥
ज्यांमें दरस्या ब्रह्म अदेख ॥ टेर ॥

होरी झाल देखता कहिये ॥ धारां लगी अनेक ॥
भांतभांतकी उठे दो झालां ॥ ज्यांमें आपा तप्या बहु भेक॥१॥
विषै मायाको मनहे भोगी ॥ गृह विषयकी टेक ॥
तृष्णा अनंत लपट मांई उठे ॥ ज्यांमें जलता फिरे विपेक ॥२॥
मन माया निर्गुणतें भ्यासे ॥ पूरण भरचा अलेक ॥
नित ज्यूंका त्यूं रहत सकलमें॥ नेकुल ब्रह्म अभेक ॥ ३ ॥
तजो सकल संताप दिरसकी ॥ अभै अकरता देख ॥
स्वप्रकाशी आनंद अपारा ॥ निरसंधे लिया पेख ॥ ४ ॥
वनानाथ गुरू निर्गुण कहिये ॥ ज्यां धरम करम नाहि रेख ॥
उमाराम सोई शुद्ध चेतन ॥ कोउ एका लगे नाहि बेख ॥५॥४०॥

रागवसंत ।

होरी अनुभव आप अथाप ॥ जी साधो जीयो ॥
ज्यामें नहि तिर्गुणकी ताप ॥ टेर ॥

निर्गुण क्रियां सबीगुण भ्यासे ॥ नानारूप विलास ॥
गुण विलासमें निर्गुण ऐसे ॥ ज्यूं निरमल आकाश ॥ १ ॥
दृश्यादृश्य अदृश्यतिहुंझवका ॥ आदि अन्त मध नास ॥

नित निर्गुण सतचित आनन्द ॥ नहिं ज्यां तिर्गुण भ्यास ॥ २॥
निरापक्ष निरलेप ॥ निरंतर पारब्रह्म प्रकाश ॥
ज्यां नही हूणा नहिं अणहूणा ॥ नहीं ज्यां वास अवास ॥ ३ ॥
लख अलख दोउंतें दूरा ॥ अगम निगम थकी वाच ॥
उमाराम सोई निज चेतन ॥ आपोई आप अवाच ॥४॥४१॥

राग सोरठ ।

फकीरी यह महरम तत् सार ॥ ऐसी सूझ सूझी सोई सीधा ॥
मिलरया मोक्ष द्वार ॥ टेर ॥
माया ठगणी बोत ठगारी ॥ ठगीया जुग संसार ॥
सुर नर असुर लोक तीनूकूं ॥ लीया घेर बकार ॥ १ ॥
झूठा साव साच दिखलावे ॥ आ पासी दीवी डार ॥
परतक रस मीठा दे पकड्या ॥ या छलसूं लिया नार ॥ २ ॥
छल बहु भांत मायाके माहीं ॥ एक एक इधकार ॥
चवदे लोक गृह्या बाकेमें ॥ किसविध होय उबार ॥ ३ ॥
सत् चेतन आनन्द विचारे ॥ आपा तजे विकार ॥
उनी फक्कर मायाकूं छेदी ॥ दीवी वासना जार ॥ ४ ॥
उनी फक्करकूं ज्ञान ब्रह्मका ॥ आप ब्रह्म एक सार ॥
सदा अमल माया मल नाही ॥ शुद्ध स्वरूप अपार ॥ ५ ॥
वनानाथ पाया गुरू पूरा ॥ सोजी दीवि विचार ॥
उमाराम पिछाणी निश्चै ॥ माया तजी असार ॥६॥४२॥

राग सोरठ ।

फकीरी निराधारकी सार ॥ सोई लखे तजे सब आपा ॥
जो पावे दीदार ॥ टेर ॥
असल फकीर असलकूं मान्या ॥ अदली लिया विचार ॥
जीव लहर सब कटी कल्पना ॥ दीवी नकल विडार ॥ १ ॥
अदली पुरुष अमर अविनासी ॥ ताका वार न पार ॥
आप अनादी केवल थाया ॥ नहि कोई जीतन हार ॥ २ ॥
चवदे लोक इकीसूं ब्रह्मंड ॥ अदलीके आधार ॥
परवर दिगार वटो घट व्यापक ॥ सबकूं जाणणहार ॥ ३ ॥
हिन्दू मुसलमानका मालक ॥ सबकी सुणे पुकार ॥
जैसी करे तैसी दिखलावे ॥ चूकत नहीं लिगार ॥ ४ ॥
अखे स्वरूप सदा निरबंधण ॥ आपोई आप अपार ॥
उमाराम फक्कर सोई चेतन ॥ अनुभव कह्या विचार ॥ ५ ॥ ४३ ॥

रागसोरठ ।

फकीरी हद बेहदके वार ॥ सोई फकीर तजे हद बेहद ॥
सो पावे निजसार ॥ टेर ॥
मस्त फकीर सदा रह मस्ता ॥ मेट्या विषय विकार ॥
तीनो लोक समझिया मिथ्या ॥ तत्त्व दिया विसार ॥ १ ॥
गृहा सत् धारणा गाढी ॥ आंठ पोहोर हुशियार ॥
खुल्या कपाट दरसीया दाता ॥ पायो अलख अपार ॥ २ ॥
पूरण ब्रह्म रहे थिर सोई ॥ निरभय निज निराकार ॥

दूजा लेस नहीं ता भीतर ॥ यह केवल निराधार ॥ ३ ॥
जो जाणे जाहूकूं मालम ॥ जिनकूं यह इतबार ॥
उमाराम साच कही साखा ॥ वेदा नहीं लिंगार ॥ ४ ॥ ४४॥

रागसोरठ।

फकीरी रहत निचिन्त सबूर ॥ निरबंध फक्कर सदा थिरथाया॥
मेट दिया जग कूर ॥ टेर ॥
शब्द सम शेर दिया गुरू साचा ॥ लिया समझ सहि सूर ॥
क्रिया करमकूं काट पहुंता ॥ मालम भई हजूर ॥ १ ॥
पट्टा मिल्या प्रतीत पूरवला ॥ अमर लोक्क भरपूर ॥
आदिअन्त मध कबहुं न उतरे ॥ अवर अखंडित नूर ॥ २ ॥
आठूं जाम रहे इक सारा ॥ सबमें हुकुम जरूर ॥
राव रंक ब्रह्मादिक मानें ॥ पल नहीं चूके करूर ॥ ३ ॥
अकल आप नहिं थाप उथापा॥ नहिं कोई निकट न दूर ॥
उमाराम सबीको दिया ॥ नित चेतन निज मूर॥४॥४५॥

राग सोरठ।

फकीरी सधर भरचा भरपूर॥अमिन्त आचिन्त अनुगत आतम॥
परतक जाण जरूर ॥ टेर ॥
पिंड ब्रह्मंडके परे ॥ फक्करका चस्मा खुल्या जहूर ॥
निरख्या निजानन्द निरआसे ॥ जां थित दृढ़ मंजूर ॥ १ ॥
निजानंदकी गम अगम है ॥ जां नहीं शशि अरु सूर ॥
जां अन्वय व्यतिरेक नहिं रंचक ॥ सदा स्वच्छंद नूर ॥ २ ॥

अज्ञ सर्वज्ञ उवां है कैसा ॥ उरे बीच कहां दूर ॥
जां स्पंद निस्पंद न पावे ॥ निरविशेप निज मूर ॥ ३ ॥
परमाणी परमाण न पूगे ॥ नहिं जां अनहद तूर ॥
नेती निगम पुकारे प्रगट ॥ अखिल स्वरूप हजूर ॥ ४ ॥
अपणा आप परम पुरुपोत्तम ॥ श्याम श्वेत नहिं भूर ॥
उमाराम अद्वेत आतमा ॥ ना कोई द्वैत आंकूर ॥५॥४६॥

राग सोरठ।

फकीरी भाख्या अखत बयान ॥ योंही है परम पराकी पारख ॥
परखे फक्कर सुजान ॥ टेर ॥
अती अलाग विचार फक्करका ॥ शब्दा अतीत पिछाण ॥
वां दूजा किंचित् नाहिं कोई ॥ सो कह दाखूं विधान ॥ १ ॥
अनुभव स्वरूप प्राप्त नितही ॥ मन बुद्ध सकत न जान ॥
ज्यां नहिं जीव ईश ब्रह्म कैना ॥ गावे वेद कुरान ॥ २ ॥
तीनूं कांड वेद विधि थापी ॥ भिन्न भिन्न परमान ॥
प्रथम करम उपासन द्वितीये॥ तृतीये वरन्या ज्ञान ॥ ३ ॥
तीनूं कांड परे कहि नेती ॥ ज्यां तिहुं विधकी हान ॥
केया न जाय वचन कह थाका॥ कहांसूं कह बखान ॥ ४ ॥
महा पदमाय निषेध न विधि ॥ बोल अबोल न आन ॥
उमाराम अवाच्य आतमा ॥ निरवानी निरवान ॥५॥४७॥

राग आसा।

साधो भाई नाम रूप सब कूरा॥कारण लिंग स्थूल भरम भागा॥
अनुभव जज्ञा आंकूरा ॥ टेर ॥

निज मनसूं मनका सब कामा॥ निज मन मनसे दूरा ॥
मन भोगी विषयारस भोगे ॥ निज अभोगता नूरा ॥ १ ॥
मन झलियारा बहुविध झलके ॥ ज्यूं मृग तृष्णा धूरा ॥
दीसे सो झलका है नाहीं ॥ निज प्रकाशज्यूं सूरा ॥ २ ॥
निज वे नामी सेवकैं नहिं स्वामी॥ आपोई आप हजूरा ॥
मन माया तृष्णा तन मेटे ॥ सो पद पावे पूरा ॥ ३ ॥
वनानाथ गुरू रमझ लखाई ॥ तसवर खुल्या जहूरा ॥
उमाराम समझ सतभाखी ॥ महरम मिल्या जू मूरा ॥४॥४८॥

रागा आसा ।

साधो भाई निज निरभेद हमारा ॥ विधिनिषेध दोऊंते न्यारा ॥
है सबमें सब पारा ॥ टेर ॥
निज मनसूं मनका रंग भ्यासे ॥ मन रंगसूं • निज न्यारा ॥
जैसे नभ व्यापक घट मठमे ॥ यूं अन्दर यूं बारा ॥ १ ॥
मनरंग जाग्रत् स्वप्न सुषुपत ॥ जाण भूल मन धारा ॥
नित्यानित्य समझ रंग मनका॥ मनरंग है जड सारा ॥ २ ॥
निज मन चेतन आदि अंत मध ॥ आप अखे निरधारा ॥
मनका लेश नहीं निज माहीं ॥ सदा रहे एकसारा ॥ ३ ॥
वनानाथ गुरू सत् चेतन निज ॥ सतगुरू अगम अपारा ॥
उमाराम सोई निज चेतन ॥ परतक जाणण हारा ॥४॥४९॥

राग आसा ।

साधो भाई आतम अचल अभंगा॥ है सब मांये सबी ते न्यारा ॥
ज्यू जलमें चंद असंगा ॥ टेर ॥

मन भूल्या मिथ्या सत् माने ॥ विषय व्यवहारत अंधा ॥
अपणा स्वरूप लखे नहिं भोदू ॥ मान रह्या दुख धंधा ॥ १ ॥
अनन्त उपाधि याद तज दूरी ॥ मैं तूं मेट सुगन्धा ॥
शुद्ध स्वरूप एक रस तेरा ॥ तूं नित चेतन निष्फंदा ॥ २ ॥
चेतन ख्याली ख्याल दिखाया ॥ तरह तरह बहु धुंधा ॥
जैसे रवि अनंत सवांमें ॥ यूं चेतन निरवंदा ॥ ३ ॥
वनानाथ गुरू सैन लखाई ॥ पाया भेद सवंदा ॥
उमाराम कारि निज निरणे ॥ संत सदा परखंदा ॥ ४ ॥५०॥

राग आसा ।

साधो भाई यह विवेकतत्सारा॥ जाण अरु भूल दिखाईहै ज्यूं ॥
चेतन जाणण हारा ॥ टेर ॥
आपा बांध आपकूं भूला ॥ क्रिया कर्म मन धारा ॥
अपणा स्वरूप विसार विछूटा ॥ मान लिया संसारा ॥ १ ॥
विषय व्यवहार निवार अभागी ॥ आपा छोड विकारा ॥
दुरमत मेट दोय मत देखे ॥ जोय तूं स्वरूप तुमारा ॥ २ ॥
तेरा स्वरूप मुकर ज्यूं थाया ॥ देख दिखाय रह न्यारा ॥
रूपारूप अलेख अखंडी ॥ सो तू चेतन प्यारा ॥ ३ ॥
तोयतें होय वाग बन वाडी ॥ बहुविध रंग पसारा ॥
नित चेतन जैसा का तैसा ॥ खट मीठा नहिं खारा ॥ ४ ॥
ज्ञान अज्ञान देखाया मनमें ॥ सो मन अस्त असारा ॥
उमाराम निज चेतन परतक ॥ शुद्ध अद्वैत अपारा ॥५॥५१॥

राग आसा ।

मनरे या विध तोय समझाऊं ॥ मान वचन परतक जग झूठा॥ थिर निर्गुण लखताऊं ॥ टेर ॥

सकल लोकका छोड विवेका ॥ राग द्वेप मत लाऊं ॥
करम क्लेश विपय तज सारा ॥ परमानंद परसाऊं ॥ १ ॥
पंच कोशके परे परमानंद ॥ विधिनिपेध न जाऊं ॥
ङण समरथ पलमेंकी रचना ॥ शोभा किसी सराऊं ॥ २ ॥
अले अछे अक्रिये अणघड़ ॥ दूर निकट नहिं काऊं ॥
सभर भऱ्या सारामें सामल ॥ नित साखी क्या गाऊं ॥ ३ ॥
वनानाथ गुरू सार पजोई ॥ मनका खोज मिटाऊं ॥
उमाराम विशेप विचाऱ्या ॥ समदरशी ब्रह्म सोऊं ॥ ४ ॥ ५२ ॥

राग आसा ।

साधो भाई परम सिद्धान्त ये ज्ञाना ॥ सत् मिथ्या दोनूंका दिष्टा ॥ चेतन जाणे म्याना ॥ टेर ॥

मन कलप्या आतममे ऐसे ॥ ज्यूं मृग तृष्णा पाणी ॥
भांतभांत मन कलपन हारा ॥ बहुत कलपना ठाणी ॥ १ ॥
ईश्वर जीव ब्रह्म मन माना ॥ न्यून विशेप समाना ॥
जाग्रत् स्वप्न सुपुपति तिहूंगुण ॥ उत्पति थिती लयजाना ॥२॥
अर्थ धर्मअरु काम मुक्त फल ॥ इनका मन अधिकारी ॥
प्रवृति निवृत्ती दोनूं ॥ यह मनमायं विचारी ॥ ३ ॥
रज्जूमे सर्प सीपमे रूपा ॥ गंध्रव शहर कहाई ॥

ज्ञान विना मिथ्या मन सॉचा ॥ ज्ञान भया मन नाई ॥ ४ ॥
आतम अखे अमान सदाई ॥ ज्यां मन नहीं लिगारा ॥
उमाराम सोई शुद्ध आतम ॥ अनिरवाच अपारा ॥ ५ ॥ ५३ ॥

राग आसा।

साधो भाई अविगत भेद अथाया ॥ समझेगा कोई संत सुजाना ॥
निर्भय रहत अचाया ॥ टेर ॥
व्यवहार वादी विगत न जाणे ॥ बहु प्रकार संभाया ॥
जप तप करम करे करतूतां ॥ भोले जन्म गमाया ॥ १ ॥
पखवादी प्रतीत न धारे ॥ नहीं तन मन परचाया ॥
अपणी थपे अवर नहिं माने ॥ वा कोई मुक्त न पाया ॥ २ ॥
पंथ वादी चाले पंथ झले ॥ अगम पंथ नहिं ध्याया ॥
अटल राय पोंचे कोई पागी ॥ बहुर जन्म नहिं आया ॥ ३ ॥
ब्रह्म वादी करता नहिं माने ॥ अगम अगोचर थाया ॥
सदा अखंड निकट नहिं दूरा ॥ नित निर्लेप अजाया ॥ ४ ॥
च्यारूं बाद चेतन कर चेते ॥ सो चतन निरदाया ॥
उमाराम आतमारामी ॥ च्यारूं वाद बताया ॥ ५ ॥ ५४ ॥

राग आसा।

साधोभाई आनंद तीनूं विचारा ॥ विपयानंद भजन आनन्दा ॥
ब्रह्मानंद उचारा ॥ टेर ॥
विपयानंद सकल संसारा ॥ विषरा करत व्यवहारा ॥
आशा नदी भऱ्या जल तृष्णा ॥ अहं ममता वह धारा ॥ १ ॥

भजनानंद भक्त सोई भेद्या ॥ निर आसे .निज सारा ॥
ज्ञान उजाला वेहद व्यापक ॥ ता नहिं तिमिर अँधारा ॥ २ ॥
ब्रह्मानंद अरूप अखंडी ॥ अखे अतोल अजारा ॥
स्वप्रकाश सदा सत् पूरण ॥ वेद कतेब पुकारा ॥ ३ ॥
था जैसा जैसा बतलाया ॥ ज्यूंका त्यूं. निरधारा ॥
गुणातीत निजानंद आतम ॥ सोई उमाराम अपारा॥४॥५९॥

राग आसा।

साधो भाई चेतन जाणण हारा ॥ चेत अचेत चेतावे चेतन ॥ आप दोईतें न्यारा ॥ टेर ॥
दार्ष्टान्त दृष्टान्त बताऊं ॥ है ज्यूं कर निरधारा ॥
दार्ष्टान्त निराकार निरंतर ॥ है दृष्टान्त आकारा ॥ १ ॥
रस अरु खांड खिलूणा तिर्गुण ॥ गुणातीत मिठियासा ॥
जाग्रत् स्वप्न सुषुपति ऐसे ॥ तीऊं तुरीये करभासा ॥ २ ॥
स्वपना खांड खिलूणा जाग्रत॥ सुषुपती रस धारा ॥
मिठास तुरीये सबमें साखी ॥ आर पार इक सारा ॥ ३ ॥
रस विना न हुवे खांड खिलूणा ॥ ख्याल खांड रस माहीं ॥
यूं सुषुपततें स्वप्न जाग्रत ॥ तुरीये में तिहुं नाहीं ॥ ४ ॥
चेतन तुरीये नित निरबंधण ॥ निरालेप निराकारा ॥
सुते प्रकाश आदि अविनासी ॥ नाहिं हलका नाहिं भारा ॥ ५ ॥
ख्याल खांड रस मीठास च्यारूं ॥ रसणा आ रसमें खूटा ॥
अवस्था अतीतआतमाचेतन ॥ भाव अभाव ज्यों झूठा ॥ ६ ॥

गुण अरु गुण अतीत न ज्यामें ॥ नाहि हेती नेती वाणी ॥
उमाराम सोई शुद्धचेतन ॥ कही परतकही निरवाणी ॥७॥५६॥

राग आसा ।

साधो भाई शुद्धस्वरूप हमारा ॥ जाग्रत् स्वप्न सुषुपत तुरीया ॥
सबकूं जाणणहारा ॥ टेर ॥
जाग्रत् पांच तत मिल जागे ॥ सकल सृष्टि वरतारा ॥
इन्द्रयां द्वार करत सब कामा ॥ वरतत विषे व्यवहारा ॥ १ ॥
स्वप्न मनोरथ भवें कलपना ॥ भूलगया घर बारा ॥
कबहूं राव कबहूं भया कंगला ॥ संकल्प सुख दुख धारा ॥ २ ॥
अति भूल नित रहत अचेतन ॥ सुषुपती सुखधारा ॥
जाग्रत् स्वप्न गल्या तां माहीं ॥ महाघोर अँधारा ॥ ३ ॥
जाग्रत् स्वप्न सुषुपत वरते ॥ साखी स्वरूप निराधारा ॥
महाप्रकाश सकल प्रकाशी ॥ तुरीये ब्रह्म अपारा ॥ ४ ॥
पृथ्वीबीज वृक्ष छायामें ॥ नभ सबमें फेर न्यारा ॥
यूं उमाराम अवस्था उलंगत ॥ नित चेतन एक सारा॥५॥५७॥

राग हेली ।

सतगुरू सत समजावीया ॥ हे नहीं के बीच ॥ टेर ॥
जगत जाण मिथ्या सबी ॥ उलजे रही विष कीच ॥
करम जालमे पच रही ॥ महा नीचनकी नीच ॥ १ ॥
साचा रस्ता सामका ॥ झूठ जगत्की पीत ॥
सब जग तज सतकूं गहो ॥ छोड जगत्की रीत ॥ २ ॥

पार ब्रह्म सत सामहै ॥ महा भींचनका भींच ॥
सत परस्या सो वां वसे ॥ ऊना लगे न शीत ॥ ३ ॥
सच्चिदानन्द सबमें भऱ्या ॥ केवल आप अजीत ॥
ता सत्कूं समझ्या बिना ॥ जुग जुग होत फजीत ॥ ४ ॥
अनन्त कोट संत ऊधऱ्या ॥ ले सत्की परतीत ॥
उमाराम सत् भेटिया ॥ सब तृष्णा गई बीत॥५॥५८॥

राग हेली ।

ये निश्चय निरलेप है ॥ सब संता कही विचार ॥ टेर ॥
बाजीगर रचना रची ॥ नाना रूप आकार ॥
बाजीगर बहु जाणहै ॥ रहे रचनासूं बार ॥ १ ॥
ख्यालीतें खिलका चले ॥ स्वर्ग नर्क संसार ॥
अक्रिये नित आपहै ॥ सच्चिदानन्द निराकार ॥ २ ॥
बाजीगर सबमें वसे ॥ पारब्रह्म निराधार ॥
है सबमें सबतें परे ॥ नित चेतन एकसार ॥ ३ ॥
वाकी महिमा को कहे ॥ शोभा लगे न गार ॥
संत लखे ता भेदकूं ॥ ताहीकूं इतबार ॥ ४ ॥
सत ख्याली खिलका मिथ्या ॥ प्रगट कही पुकार ॥
उमाराम खिलका तज्या ॥ ख्याली लिया विचार ॥५॥५९

राग हेली ।

अस्त अज्ञ जड पर हरो ॥ सत् चित् ब्रह्म विचार ॥ टेर ॥
सरग मृत्यु पाताल है ॥ तीन गुणां विस्तार ॥

चंवदे लोक तिर्गुण रच्या ॥ धरम करम व्यवहार ॥ १ ॥
ब्रह्मा सृष्टि उत्पन्न करे ॥ शिव सब करत संघार ॥
विष्णु पोषे विश्वकूं ॥ शक्ती तणे आधार ॥ २ ॥
सच्चिदानन्द शक्ती करी ॥ शक्ति ब्रह्मकी नार ॥
तीनलोक वह शक्तिसूं ॥ आप रहे निराधार ॥ ३ ॥
तिर्गुण इच्छा सब तजो ॥ सुख दुख भरचा विकार ॥
शक्ति मिटी तां ब्रह्ममें ॥ दुरमत नहीं लिगार ॥ ४ ॥
वेद संत शास्त्र कही ॥ आदि अंतका सार ॥
उमाराम सत् चित् लख्या ॥ सरवग आनन्द अपार ॥५॥६०॥

रागहेली ।

आत्मज्ञानी ओलखे ॥ ब्रह्म शक्तिका विचार ॥ टेर ॥
आदि पुरुष शक्ती करी ॥ मोजी मोज विचार ॥
सगत रचो सब सृष्टिकूं ॥ हुकुम दिया भरतार ॥ १ ॥
आदि शक्ति तिहुं गुण किया ॥ अंस पुरुषका धार ॥
एक पलकमें जगरच्या ॥ इछ्या अनन्त पसार ॥ २ ॥
हुकुम पुरुषका शक्ति पर ॥ शक्ति हुकमकी लार ॥
शक्ति हुकुम सब लोगपर ॥ सब जग शक्ति आधार ॥ ३ ॥
पारब्रह्म निरदोष है ॥ खेल खिलावण हार ॥
निरालेप निहचल थया ॥ सब घटमें एकसार ॥ ४ ॥
विष इछ्या मिथ्या सबी ॥ नाम रूप आकार ॥
ब्रह्म सदा सत् स्वरूप है ॥ सुरती करत पुकार ॥ ५ ॥

शक्ती कल्पत ब्रह्ममें ॥ नहिं घट मठ संसार ॥
उमाराम निश्चै लख्या ॥ तूटा विष हंकार ॥ ६ ॥ ६१ ॥

राग हेली ।

वेद संत प्रगट कह ॥ जग मिथ्या सत ब्रह्म ॥ टेर ॥
पारब्रह्म तें खेलहै ॥ कारण कारज सरब ॥
सब व्यापक निरलेप है ॥ सबका लखे गरब ॥ १ ॥
बुद्धि कारण विश्वको ॥ कारज नाना करम ॥
सरग नरक दुख सुख सबे ॥ है बुद्धीका धरम ॥ २ ॥
बुद्धि आदि कारज सबे ॥ मिथ्या कल्पत भरम ॥
निज आतम बुद्धी परे ॥ नित चेतन बिन भरम ॥ ३ ॥
कारण कारज तामें नहीं ॥ नहीं कोई सीला गरम ॥
उमाराम अज आतमा ॥ अपणा आप परम ॥४॥६२॥

रागहेली ।

योई जाण शुद्ध स्वरूपकी ॥ अगम निगम रही गाय ॥टेर॥
चेतन लिया अभाव है ॥ चेतन लियाँ सब भाव ॥
परब्रह्मके आसरे ॥ कल्पत भाव अभाव ॥ १ ॥
हूणेमें हूवा नहीं ॥ नहिं मिटणेमें नाश ॥
हूणे मिटणे बीचहै ॥ परमेश्वर निरवास ॥ २ ॥
हेता नेती भावना ॥ दोऊं क्षेतरकी होय ॥
परमातम एकसार है ॥ क्षेतर लेश न कोय ॥ ३ ॥
परमेश्वर सुख रूपहै ॥ सदा असंगी आप ॥

हाण लाभ तामें नहीं ॥ नहि कोई थाप उथाप ॥ ४ ॥
अपणी सोजी आपकूं ॥ आप अखे निरवाण ॥
निज निश्चै उमाराम है ॥ नहि कोई बाण अवाण ॥ ५ ॥ ६३ ॥

राग हेली ।

यो निश्चै सिद्धान्तका ॥ परतक कही परवाण ॥ टेर ॥
सरवांमें प्रतिबिम्ब है ॥ सूरज करके होय ॥
यूं चेतन प्रकाशते ॥ बुद्धि भ्यासत सोय ॥ १ ॥
घटके अन्दर बारही ॥ नभ निरलेप रहियात ॥
यूं चेतन बुद्धी परे ॥ त्यूं बुद्धीके सात ॥ २ ॥
बुद्धि चेतनके आसरे ॥ कलप्या बहुत विवाद ॥
वणणां मिटणां रहवणां ॥ आ बुद्धीकी याद ॥ ३ ॥
जाण भूल भूंडा भला ॥ आस्ती नास्ती ज्ञात ॥
सर्गुण निर्गुण भावही ॥ बुद्धिका धरम कहात ॥ ४ ॥
एक अरु दोय अनेकही ॥ बुद्धीका विस्तार ॥
मृगतृष्णाके नीर ज्यूं ॥ बुद्धी भरम असार ॥ ५ ॥
ज्यूंका त्यूं शुद्ध स्वरूपहै ॥ ज्यां बुद्धीकी हाण ॥
उमाराम चेतन सोई ॥ निरमाया निरवाण ॥ ६ ॥ ६४ ॥

राग हेली ।

योही ज्ञान सबतें परे ॥ परतक वचन सिधान्त ॥ टेर ॥
सकल मध्यको मध्य है ॥ सकल भेदको भेद ॥
सकल रूपको रूप है ॥ चेतन रूप अभेद ॥ १ ॥

है कही वो ना बणे ॥ नहिं नहिं कह्या न जाय ॥
है नाहींके वीचमें ॥ चेतन रह्यो अचाय ॥ २ ॥
चेतनकी चेतन लखे ॥ चेतनकूं है ठाय ॥
मन बुद्धीकूं गम नहीं ॥ चेतन जाण अथाय ॥ ३ ॥
उमाराम निरवाण है ॥ सच्चिदानंद निराधार ॥
निरधुन्धि अक्रिय सदा ॥ नहिं कोई आर न पार॥४॥६५॥

राग चौपाइ ।

चेत मुसाफिर वेगोई चाले ॥ जगत प्रपंच झूठ मत झाले॥ टेर॥
तू नहि किसका कोइ नहिं तेरा॥ पावपलकका लियाहै बसेरा॥१॥
तेरेही देखतां सबी जग जावे ॥ रहता न दीसे संसार विलावे॥२॥
ओ ससार अती दुख मोटा ॥ जन्म जन्म भागे नहिं टोटा॥३॥
जिन या जगका आपा माना ॥ भुगतेगा चौरासीकी खाना॥४॥
जिन जिन तजी खलककीआसा॥वे निशिदिनसुखीहरिमाहिंवासा
उमाराम झूठ जग त्याग्या ॥ सत्शव्द मांय सेंठा लाग्या ६॥६६

राग चौपाई ।

सद्गुरूमेहरमनिगेकरसारा ॥ निरख परखकर वचनउचारा ॥टेर॥
सतगुरू पूरण ब्रह्म अनामी ॥ सच्चिदानंद निरबंधण स्वामी॥१॥
सबी मांडका सतगुरू सांई ॥ एकरस ठाढा बाहर मांई ॥ २ ॥
गुरू समर्थका ज्ञान अपारा ॥ गुणा अतीत आर नहिंपारा॥३॥
रोम रोमकी जाणणहारा ॥ गुरू चेतन अदली दातारा॥४॥
सकल जगतसूं सुरती तोडे ॥सतगुरूके चरणाचित जोडे॥५॥

वाकूं सतगुरू तत्व तारे ॥ जन्म मरण भव फंदा टारे ॥६॥
जो जन रक्खे जगतकी आसा॥सोजन्म जन्म भुगतेगा त्रासा॥७॥
वाकूं गुरू तारे नाहि काई ॥ सतगुरू जाण सईहै आई ॥ ८॥
बारे पंथ पट मत अवतारा ॥ गुरूका ध्यान धरतहै सारा॥९॥
अनंत कोटि सीधा गुरू सेवा ॥ गुरू है गति मुक्तिका देवा॥१०॥
वेद संत सतगुरूकूं गावे ॥ महिमा अतिअतोल बतावे ॥११॥
वनानाथ गुरू निर्गुण देवा ॥ उमाराम गुरूमैंइरेवा ॥१२॥६७॥

राग चौपाई।

ब्रह्म विचार यहीहै भाया ॥ लख्या सोई संतनिरभै थाया॥टेर॥
निरख्या निर्गुणही निरधारा ॥ निरणै कर यह वचनपुकारा॥१॥
कूटस्थ अक्रिय अमल अपारा॥ आपोई आप थयाएकसारा॥२॥
सो दीसे सो वोही दिखावे ॥ रहे सबमाय निजर नहिं आवे॥३॥
जमी असमान रवी नहिं चंदा॥ ज्यांनाहिं पांचतीनकाफंदा ॥४॥
कारण कारज वामें नाहि पावे ॥ हेती नेती कह्या न जावे ॥५॥
द्रष्टा दर्शन दृश्य न वाई ॥ ज्ञाता ज्ञात अज्ञात तहँ नांई॥६॥
नित चेतन निज स्वरूप अचाई ॥ उमाराम सोई सुखदाई७॥६८

राग चौपाई ।

वेद हमारी शाखा भाखे ॥ प्रगट यूं निश्चै कह दाखे ॥ टेर ॥
मेहरम हमारा झीणेते झीणा ॥ मैंही चेतन महापरवीणा ॥ १ ॥
निरणा हमारा हमहीं सोजी॥ हमही बोध स्वरूप निरभोजी॥२॥
अंस हमारे उपाई माया ॥ तामे भेद अनंतां थाया ॥ ३ ॥

सारा चरित अंस दिखलावे ॥ सबीदिखाय रहत निरदावे ॥४॥
अंस हमारे विरा नाहिं कोई ॥ एकोई एक कबूं नाहिं दोई ॥ ५॥
माया उपजी मायाई विनासी ॥ हमहीं अमर थया अविनासी६॥
उमारांमचेतन निरवाणी ॥ अपणी लक्ष आपही छाणी॥७॥६९॥

रागशुभ ।

साधो भाई सत् निश्चै उरधारा ॥ खुल्या भंडार गैबका वायक॥
अनुभव भया उचारा ॥ टेर ॥
तजी जगत जगकी मरजादा ॥ अवर तज्या व्यवहारा ॥
धरम करम याहीकूं त्याग्या ॥ त्याग्या विषै विकारा ॥ १ ॥
मैं मेरेका खोज मिटाया ॥ हूं नाहि रह्या लिगारा ॥
अब मेरे हरि अंतर नाही ॥ ओत प्रोत एक सारा ॥ २ ॥
रोम रोम चेतन प्रकाश्या ॥ असंख्य भानु उजियारा ॥
यही ज्ञान ब्रह्मका कहिये ॥ अपणा आप विचारा ॥ ३ ॥
यही लक्ष दोनूं कहे शाखा ॥ यही जाण तत् सारा ॥
उमाराम खबर कर भाखी ॥ लख्या सन्त इतबारा ॥४॥७० ॥

राग शुभ ।

साधो भाई योही बात परवांणा॥ सोजी कर सत् किया निवेडा॥
छूटी खेचाताणा ॥ टेर ॥
दोई बात सारे कोई सत जन ॥ जिनही चेतन जाना ॥
सत् सो सत् मिथ्या सो मिथ्या ॥ यही निकालस ज्ञाना ॥ १ ॥
मिथ्या जगत सत आतम तत् ॥ दोनूं बात बताई ॥

सत्का भाव अभाव जगत्का ॥ हमारे तो निश्चै आई ॥ २ ॥
झूठी माने साच न ठाने ॥ उलटी ताणे वादी ॥
बातां करे विवेक न जाणे ॥ है इन्द्रयांका स्वादी ॥ ३ ॥
वे नहिं इतका वे नहिं उतका ॥ लटक रह्या अध बीचा ॥
मैं बडपणमें जन्म गमाया ॥ वे डूबा विश्वा वीसा ॥ ४ ॥
संत शास्त्र आई पुकारे ॥ रती झूठ नहिं कोई ॥
यह समझ्या सो पाया परमपद॥ सबी मिटाया भोई ॥ ५ ॥
सत्गुरू कृपा साध संगतसूं ॥ निरख लिया तत्सारा ॥
उमाराम साच कही बातां ॥ वेदा नहीं लिगारा ॥६॥७१ ॥

राग शुभ ।

साधो भाई आतमज्ञान बताया ॥ भजण तजण दोनूंते न्यारा ॥
वचन परे कह गाया ॥ टेर ॥
उगड्या नैन विचार चानणा ॥ तम अज्ञान विलाया ॥
सत्चित आनंद अनूप आतमा ॥ यह निश्चै ठहराया ॥ १ ॥
आतम अमर मरे नहि जनमे ॥ नित निर्गुण निरदाया ॥
पाप पुण्य सुख दुख नहि ज्यामें ॥ अलख अकरता थाया ॥ २ ॥
चेतन आप बडा महा जाणी ॥ सबही चेत दिखाया ॥
चेत चेताय चेतसूं न्यारा ॥ रहता अलाग अजाया ॥ ३ ॥
अगम निगम शोभा कह थाकी ॥ कहणींमें नहि आया ॥
अविगत अकथ कथ्या नहिंजावे ॥ सेनीमे समझाया ॥ ४ ॥
साच झूठका किया निवेड़ा ॥ आतम परचा पाया ॥
उमाराम मिथ्या अलुजाड़ा ॥ चेत लेश नहिं माया ॥ ५ ॥ ७२ ॥

राग शुभ।

साधो भाई रमझ समझ लखगाया ॥ यही रमझकूं सत लखाण॥
जिनी परमपद पाया ॥ टेर ॥
निर्गुण अकथ कथ्या नहिं जावे ॥ सोई सूझ पठाया ॥
गुंझसूं गुंझ मिलाय गुंझ किया ॥ ज्यूंका त्यूं दरसाया ॥ १ ॥
चेतन ख्याली दिरस खड़ी करी ॥ अखंड अनंत थपाया ॥
ऊंच नीच वैकुंठ चौरासी ॥ दृश्यही मांय रचाया ॥ २ ॥
अन्दर बाहर चेतन ठाडा ॥ जाण स्वरूपी थाया ॥
सबकी सार चले वाहूते ॥ आप रहे निरदाया ॥ ३ ॥
नाहिं कोई उपज्या नहीं मिटाणा ॥ नहिं भूला नहिं पाया ॥
आपोऽङ् आप अवर नाहि दूजा ॥ चेतन सदा रहवाया ॥ ४ ॥
दृश्य भावना अलप बताई ॥ निर्गुण साच ठहराया ॥
उमाराम उदै भया ज्ञाना ॥ परपंच सबी विलाया ॥५॥ ७३ ॥

राग आसा।

साधो भाई सो जोगी निरभोई ॥ बिगड़ी विषे राखे नहिं सूरा ॥
निज निश्चै पत पोई ॥ टेर ॥
बिगड्या लोक सबी कोई केता ॥ बिगड न जाणे कोई ॥
बिगड्या नाम उनीका कहिये ॥ सकल वासना खोई ॥ १ ॥
विषय इच्छा गृह सब जग बिगड्या ॥ गाढी करकर गोई ॥
बिन इच्छा देखे नहि सामा ॥ बहुविध बात पजोई ॥ २ ॥
विषय इच्छा पकडी सो डूबा ॥ लख चौरासी ढोई ॥

आ बिगडी सुधरी कोउ माने ॥ जन्म जन्म लग रोई ॥ ३ ॥
सकल लोकका भाव मिटावे ॥ दूर करे मन दोई ॥
जोजन आदि ठिकाणा परस्या ॥ सुधरया कहिये सोई ॥ ४ ॥
सतसंगत सतगुरूकी कृपा ॥ लिया रहत घर जोई ॥
उमाराम सार सत्भाखी ॥ लख्या सो निरभै होई ५॥७४॥

राग आसा ।

साधो भाई खोजी खोज विचारे॥खोज्या सोई पूरण पद परस्या॥
सुरती संत पुकारे ॥ टेर ॥
कहा कारण यह स्याल कहाया ॥ काकूं हेला मारे ॥
कहा कारण यह फिरे भटकता ॥ किसविध रेवे वारे ॥ १ ॥
आपा करके स्याल कहाया ॥ मन हूं हेला धारे ॥
विषय वास कर फिरे भटकता ॥ या विध करके बारे ॥ २ ॥
विषय वास मन आपा छोडे ॥ शुद्ध स्वरूप विचारे ॥
जब दरसे पूरण ब्रह्म पोते ॥ गुणा अतीत अपारे ॥ ३ ॥
दरपणके मुख अंदर बाहर ॥ अन्दर बार देखारे ॥
अंदर बार नही दरपणमें ॥ यूं चेतन एक सारे ॥ ४ ॥
चित्त जड सूक्षम थूल कल्पना ॥ ज्यां नहिं लेस लिगारे ॥
उमाराम सदा सत सोई ॥ पारब्रह्म निराधारे ॥५॥ ७५ ॥

रागआसा ।

साधो भाई चेतन ब्रह्म लखाना॥ सत्की सैन समझ कर भाखी॥
वा घरका यह म्याना ॥ टेर ॥

हरहर करता भया दिवाना ॥ हेरत रह्या हेराना ॥
रोम रोममें वास तुमारा ॥ यह मन लिया इमाना ॥१॥
इचरज रूप अपंबर तेरा ॥ निराकार निज ज्ञाना ॥
निशिदिन इडग डिग्या नहिं कबहूं॥सत् चिद् आनन्द रहाना२
त्याग न राग जगत नहिं जोगी ॥ बन्ध मुक्त नाहिं ध्याना ॥
सब साधू कहता यूं आया ॥ सुरती करत बयाना ॥ ३ ॥
सतगुरूकी कृपा भई हम ऊपर ॥ टूटा सकल अज्ञाना ॥
उमाराम जुगत कर जोया ॥ पूरण ब्रह्म विज्ञाना ॥ ४ ॥ ७६ ॥

राग आसा।

साधो भाई तज दुरमत गम गोई ॥ है वो सदा सरोवर समरथ॥
अगम निगम कह दोई ॥ टेर ॥

संस्कृत गीता पट पढीया ॥ करम उपासन सोई ॥
नेती नेती वेद पुकारे ॥ सो क्या विध कर जोई ॥ १ ॥
वो निर्गुण अकथ गुणासूं न्यारा ॥ ज्यां आश्रम वरनन कोई ॥
भाव अभाव परे परमेश्वर ॥ सतगुरू सैन पजोई ॥ २ ॥
वो अखे अगोचर अकल अजूणी ॥ सकल कला संजोई ॥
आप असल सब नकल बणाई ॥ ऐसा समर्थ वोई ॥ ३ ॥
निरमल नूर हजूर विराजे ॥ सब व्यापक निरभोई ॥
क्या जस करूं कह्या नाहिं जावे ॥ मूंवांसूं मालुम होई ॥ ४ ॥
गूंगे का सा स्वपना कहिये ॥ यूं निश्चै है वोई ॥
उमाराम सदर लख दाखी ॥ नाहिं कोई गम्या न ढोई॥५॥७७॥

राग आसा ।

साधोभाई बेरंग कह्या न जाई॥ नित निर्वाण अगोचर आतम ॥
कहणी लगे न काई ॥ टेर ॥

ज्यूं पावक पाहणमे व्यापक ॥ जले बूझे वी नाई ॥
शीतल ताव लगे नहिं उनके ॥ यूं सच्चिदानन्द सांई ॥ १ ॥
घन बादल नभ करके भ्यासे ॥ रंग रूप ता मांई ॥
सवते व्योम निरंतर थाया ॥ यूं निरलेप गुसांई ॥ २ ॥
गुणा अतीत रूप नहि रेखा ॥ अगम अज्ञाद रेवाई ॥
निष्किंचन नित अमल अकरता ॥ सत शास्त्र गाई ॥ ३ ॥
सेवा ध्यान लगे नहिं सिमरण ॥ सवी उपाव थक जाई ॥
उमाराम अञ्चे निजआतम ॥ को कुण लखे लखाई ॥४॥७८ ॥

राग आसा ।

साधो भाई निर्गुण ब्रह्म अथागा॥आपे परे आप अविनासी ॥
अगम निगम कहे साखा ॥ टेर ॥

निर्गुण सवी गुणासूं न्यारा ॥ ज्यां धरम अधरम न लागा ॥
स्वर्ग नर्क ऊंचा नहि नीचा ॥ नहिं सूता नहिं जागा ॥ १ ॥
हर्ष न शोक वियोग न जोगी ॥ नहिं पीछा नहिं आगा ॥
वेद कतेब वचन नहिं पहुंचे ॥ रहता अखे अलागा ॥ २ ॥
सूक्षम रूप अनामी अविगत ॥ नहिं बंधण नहि त्यागा ॥
सदा सुचेत परम प्रकाशी ॥ नहिं विछड्या नहि सागा ॥३॥
नहि कोइ ज्ञान नहीं अज्ञाना ॥ नहिं जूंझे नहि भागा ॥

उमाराम है ज्यूंका त्यूंही ॥ नित चेतन अनुरागा ॥४॥७९॥

राग आसा ।

साधो भाई नीर बूंद सम जोई ॥ जीव शीवका किया विचारा ॥
ओत प्रोत नहिं दोई ॥ टेर ॥
पाणी कर जीवांकी उतपुत ॥ जात वरण कुल होई ॥
नैकुल आप रहत पाणी ज्यूं ॥ तां कुल कारण नहिं कोई ॥१॥
जलमें नाम अनन्त आकारा ॥ चलता जीव कहाई ॥
पाणीं ज्यूं चेतन सारामें ॥ लिपे नही थिर मांई ॥ २ ॥
ऊंच नीच मोटा अरु छोटा ॥ नामरूपमें होई ॥
पाणी ज्यूं आतम एक सारा ॥ है ज्यूंका त्यूं सोई ॥ ३ ॥
वनानाथ गुरू अभै अकरता ॥ नहीं प्रीय नहि द्रोही ॥
उमाराम गुरू शिष्य एकही ॥ शिव स्वरूप निरभोई ॥४॥८०॥

राग आसा ।

साधो भाई ज्यूं मुख मुकर दिखारा॥ देख दिखाय दिष्टनहिआवै॥
चिदानंद निरधारा ॥ टेर ॥
चेतन पुरुष आदि अविनाशी ॥ उनतें सकल पसारा ॥
एक रोमतें सब जग भ्यासे ॥ रेता आपई न्यारा ॥ १ ॥
चवदे लोक उतपती इच्छा ॥ ऊंच नीच विस्तारा ॥
दीसे सो मायाका खिलका ॥ है मृग नीर विकारा ॥ २ ॥
अखे अनूप अभोग न भोगी ॥ नाहिं कोई भोग भोगारा ॥
नित निरमल पूरण प्रकाशी ॥ नहिं कोई देव पुजारा ॥ ३ ॥

वनानाथ गुरू निकलंक निरबंधण॥नहिं इच्छा आदि संसारा ॥
उमाराम सोई निर आवरण॥नहि कोई मिल्या न न्यारा॥४॥८१॥

राग आसा ।

साधो भाई आतम अखंड अनासी॥एक अरु दोय अनेक न वामें॥
निज खोज्या सोई पासी ॥ टेर ॥
बारे पंथ पट दरसण सुणज्यो ॥ सैन कहुंआ साची ॥
महरम अकथ दूरसे दूरा ॥ ओलख लिया अविनाशी ॥ १ ॥
वाके अंस खडी कीवी माया ॥ सबी देखावे साखी ॥
नित निज ज्ञान लिपे नहिं किसमें ॥ जाण आपकी भाखी॥२॥
बहु उलझाड मायाके भीतर ॥ दुख सुख वैकुंठ चौरासी ॥
माया मूल झूँठहै वाना ॥ आदि अंत मध नासी ॥ ३ ॥
परमातम आतम दुई नाही ॥ ओत प्रोत इकरासी ॥
आपोई आप लेश नहि माया ॥ निराधार प्रकाशी ॥ ४ ॥
तुरीये अतीत दृश्य नहि दिष्टा ॥ विधिनिपेधऊं निरवासी ॥
उमाराम सोई निरवाणी ॥ नित चेतन सुखवासी ॥५॥ ८२ ॥

राग गुजराती ।

ऐसीविध समझ्यारे साधो भाई ॥ निरख लिया तत्सार ॥टेर॥
खेल खिलाडी नकल बणाई ॥ चवदे तबक चहुं खाण ॥
भांत भांतका रंग रचाया ॥ जुदी जुदी करीबाण ॥ १ ॥
आप खिलाडी सबमें पूरण ॥ नेकल सदा निरवाण ॥
सबी नकलमें लिपे न कबहूं ॥ रहता अलख अवाण ॥ २ ॥

रंग नक्ल दृश्य झूठ तमासा ॥ ख्यालीकूं सत् चिद जाण ॥
अधर अलोकी लोक न कोई ॥ आपोई आप पिछाण ॥ ३ ॥
झीणेते झीणा दिष्ट न आवे ॥ चेतन सोई सुजाण ॥
वावन अक्षरमें नहिं आवे ॥ सत लख्या वो छाण ॥ ४ ॥
वनानाथ गुरू दुरस दिखाया ॥ परब्रह्म परमाण ॥
उमाराम गम गैब पिछाणी ॥ उदै भया ज्ञान भाण ॥५॥ ८३॥

राग गुजराती ।

अनभै सोजीरे साधो भाई ॥ प्रगट भाखीरे विचार ॥ टेर ॥
अखे पुरुपतें धरता भ्यासे ॥ धरतामें बहुधार ॥
स्वर्ग नर्क दोई भाव इनीमे ॥ धरम करम विस्तार ॥ १ ॥
आप अलख धरतासूं न्यारा ॥ है दिष्टा निरविकार ॥
सव माये पूरण आप अलागी ॥ अखे पुरुप निराकार ॥ २ ॥
अखे सारकूं संत पिछाणी ॥ धरता तज्या रे विकार ॥
आपमे सूते रहाणा ॥ धरता नहीं रे लिगार ॥ ३ ॥
वो तो लय विक्षेप कोउ नाहीं ॥ नाहि कोइ धार अधार ॥
उमाराम सोई है निरवंध ॥ नित चेतन एक सार ॥ ४॥८४ ॥

रागगुजराती ।

आतमज्ञान योई रे साधो भाई ॥ परख कही सत् सार ॥ टेर॥
सत रज तम तिहु भाव मांई ॥ चेतन भरचा भरपूर ॥
तिहूँ भावतें चेतन न्यारा ॥ अलख अनामी नूर ॥ १ ॥

चेतन माय तिर्गुण भाव कलपित ॥ आप भाव सहि मूल ॥
उत्पत्ति स्थिति लेय ॥ ज्यामें नही कोई ॥
चेतन अन असथूल ॥ २ ॥ ज्ञाता ज्ञात अज्ञात न ज्यामें ॥
नाहिं भेला नाहिं दूर ॥ ऊंचा नाहिं नीचा ॥
आगा नाहिं पीछा ॥ सत् चिद् आनंद-सबूर ॥ ३ ॥
गुणा अतीत सदा शुद्ध केवल ॥ आपोई आप हजूर ॥
उमाराम सोई है चेतन ॥ जाणे सन्त कोई सूर ॥ ४ ॥ ८५ ॥

पद राग।

खोजी खोज खबर कर खोज्या ॥ है ज्यूं वचन निहारा ॥
समझेगा सतगुरूका चेरा ॥ जाण किया निरधारा ॥ टेर ॥
शब्द गुरूका निकलंक तेगा ॥ जिन लागा सो पारा ॥
दया करे देवे जव सूझे ॥ शब्द गुरूका इसारा ॥ १ ॥
वोई शब्दहै अलख अजाती ॥ नित निर्गुण निराधारा ॥
अति अपरबल अनंद स्वरूपी ॥ छिनमें रच्या पसारा ॥ २ ॥
बाहर भीतर आप विराजे ॥ चेतन ब्रह्म अपारा ॥
हिले चले उपजे नाहिं विणसे ॥ ऐसा सिमरथ प्यारा ॥ ३ ॥
गृहा शब्द सोई संत सीधा ॥ मिटगया सबी विकारा ॥
संत शब्दके दूज न कोई ॥ जाण हुवा एक सारा ॥ ४ ॥
वनानाथ गुरू शब्द सुणाया ॥ दिया शब्द तत् सारा ॥
उमाराम लिया सरधा कर ॥ काट्या भेद विकारा ॥५॥ ८६ ॥

पदराग ।

दृश्यादृश्य अदृश्य न ज्यांमें ॥ पूरण ब्रह्म अथाया ॥
जाण भूल दोऊंका दिष्टा ॥ है ज्यूं निश्चै थाया ॥ टेर॥
ब्रह्म अलागी सदा निरमला ॥ निरहंकार थाया ॥
छिपत अनेक रूप वहु भांती ॥ उन्हीं पुरुष दिखाया ॥ १ ॥
गुणा अतीत विदेह न देहा ॥ अथंग थाग नहिं भाया ॥
शुद्ध स्वरूप सबीके सामल ॥ रहे सबसूं निरदाया ॥ २ ॥
वेद कतेब संत कह थाका ॥ अक्षरमे नहिं आया ॥
अन अक्षर चेतन ब्रह्म कहिये ॥ आपोई आप रेवाया ॥ ३ ॥
राग द्वेषकी धुंध मिटाणी ॥ मैं तूं मूल गमाया ॥
उमाराम खुल्या निज नेत्र ॥ ज्यूंका त्यूं दरसाया ॥ ४ ॥ ८७ ॥

पदराग ।

ऐसी रमझ समझ कह दाखी ॥ ब्रह्म वारता योई ॥
काना मात लगे नहिं टेवा ॥ आतम ज्ञानी जोई ॥ टेर ॥
अज्ञ तज्ञ कारण नहि कारज ॥ सूक्षम स्थूल नहि कोई ॥
लय विक्षेप आस्त नहिं नास्त ॥ चेतन ब्रह्म अलोई ॥ १ ॥
विधि निषेध उथाप थापना ॥ नाम रूपमें होई ॥
तीन शरीर अवस्था तिर्गुण ॥ झूठ झबाका दोई ॥ २ ॥
ज्यूं वन एक वृक्ष वहु जाती ॥ सबी दिखावे तोई ॥
यूं शुद्ध स्वरूप अवर नहि तामे ॥ जाणी जाण पजोई ॥ ३ ॥
निरधोख आतम निरबंधण ॥ अज अविनासी सोई ॥

उमाराम नितोनित चेतन ॥ निराधार निरभोई ॥ ४॥ ८८॥

पद राग ।

मेरी सूझ परख कहि पूरण ॥ निश्चै वचन पुकारा ॥
अगम निगम शाखा कह ऊमी ॥ यह मेरा इतबारा ॥ टेर ॥
मेरापेच बांधीया मैंहीं ॥ विधी · विधी विस्तारा ॥
मेरा पेच पेचसूं न्यारा ॥ मैं अपेची हूं प्यारा ॥ १ ॥
हूं सब माय सबी मो माई ॥ यही पेच हमारा ॥
हूं सारांको चेतन द्रष्टा ॥ निरबंधण एक सारा ॥ २ ॥
जगत भक्त भजनी नहिं मोंमें ॥ नहिं ब्रह्मंड पसारा ॥
आदि अलेख लेख नहिं मोंमे ॥ लेखा सबी असारा ॥ ३ ॥
महरम हमारा हमहीं जाणे ॥ हमहैं अगम अपारा ॥
हूं तूं नाहि सोई हूं ऊमा ॥ मेरा किया विचारा ॥ ४ ॥८९॥

पद राग ।

सत् गुरू महर करी मेरे पर ॥ ज्ञान विज्ञान लखाया ॥
निश्चै कही अगमकी शाखा ॥ वेद इसी विध गाया ॥ टेर ॥
असंख्य जुगांके कहूं आगली ॥ ज्यां सुंन असुंन न माया ॥
शुद्ध स्वरूपी चेतन सांई ॥ आपोई आप रेवाया ॥ १ ॥
नहि कोई आदि अंत मध वाको ॥ पांच तत्त्व नहि काया ॥
नहिं कोइ स्वर्ग मृत्यु पाताला ॥ पारब्रह्म अथाया ॥ २ ॥
परमपुरुषका पार न कोई ॥ जिन एक मता उपाया ॥
आप मांये करी इच्छा अपरबल ॥ शक्ती नाम दिराया ॥ ३ ॥

आदि पुरुषकी अर्धशरीरी ॥ रिलमिल बात बणाया ॥
सगत सवागण रचो सृष्टिकूं ॥ हुकुम पुरुष दरसाया ॥ ४ ॥
होतांई हुकुम शक्ति करी जलदी ॥ वेगाई हुकुम सभाया ॥
पुरुष पराक्रम लिया शक्तिने ॥ तत्वे तीनूं जाया ॥ ५ ॥
चवदे लोक इकीसूं ब्रह्मंड ॥ तिर्गुण मांय रचाया ॥
ब्रह्मा उत्पत पालणा विष्णू ॥ शिव संघार भोलाया ॥ ६ ॥
तिर्गुण भेद चले सगतीसूं ॥ जुदा जुदा दिखलाया ॥
तीनूं देव शक्तिके सारे ॥ आदि पुरुष निरदाया ॥ ७ ॥
पारब्रह्म सूते प्रकाशी ॥ सबमें रहत अचाया ॥
घटत बधत गुण माया भीतर ॥ सदाई वो केवल थाया ॥ ८ ॥
सबी विकार गुणांके भीतर ॥ कल्पत भाव कहाया ॥
ब्रह्म मांये छाया जूं माया ॥ परमपुरुष एक राया ॥ ९ ॥
वनानाथ भेटचा गुरू पूरा ॥ सतचिद् अनन्द बताया ॥
उमाराम सोई पद परस्या ॥ भेदाभाव मिटाया ॥ १० ॥ ९० ॥

पद राग ।

पूरण सैन योई तत् सारा ॥ जाण वचन दरसाया ॥
समझेगा सतगुरूका चेरा ॥ परमपद जिन पाया ॥ टेर॥
परलां अरु परलांसूं न्यारा ॥ ज्यांका अगम विचारा ॥
ताका अबे भिन्न भिन्न करके ॥ सतभाखू निरधारा ॥ १ ॥
नित परलाकी कहूं वारता ॥ सांझ पड्या सब सोवो ॥
विसवे सकल नींदमे मिटेगी ॥ नित परला यह जोवो ॥ २ ॥
परला निमत कहीजे योही ॥ देही भावना भाकूं ॥

केई समे मह देही विणासे ॥ परला निमत कहु ताकूं ॥ ३ ॥
च्यार खाण चौरासी जाती ॥ जीवा जूण विलाया ॥
तम ईश्वर माये लय होसी ॥ मह पिरथी परला वताया ॥ ४ ॥
महा मलयकी श्गिल बताउं ॥ यामें झूठ न कोई ॥
माया सूख सुंन मिटज्यासी ॥ महा परला है सोई ॥ ५ ॥
परला च्यार शास्त्र गावे ॥ अगम साख कहयोई ॥
आगे भेद आप नहिं परला ॥ कहु दाखी निरभोई ॥ ६ ॥
माया कलपत उपजे विणासी ॥ परला याके मांई ॥
पारब्रह्म माया बिन थाया ॥ है ज्यूं का त्यूं सांई ॥ ७ ॥
पारब्रह्मकी सत सत्तातें ॥ माया सबी दिखाया ॥
सत आतम परमातम एको ॥ निकलंक सदा रेवाया ॥ ८ ॥
ज्ञान भान प्रकाश्या भीतर ॥ माया सबी मिटाणी ॥
उमाराम आपकी सोजी ॥ चेतन आप पिछाणी ॥ ९ ॥ ९१ ॥

पद राग ।

खोजी खोज खोजीया पूरा ॥ नहीं वृद्ध नहि ज्ञाना ॥
निरमल ज्ञान कथा कर निरणे ॥ श्रीगुरु म्याना ॥
निर्गुण अरु सर्गुणका निश्चा ॥ परम
धार पार पाको नाहिं आवे । मात ल
ब्रह्मकी अंश पुरुषका प
भीम माला निर्गुण स
अति सक्षमतें सक्षम क
यथा जथा जगतीसे श

निर्गुण जहां जहां सर्गुणहे ॥ उभै अंग परखाना ॥
जूं वृक्ष वृक्षकी छाया ॥ यूं वे भाव थपाना ॥ ४ ॥
सर्गुण रेत आसरे आदू ॥ निर्गुण तणे लखाना ॥
निर्गुण पुरुष कहीजे प्रेरक ॥ सर्गुण श्री बखाना ॥ ५ ॥
निर्गुणकी सर्गुण अर्धंगिया ॥ साची सूझ पटाना ॥
जिनकी आदि कछू नहिं आवे ॥ दोऊं अनाद रेवाना ॥ ६ ॥
जबही पुरुष चेतावे माया ॥ श्री धरे बहु वाना ॥
विना चेतायां कबहूं नहिं चेते ॥ ऐसा पुरुष सुजाना ॥ ७ ॥
सब सरवांके अन्दर बाहर ॥ ज्यूं प्रकाशत भाना ॥
ऐसे पुरुष रवी ज्यूं दिष्टा ॥ बोध स्वरूप निधाना ॥ ८ ॥
पांच पचीस समष्टी व्यष्टी ॥ रज तम सत् गुण ठाना ॥
ये सब श्री फरक नहिं तामें ॥ ठौड़ ठौड़ परवाना ॥ ९ ॥
निर्गुण पिता मात पुनि सर्गुण ॥ यामे भेद न माना ॥
अचल पुरुषतें अचल श्रीहै ॥ ज्यूं है त्यूं दरसाना ॥ १० ॥
मा है सुंन पिताहै चेतन ॥ येही रमझ निरवाना ॥
पिता हमारेकी मा है शोभा ॥ अवर नहिं कोई आना ॥ ११ ॥
माताकूं माता ज्यूं समझ्या ॥ पिताकूं पिता समाना ॥
अदल विचार विचारचाअदली ॥ कर निरधार भकाना ॥ १२ ॥
समझ्या संत भाके आसोजी ॥ गावे वेद पुराना ॥
उमाराम सार निज सारी ॥ परम यथारथ जाना ॥ १३ ॥ ९२ ॥

पद राग ।

एसी विगत समझ कह राखी ॥ सुणियो संत सुजाणा ॥

केई समै यह देही विणासे ॥ परला निमत कह ताकूं ॥ ३ ॥
च्यार खाण चौरासी जाती ॥ जीवा जूण विलाया ॥
तम हंकार माये लय होसी ॥ यह पिरथी परला बताया ॥ ४ ॥
महा प्रलयकी विगत बताऊं ॥ यामें झूठ न कोई ॥
माया मूल सुंन मिटज्यासी ॥ महा परला है सोई ॥ ५ ॥
परला चार शास्त्र गावे ॥ अगम साख कहयोई ॥
यामें भेद भाव नहि पलका ॥ कह दाखी निरभोई ॥ ६ ॥
माया कलपत उपजे विणासी ॥ परला याके मांई ॥
पारब्रह्म माया बिन थाया ॥ है ज्यूं का त्यूं सांई ॥ ७ ॥
पारब्रह्मकी सत् सत्ताते ॥ माया सबी दिखाया ॥
सत् आतम परमातम एको ॥ निकलंक सदा रेवाया ॥ ८ ॥
ज्ञान भान प्रकाश्या भीतर ॥ माया सबी मिटाणी ॥
उमाराम आपकी सोजी ॥ चेतन आप पिछाणी ॥ ९ ॥ ९१ ॥

पद राग ।

खोजी खोज खोजीया पूरा ॥ नही बृद्ध नहि हाना ॥
निरमल ज्ञान कह्या कर निरणे ॥ श्रीपुरुषका म्याना ॥ टेर ॥
निर्गुण अरु सर्गुणका निश्चा ॥ परम अज्ञाद कहाना ॥
वार पार वाको नहि आवे ॥ मात लगे नहिं काना ॥ १ ॥
हमही अंश पुरुषका परतक ॥ जानत सोई ठिकाना ॥
मोय मालम निर्गुण सर्गुणकी ॥ रती न हमते छाना ॥ २ ॥
अति सूक्षमते सूक्षम कहिये ॥ निर्गुण सर्गुण ज्ञाना ॥
जुदा जुदा जुगतीसूं भाका ॥ प्रगट करूं बयाना ॥ ३ ॥

निर्गुण जहां जहां सर्गुणहैं ॥ उभै अंग परखाना ॥
जूं वृक्ष वृक्षकी छाया ॥ यूं वे भाव थपाना ॥ ४ ॥
सर्गुण रेत आसरे आदू ॥ निर्गुण तणे लखाना ॥
निर्गुण पुरुष कहीजे प्रेरक ॥ सर्गुण श्री बखाना ॥ ५ ॥
निर्गुणकी सर्गुण अर्धंगिया ॥ साची सूझ पटाना ॥
जिनकी आदि कछू नहिं आवे ॥ दोऊं अनाद रेवाना ॥ ६ ॥
जबही पुरुष चेतावे माया ॥ श्री धरे बहु वाना ॥
विना चेतायां कबहूं नहिं चेते ॥ ऐसा पुरुष सुजाना ॥ ७ ॥
सब सरवांके अन्दर बाहर ॥ ज्यूं प्रकाशत भाना ॥
ऐसे पुरुष रवी ज्यूं दिष्टा ॥ बोध स्वरूप निधाना ॥ ८ ॥
पांच पचीस समष्टी व्यष्टी ॥ रज तम सत् गुण ठाना ॥
ये सब श्री फरक नहि तामें ॥ ठौड़ ठौड़ परवाना ॥ ९ ॥
निर्गुण पिता मात पुनि सर्गुण ॥ यामें भेद न माना ॥
अचल पुरुषतें अचल श्रीहै ॥ ज्यूं है त्यूं दरसाना ॥ १० ॥
मा है सुंन पिताहै चेतन ॥ येही रमझ निरवाना ॥
पिता हमारेकी मा है शोभा ॥ अवर नहि कोई आना ॥ ११ ॥
माताकूं माता ज्यूं समझ्या ॥ पिताकू पिता समाना ॥
अदल विचार विचारयाअदली ॥ कर निरधार भकाना ॥ १२ ॥
समझ्या संत भाके आसोजी ॥ गावे वेद पुराना ॥
उमाराम सार निज सारी ॥ परम यथारथ जाना ॥ १३ ॥ ९२ ॥

पद राग ।

ऐसी विगत समझ कह राखी ॥ सुणियो संत सुजाणा ॥

हमहीं सारा खेल पसारा ॥ तीनों लोक रच्या संसारा ॥
मोंतें चले कला यह सोई ॥ हमहीं अचल चले नहिं कोई ॥ १ ॥
मेरा ज्ञान सदा एक सारा ॥ सवी कलाकूं परखण हारा ॥
तीनलोक मों मांय असारा ॥ हमहीं चेतन अगम अपारा ॥ २ ॥
मोंमें दृश्य अदृश्य न पावे ॥ हेती नेती कहां ठहरावे ॥
तुरीया अतीत अनादी थाया ॥ नहिं हम गया नहीं हमआया॥३॥
जाण हमारी हमहिं पिछाणी ॥ निर्गुण अमल थया निरवाणी ॥
उमारामअमरअविनाशी ॥ आपोईआपस्वयंप्रकाशी॥४॥१००॥

राग कानडा ।

आपोईआप अवर नहि कोई ॥ नामरूप भ्रमकी नहिं सोई॥ टेर ॥
हूं निरबंध फंद नहिं हमारे ॥ जोग विजोग वार नाहि पारे ॥
मेरी गती लखी नहिं जाई ॥ आदि अंत मध मेरे नहिं काई ॥१॥
मेरा स्वरूप सुते प्रकाशी ॥ निरालेप अद्वैत एकरासी ॥
नाम रूप जग मोंते भ्यासे ॥ सभर भरचा निरभै निरआसे॥२॥
वेद बहुविध किया विचारा ॥ तिरविध भाव कहकर हारा ॥
नेती वचन साख दोउं कहिया ॥ मेरा महरम मैंई लखरहिया॥३॥
हम हमारी आ जाण बताई ॥ यामें भेद भाव कछु नाही ॥
निज स्वरूप निश्चै है योई ॥ उमाराम चेतनहै सोई ॥ ४ ॥ १०१ ॥

राग आसा ।

साधो भाई निर्गुणकी गम याई ॥ जाण विगत साची कह दाखूं ॥
भेदाभेद न काई ॥ टेर ॥

निर्गुण जहां जहां सर्गुणहे ॥ उभै अंग परखाना ॥
जूं वृक्ष वृक्षकी छाया ॥ यूं वे भाव थपाना ॥ ४ ॥
सर्गुण रेत आसरे आदू ॥ निर्गुण तणे लखाना ॥
निर्गुण पुरुप कहीजे प्रेरक ॥ सर्गुण श्री बखाना ॥ ५ ॥
निर्गुणकी सर्गुण अर्धंगिया ॥ साची सूझ पटाना ॥
जिनकी आदि कछू नहिं आवे ॥ दोऊं अनाद रेवाना ॥ ६ ॥
जवही पुरुप चेतावे माया ॥ श्री धरे बहु बाना ॥
बिना चेतायां कबहूं नहिं चेते ॥ ऐसा पुरुप सुजाना ॥ ७ ॥
सब सरवांके अन्दर बाहर ॥ ज्यूं प्रकाशत भाना ॥
ऐसे पुरुप रवी ज्यूं दिप्ता ॥ बोध स्वरूप निधाना ॥ ८ ॥
पांच पचीस समथी व्यष्टी ॥ रज तम सत् गुण ठाना ॥
ये सब श्री फरक नहिं तामें ॥ ठौड़ ठौड़ परवाना ॥ ९ ॥
निर्गुण पिता मात पुनि सर्गुण ॥ यामें भेद न माना ॥
अचल पुरुपतें अचल श्रीहै ॥ ज्यूं है त्यूं दरसाना ॥ १० ॥
मा है सुंन पिताहै चेतन ॥ येही रमझ निरखाना ॥
पिता हमारेकी मा है शोभा ॥ अवर नहिं कोई आना ॥ ११ ॥
माताकूं माता ज्यूं समझ्या ॥ पिताकूं पिता समाना ॥
अदल विचार विचारयाअदली ॥ कर निरधार भकाना ॥ १२ ॥
समझ्या संत भाके आसोजी ॥ गावे वेद पुराना ॥
उमाराम सार निज सारी ॥ परम यथारथ जाना ॥ १३ ॥ ९२ ॥

पद राग ।

ऐसी विगत समझ कह राखी ॥ सुणियो सत सुजाणा ॥

केई समै यह देही विणासे ॥ परला निमत कह ताकूं ॥ ३ ॥
च्यार खाण चौरासी जाती ॥ जीवा जूण विलाया ॥
तम हंकार माये लय होसी ॥ यह पिरथी परला बताया ॥ ४ ॥
महा प्रलयकी विगत बताऊं ॥ यामें झूठ न कोई ॥
माया मूल सुंन मिटज्यासी ॥ महा परला है सोई ॥ ५ ॥
परला चार शास्त्र गावे ॥ अगम साख कहयोई ॥
यामें भेद भाव नहि पलका ॥ कह दाखी निरभोई ॥ ६ ॥
माया कलपत उपजे विणासी ॥ परला याके मांई ॥
पारब्रह्म माया बिन थाया ॥ है ज्यूं का त्यूं सांई ॥ ७ ॥
पारब्रह्मकी सत् सत्ताते ॥ माया सबी दिखाया ॥
सत् आतम परमातम एको ॥ निकलंक सदा रेवाया ॥ ८ ॥
ज्ञान भान प्रकाश्या भीतर ॥ माया सबी मिटाणी ॥
उमाराम आपकी सोजी ॥ चेतन आप पिछाणी ॥ ९ ॥ ९१ ॥

पद राग ।

खोजी खोज खोजीया पूरा ॥ नहीं वृद्ध नहि ह्राना ॥
निरमल ज्ञान कह्या कर निरणे ॥ श्रीपुरुषका म्याना ॥ टेर ॥
निर्गुण अरु सर्गुणका निश्चा ॥ परम अज्ञाद कहाना ॥
वार पार वाको नाहिं आवे ॥ मात लगे नहि काना ॥ १ ॥
हमही अंश पुरुषका परतक ॥ जानत सोई ठिकाना ॥
मोय मालम निर्गुण सर्गुणकी ॥ रती न हमतें छाना ॥ २ ॥
अति सूक्षमते सूक्षम कहिये ॥ निर्गुण सर्गुण ज्ञाना ॥
जुदा जुदा जुगतीसूं भाका ॥ प्रगट करूं बयाना ॥ ३ ॥

निर्गुण जहां जहां सर्गुणहैं ॥ उभै अंग परखाना ॥
जूं वृक्ष वृक्षकी छाया ॥ यूं वे भाव थपाना ॥ ४ ॥
सर्गुण रेत आसरे आदू ॥ निर्गुण तणे लखाना ॥
निर्गुण पुरुप कहीजे प्रेरक ॥ सर्गुण श्री बखाना ॥ ५ ॥
निर्गुणकी सर्गुण अर्धंगिया ॥ साची सूझ पटाना ॥
जिनकी आदि कछू नहिं आवे ॥ दोऊं अनाद रेवाना ॥ ६ ॥
जबही पुरुप चेतावे माया ॥ श्री धरे बहु वाना ॥
बिना चेतायां कबहूं नहिं चेते ॥ ऐसा पुरुप सुजाना ॥ ७ ॥
सब सरवांके अन्दर बाहर ॥ ज्यूं प्रकाशत भाना ॥
ऐसे पुरुप रवी ज्यूं दिष्टा ॥ बोध स्वरूप निधाना ॥ ८ ॥
पांच पचीस समष्टी व्यष्टी ॥ रज तम सत् गुण ठाना ॥
ये सब श्री फरक नहिं तामें ॥ ठौड़ ठौड़ परवाना ॥ ९ ॥
निर्गुण पिता मात पुनि सर्गुण ॥ यामे भेद न माना ॥
अचल पुरुपते अचल श्रीहै ॥ ज्यूं है त्यूं दरसाना ॥ १० ॥
मा है सुंन पिताहै चेतन ॥ येही रमझ निरवाना ॥
पिता हमारेकी मा है शोभा ॥ अवर नहि कोई आना ॥ ११ ॥
माताकूं माता ज्यूं समझ्या ॥ पिताकू पिता समाना ॥
अदल विचार विचारयाअदली ॥ कर निरधार भकाना ॥ १२ ॥
समझ्या संत भाके आसोजी ॥ गावे वेद पुराना ॥
उमाराम सार निज सारी ॥ परम यथारथ जाना ॥ १३ ॥ ९२ ॥

पद राग ।

ऐसी विगत समझ कह राखी ॥ सुणियो संत सुजाणा ॥

केई समै यह देही विणासे ॥ परला निमत कहु ताकूं ॥ ३ ॥
च्यार खाण चौरासी जाती ॥ जीवा जूण विलाया ॥
तम हंकार माये लय होसी ॥ यह पिरथी परला बताया ॥ ४ ॥
महा प्रलयकी विगत बताऊं ॥ यामें झूठ न कोई ॥
माया मूल सुंन मिटज्यासी ॥ महा परला है सोई ॥ ५ ॥
परला चार शास्त्र गावे ॥ अगम साख कहयोई ॥
यामें भेद भाव नहि पलका ॥ कह दाखी निरभोई ॥ ६ ॥
माया कलपत उपजे विणासी ॥ परला याके मांई ॥
पारब्रह्म माया बिन थाया ॥ है ज्यूं का त्यूं सांई ॥ ७ ॥
पारब्रह्मकी सत् सत्तातें ॥ माया सबी दिखाया ॥
सत् आतम परमातम एको ॥ निकलंक सदा रेवाया ॥ ८ ॥
ज्ञान भान प्रकाश्या भीतर ॥ माया सबी मिटाणी ॥
उमाराम आपकी सोजी ॥ चेतन आप पिछाणी ॥ ९ ॥ ९१ ॥

पद राग।

खोजी खोज खोजीया पूरा ॥ नही वृद्ध नहि द्दाना ॥
निरमल ज्ञान कह्या कर निरणे ॥ श्रीपुरुषका म्याना ॥ टेर ॥
निर्गुण अरु सर्गुणका निश्चा ॥ परम अज्ञाद कहाना ॥
वार पार वाको नहिं आवे ॥ मात लगे नहिं काना ॥ १ ॥
हमही अंश पुरुषका परतक ॥ जानत सोई ठिकाना ॥
मोय मालम निर्गुण सर्गुणकी ॥ रती न हमते छाना ॥ २ ॥
अति सूक्षमते सूक्षम कहिये ॥ निर्गुण सर्गुण ज्ञाना ॥
जुदा जुदा जुगतीसूं भाका ॥ प्रगट करूं बयाना ॥ ३ ॥

निर्गुण जहां जहां सर्गुणहैं ॥ उभै अंग परखाना ॥
जूं वृक्ष वृक्षकी छाया ॥ यूं वे भाव थपाना ॥ ४ ॥
सर्गुण रेत आसरे आदू ॥ निर्गुण तणे लखाना ॥
निर्गुण पुरुष कहीजे प्रेरक ॥ सर्गुण श्री बखाना ॥ ५ ॥
निर्गुणकी सर्गुण अर्धंगिया ॥ साची सूझ पटाना ॥
जिनकी आदि कछू नहिं आवे ॥ दोऊं अनाद रेवाना ॥ ६ ॥
जबही पुरुष चेतावे माया ॥ श्री धरे बहु बाना ॥
बिना चेतायां कबहूं नहिं चेते ॥ ऐसा पुरुष सुजाना ॥ ७ ॥
सब सरवांके अन्दर बाहर ॥ ज्यूं प्रकाशत भाना ॥
ऐसे पुरुष रवी ज्यूं दिष्टा ॥ बोध स्वरूप निधाना ॥ ८ ॥
पांच पचीस समष्टी व्यष्टी ॥ रज तम सत् गुण ठाना ॥
ये सब श्री फरक नहिं तामें ॥ ठौड़ ठौड़ परवाना ॥ ९ ॥
निर्गुण पिता मात पुनि सर्गुण ॥ वामें भेद न माना ॥
अचल पुरुषतें अचल श्रीहैं ॥ ज्यूं है त्यूं दरसाना ॥ १० ॥
मा है सुंन पिताहे चेतन ॥ येही समझ निसाना ॥
पिता हमारेकी मा हे शोभा ॥ अवर नहिं कोई आना ॥ ११ ॥
माताकूं माता ज्यूं समझ्या ॥ पिताकूं पिता समाना ॥
अदल विचार विचारयाअदली ॥ कर निरवार [illegible] ॥ १२ ॥
समझ्या संत भाके आसोजां ॥ गावे वेद [illegible] ॥
उमाराम सार निज सारी ॥ परम यथारथ जाना ॥ १३ ॥ [illegible] ॥

पद राग ।

ऐसी विगत समझ कद रार्खा ॥ सुगियां मंत [illegible] ॥

जाण लिया जिन सही ठहराणा॥जाकूं दरस्या ठिकाणा ॥ टेर ॥
ऐसा ख्याल निरत धर निरख्या ॥ कह बतलाऊं वैणा ॥
आदि जुगादि आगला मरमें ॥ सो दरसाणा नैणा ॥ १ ॥
निर्गुण निरालभ निरवाणा ॥ बिना भोम थिर थाणा ॥
सब मिटज्याय शेष रह वोई ॥ सो चेतन परखाणा ॥ २ ॥
च्यारूं खूंट दिशूं दिस पूरण ॥ चेतन ब्रह्म रहाणा ॥
निहचल आप अनादी केवल ॥ नहि कोई विषै मिलाणा ॥ ३ ॥
चेतन भेद कहणसूं न्यारा ॥ वाणी वेद थकाणा ॥
ज्ञेय ज्ञाता कोउ ज्ञान न लागे ॥ नहि कोई भूल सयाणा॥ ४ ॥
वनानाथ गुरू समझ पठाई ॥ पारब्रह्म परवाणा ॥
उमाराम सधर घर पाया॥ दृश्य हंकार मिटाणा ॥ ५ ॥ ९३ ॥

पदराग ।

निर्गुण ब्रह्म निरतसूं निरख्या ॥ वचना अतीत रेवाणा ॥
ज्यूं गूंगा गुड़ मीठा समझ्या ॥ जैसे यह गम गाणा ॥ टेर ॥
ब्रह्म विचार परखिया चसमा ॥ प्रगट कहू पिछाणा ॥
सतसुख परम प्रकाश अप्रमें ॥ पारब्रह्म निरवाणा ॥ १ ॥
अण घड अलख अपरबल देवा ॥ डाल मूल बिन थाणा ॥
आपोई आप अवर नहिं दूजा ॥ सदर सदा ठहराणा ॥ २ ॥
ब्रह्मंड पिड आसरे उनके ॥ तीन लोक कमठाणा ॥
भाव अनेक घरचा भांडामे ॥ क्रिया करम भोलाणा ॥ ३ ॥
अटल अभंगी सबका संगी ॥ नित पूरण रहवाणा ॥
सबतें गुप्त आपका परमंद ॥ अति अमर महा जाणा ॥ ४ ॥

ग्रथ अनन्त वेद पट वाणी ॥ यही सार विगताणा ॥
याका खोज खबर कर खोज्या ॥ यह निरबंधण छाणा ॥ ५ ॥
वनानाथ गुरू दिया मुजाका ॥ अदल छाप परवाणा ॥
उमाराम सहि भई मालम ॥ साचो साच पठाणा ॥ ६ ॥ ९४ ॥

राग कानडा ।

आतम परम प्रकाश सजाती ॥ ज्यां नहिं तिर्गुण तिमिर विजाती ॥ टेर ॥
उत्पती थिति लय सब माया ॥ शुद्ध चेतन निरमाया थाया ॥
अध्ये चेतन अज अविनासी॥जा नहिं उत्पति थिति अरु नासी १
खुल्या बंध्या एक अरु दोई ॥ चेतन खुल्या बंध्या नहि कोई ॥
सर्व उपाधीते न्यारा सोई ॥ आपोई आप सदा निरभोई ॥ २ ॥
चेतन अखे आर नहि पारा ॥नहि कोई क्षर अक्षर नहि धारा ॥
सत् समर्थ सूक्ष्म निराकारा॥है नहीं मध मिल्या नहिं न्यारा॥३॥
नित चेतन निरवाण अचाई ॥ ज्यां गुण माया वाण नहि काई ॥
उमाराम अजूणी अनन्ता॥नाहि कोई आदि मध्य अरु अंता ॥४॥

राग कानडा ।

अगम अगोचर अलख अजाती॥आंर न पार दूर नाहि साती॥ टेर
नित्यानित्य कारणी माया ॥ कारण मठ कारज घट काया ॥
आवागवण इनीमे होई ॥ कारण कारज है मिथ्या दोई ॥ १ ॥
कारण कारज चेतन कर हूवा ॥ है सब माये सभी ते जूवा ॥
चेतन मे घट मठ नाहि पावे ॥ वाहर भीतर रहे निरदावे ॥ २ ॥

जाण लिया जिन सही ठहराणा॥जाकूं दरस्या ठिकाणा ॥ टेर ॥
ऐसा ख्याल निरत धर निरख्या ॥ कह बतलाऊं वेणा ॥
आदि जुगादि आगला मरमें ॥ सो दरसाणा नैणा ॥ १ ॥
निर्गुण निरालभ निरवाणा ॥ बिना भोम थिर थाणा ॥
सब मिटज्याय शेष रह वोई ॥ सो चेतन परखाणा ॥ २ ॥
च्यारूं खूंट दिशूं दिस पूरण ॥ चेतन ब्रह्म रहाणा ॥
निहचल आप अनादी केवल ॥ नहि कोई विषै मिलाणा ॥ ३ ॥
चेतन भेद कहणसूं न्यारा ॥ वाणी वेद थकाणा ॥
ज्ञेय ज्ञाता कोउ ज्ञान न लागे ॥ नहिं कोई भूल सयाणा॥ ४ ॥
वनानाथ गुरू समझ पठाई ॥ पारब्रह्म परवाणा ॥
उमाराम सधर घर पाया॥ दृश्य हंकार मिटाणा ॥ ५ ॥ ९२ ॥

पदराग ।

निर्गुण ब्रह्म निरतसूं निरख्या ॥ वचना अतीत रेवाणा ॥
ज्यूं गूंगा गुड़ मीठा समझ्या ॥ जैसे यह गम गाणा ॥ टेर ।
ब्रह्म विचार परखिया चसमा ॥ प्रगट कहूं पिछाणा
सत्सुख परम प्रकाश अप्रमे ॥ पारब्रह्म निरवाणा ॥ १
अण घड अलख अपरबल देवा ॥ डाल मूल बिन थाणा
आपोई आप अवर नहि दूजा ॥ सदर सदा ठहराणा ॥ २
ब्रह्मंड पिंड आसरे उनके ॥ तीन लोक कमठाणा
भाव अनेक धरया भांडामे ॥ क्रिया करम भोलाणा ॥ ३
अटल अभंगी सबका संगी ॥ नित पूरण रहवाणा
सबते गुप्त आपका परमंद ॥ अति अमर महा जाणा ॥ ४

यूं सच्चिदानन्द निकलंक थाया॥ आपो आप भूल नहिं पाया ३॥
चेतन भूल रचाई ऐसी ॥ आप खिलारी वडा अपेची ॥
भूल दिखाय भूलमें नांई ॥ ऐसा चेतन अलख गुसांई ॥ ४ ॥
भूल झबाका मिथ्या सारा ॥ चेतन सदा सत् निराधारा ॥
उमाराम भूलकूं जाणी ॥ मेट भूल परस्या निरवाणी॥५॥९८॥

राग कानडा ।

भरम भूतकूं जाण्या ऐसा॥ इन्द्रजालके खिलके जैसा ॥ टेर ॥
भरम मांय यह पडीया वेदा ॥ छोटा वडा हुवा दोय भेदा ॥
भरम मांय यह लोक परलोका ॥ योही भरमका कहिये धोका १॥
आश्रम वरण भरमके माहीं ॥ धरम करम व्यवहारा याहीं ॥
ज्ञानी मूढ भरमहीं गया ॥ वंधणमुक्त भर्मकी क्रिया ॥ २ ॥
भाव अनन्तां भरम समाया ॥ भांत भांत कर भरम वंधाया ॥
मोटा भूत भरम यो भारी ॥ सवी कल्पना भरम विचारी ॥ ३ ॥
पारब्रह्म निकालस नूरा ॥ शुद्ध स्वरूप आपही पूरा ॥
तामें लेश भरमका नहिं कोई ॥ आपोईआप अचल निरभोई॥४॥
चेतन सुते भरम उपजाया ॥ आप भरमतें न्यारा थाया ॥
अलप भरम मृग तृष्णा झांई ॥ नित चेतन ज्यूं का त्यूं सांई ॥५॥
केवल ज्ञान कहीजे योई ॥ संत शास्त्र भाखे सोई ॥
उमाराम अभै पद पाया ॥ सहजे सारा भरम विलाया ॥ ६ ॥९९॥

राग कानडा ।

निश्चै सूझ केवल म्हारी ॥ आपणी जाण आपही सारी॥ टेर ॥

अकल कला नित चेतन थाया॥कारण कारज विना सघर रहवाया
अखंड अतोल अदेख अपारा॥विरला संत लखे यो सारा ॥३॥
आतम अज *अकारण सांई ॥ ज्यां हेति नेति दोऊं नाहीं ॥
अपणा आप प्रात आत्म ॥ उमाराम सोई अध्यात्म ॥४॥९६॥

राग कानडा ।

ऐसी रमझ लखे संत कोई ॥ ज्याकूं दरस्या चेतन सोई॥ टेर ॥
तिर्गुण पांच तत् देह धारी ॥ भांत भांतकर बंध्या विकारी ॥
सवहि उपाधी इनीके भीतर ॥ आतम चेतन रहे निरंतर ॥१॥
उपजे मिटे फेर होय जासी ॥ पांचू तत् तीन गुण नासी ॥
तिर्गुण भेद कल्पना योई ॥ कर महरम भाखी निरभोई ॥ २ ॥
सारी कला अकल दिखलावे ॥ अकल कलामें हात न आवे ॥
शुद्ध स्वरूप ब्रह्म एक सारा ॥ तामें नाम रूप नहि हंकारा॥३॥
वनानाथ गुरू अलख अपारा॥ शुद्धाद्वैत अंदर नहिं बारा ॥
द्वैताद्वैत तहां नहिं लिगारा॥ उमाराम सोई जाणण हारा॥४॥९७॥

राग कानडा ।

विरला संत लखे आ सोजी॥जिनलखि जिन मेटया भोजी॥टेर॥
चवदे लोक भूल माहिं भासा॥ स्वर्ग नर्क सुख दुख माहि आशा ॥
पांच तीन अरु नव पट आठा॥यही भूलमे वणिया थाठा ॥ १ ॥
दीपक तारा चंद उजासा ॥ रात मांये यह सब प्रकाशा ॥
यूई भूलमे सबी विस्तारा ॥ ब्रह्मा तिरण बंध्या आकारा ॥ २ ॥
भानु उदै हुवां रात विलावे॥ तारा चंद दीपक कहां पावे ॥

यूं सच्चिदानन्द निकलंक थाया॥ आपो आप भूल नहिं पाया३॥
चेतन भूल रचाई ऐसी ॥ आप खिलारी बडा अपेची ॥
भूल दिखाय भूलमें नांई ॥ ऐसा चेतन अलख गुसांई ॥ ४ ॥
भूल झबाका मिथ्या सारा ॥ चेतन सदा सत् निराधारा ॥
उमाराम भूलकूं जाणी ॥ मेट भूल परस्या निरवाणी॥५॥९८॥

राग कानडा ।

भरम भूतकूं जाण्या ऐसा॥ इन्द्रजालके खिलके जैसा ॥ टेर ॥
भरम मांय यह पडीया बेदा ॥ छोटा बडा हुवा दोय भेदा ॥
भरम मांय यह लोक परलोका ॥ योही भरमका कहिये धोका १॥
आश्रम वरण भरमके माहीं ॥ धरम करम व्यवहारा याहीं ॥
ज्ञानी मूढ भरमहीं गृया ॥ बंधणमुक्त भर्मकी क्रिया ॥ २ ॥
भाव अनन्तां भरम समाया ॥ भांत भांत कर भरम बंधाया ॥
मोटा भूत भरम यो भारी ॥ सबी कल्पना भरम विचारी ॥ ३ ॥
पारब्रह्म निकालस नूरा ॥ शुद्ध स्वरूप आपही पूरा ॥
तामें लेश भरमका नहिं कोई ॥ आपोईआप अचल निरमोई॥४॥
चेतन सुते भरम उपजाया ॥ आप भरमतें न्यारा थाया ॥
अलप भरम मृग तृष्णा झांई ॥ नित चेतन ज्यूं का त्यूं सांई ॥५॥
केवल ज्ञान कहीजे योई ॥ संत शास्त्र भाखे सोई ॥
उमाराम अभै पद पाया ॥ सहजे सारा भरम विलाया ॥ ६ ॥९९॥

राग कानडा ।

निश्चै सूझ केवल म्हारी ॥ आपणी जाण आपही सारी॥ टेर ॥

हमहीं सारा खेल पसारा ॥ तीनों लोक रच्या संसारा ॥
मोंतें चले कला यह सोई ॥ हमही अचल चले नहिं कोई ॥ १ ॥
मेरा ज्ञान सदा एक सारा ॥ सबी कलाकूं परखण हारा ॥
तीनलोक मों मांय असारा ॥ हमहीं चेतन अगम अपारा ॥ २ ॥
मोंमें दृश्य अदृश्य न पावे ॥ हेती नेती कहां ठहरावे ॥
तुरीया अतीत अनादी थाया ॥ नहिं हम गया नहीं हमआया॥३॥
जाण हमारी हमहिं पिछाणी ॥ निर्गुण अमल थया निरवाणी ॥
उमारामअमरअविनाशी ॥ आपोईआपस्वयंप्रकाशी॥४॥१००॥

राग कानडा ।

आपोईआप अवर नहिं कोई ॥ नामरूप भ्रमकी नहि सोई॥ टेर ॥
हूं निरबंध फंद नहिं हमारे ॥ जोग विजोग वार नाहि पारे ॥
मेरी गती लखी नहि जाई ॥ आदि अंत मध मेरे नहिं काई ॥१॥
मेरा स्वरूप सुते प्रकाशी ॥ निरालेप अद्वैत एकरासी ॥
नाम रूप जग मोंतें भ्यासे ॥ सभर भरचा निरभै निरआसे॥२॥
वेद बहुविध किया विचारा ॥ तिरविध भाव कहकर हारा ॥
नेती वचन साख दोउं कहिया ॥ मेरा महरम मैंई लखरहिया॥३॥
हम हमारी आ जाण बताई ॥ यामें भेद भाव कछु नाही ॥
निज स्वरूप निश्चै है योंई ॥ उमाराम चेतनहै सोई ॥ ४ ॥ १०१ ॥

राग आसा ।

साधो भाई निर्गुणकी गम याई ॥ जाण विगत साची कह दाखूं ॥
भेदाभेद न काई ॥ टेर ॥

समर्थ जैज जलदसूं न्यारा ॥ जैज जलद ज्यां नाहि ॥
जैज जलद वाहूतें भ्यासे ॥ सर्व प्रकाशी सांई ॥ १ ॥
सारी खलक मुलकका मालक ॥ है साराके मांई ॥
आना लेप सारांके साथे ॥ रहै जहांका ज्यांई ॥ २ ॥
अविगत गती दूरसे दूरा ॥ बोली लगे न तांई ॥
वेद सन्त नेती कह ऊबा ॥ फेर कह को कांई ॥ ३ ॥
नाहिं कोइ विद्या नहीं अविद्या ॥ बंध मुक्त नहि वांई ॥
उमाराम निजानंद चेतन ॥ समर्थ आप गुसांई ॥४ ॥ १०२ ॥

राग आसा ।

साधो भाई लख गुरूगम गम गाया॥या गमकूं कोई संत पिछाणे॥
बहुर जन्म नहिं आया ॥ टेर ॥
सत्गुरू समर्थ सेन लखाई ॥ सत् चेतन दरसाया ॥
अलख अरूपी अवरण स्वामी ॥ परब्रह्म परसाया ॥ १ ॥
सच्चिदानंद आनंद अखडी ॥ कर इच्छा जग थाया ॥
इच्छातें चाले जग सारा ॥ आप रहे निरदाया ॥ २ ॥
रोम रोम सारामे पूरण ॥ निरालेप विन काया ॥
जग मिथ्या स्वामी सत् वोई ॥ आतम अनत अजाया ॥ ३ ॥
ब्रह्मंड पिंड उपाधी सारी ॥ मृगजल ज्यूं दरसाया ॥
अद्वैत आप द्वैत नहि तामें ॥ गुरू मुख ज्ञानी पाया ॥ ४ ॥
भलक्या ज्ञान भाण प्रकाशा ॥ इच्छा भेद विलाया ॥
उमाराम लक्ष कह ताकी ॥ आपोई आप रहवाया ॥५॥१०३॥

राग आसा ।

साधो भाई सत् निश्चै कहुं बैणा ॥ यही विगतकूं संत लखाणा॥
निरखलिया निज नैणा ॥ टेर ॥
पारतैं पार परेरा रहता ॥ नेडेसूं रह नेडा ॥
नेडा दूर दोईके सामल ॥ बीच भरचा ब्रह्म सेणा ॥ १ ॥
वा समर्थकी एक पलकतैं ॥ ब्रह्मंड अनंत हुवाणा ॥
आप अपल प्रलमें नहिं आया ॥ आदू पुरुप पुराणा ॥ २ ॥
ब्रह्मा आदि तिणखला भीतर ॥ पूरण आप रह वाणा ॥
गेह न तजे मिले नहीं न्यारा ॥ नहीं वो मिटचा हुवाणा ॥ ३॥
आगे अनंत कोट संत कहग्या ॥ फेर अनंत कह कहणा ॥
गीता वेद पुराण शास्त्र ॥ सबमें या विध जाणा ॥ ४ ॥
वेद संतकी साख यथारथ ॥ भिन्न भिन्न किया पीयाणा ॥
उमाराम अकलकी सैना ॥ सत् भाक्या परवाणा ॥ ५ ॥१०४॥

राग आसा ।

साधो भाई ज्ञान अज्ञान बताया ॥ इचरज वडा बातका योई ॥
सत् खोजी सहि थाया ॥ टेर ॥
भूल पडी सारा जुग भूला ॥ आपेमे लपटाया ॥
आपे बिना आप सारामें ॥ ताका मरम न पाया ॥ १ ॥
है सब आप उलट नहिं देखे ॥ यही भूल कहाया ॥
आपा छोड आप सच्चिदानंद ॥ आदू आप अथाया ॥ २ ॥
आदि अंत मध आप एकसा ॥ कबहुं न पलटचा भाया ॥

पलटचा सब दीसे सो मिथ्या ॥ सागे वेण सुणाया ॥ ३ ॥
आपणी जाण आपही जाणे ॥ ज्यूं गूंगे सैन चलाया ॥
नहिं दूजा दूजाका पाईये ॥ आपोइ आप रहवाया ॥ ४ ॥
भेद आपका भेद न कोई ॥ ऐसे जाण जणाया ॥
उमाराम आप बिन आपे ॥ सैनीसैन पजाया ॥ ५ ॥ १०५ ॥

रागा आसा ।

साधो भाई कर मेहरम दरसाई ॥ उपजे रह मिटे मायाई ॥
भूल कहीजे आई ॥ टेर ॥

पारब्रह्म का सत शब्द है ॥ सो आतम है सांई ॥
शब्द ब्रह्मतें सबी फोरणा ॥ आप अफुर रहवाई ॥ १ ॥
शब्द ब्रह्मतें शब्द अनंता ॥ नाना भांत दिखाई ॥
आप अभांती भांत न राखे ॥ सोहं ब्रह्म अथाई ॥ २ ॥
सबी कलेश करमतें न्यारा ॥ सबमें रहत अचाई ॥
अकल स्वरूपी आप अनादी ॥ वेद संत आ गाई ॥ ३ ॥
सोहं शब्द निज ज्ञान कहीजे ॥ भेद नहीं ता मांई ॥
शब्द ब्रह्म पारब्रह्म एकहे ॥ सूर घाम दुइ नाई ॥ ४ ॥
सच्चिदानंद आनन्द अपारा ॥ मुखसूं कह्या न जाई ॥
आपोई आप अवर नहिं दूजा ॥ उमाराम लख थाई ५॥ १०६॥

राग आसा ।

साधो भाई पागी पारख लाया ॥ प्रगट जाण कह्या परवाणा ॥
साचा खोज बताया ॥ टेर ॥

पारब्रह्मकी सता अपरबल ॥ सारा खेल रचाया ॥
नाना भांत भावना नाना ॥ सब मांये सता अचाया ॥ १ ॥
सकल सृष्टिमें सता है केवल ॥ ज्ञान कहलावे भाया ॥
सो आतम परमातम है ऐसे ॥ अग्नि उष्ण एक राया ॥ २ ॥
आतम चेतन सकल प्रकाशी ॥ नहिं कोइ करम न काया ॥
सदा अकरता आप विराजे ॥ शुद्ध स्वरूप रेवाया ॥ ३ ॥
धरण न गगन दिवस नहिं राती ॥ नहिं कोई धूप न छाया ॥
धरम करम सेवक नहि स्वामी ॥ चेतन जाण रहवाया ॥ ४ ॥
अपणी बात आपकूं मालुम ॥ आपही खेल खिलाया ॥
आप बिना दूजा नहिं दरसे ॥ उमाराम निज थाया॥५॥१०७॥

रागआसा ।

साधो भाई समझे संत सुजाणा ॥ के समझे सत् गुरूका चेरा ॥
जिनही साच पठाणा ॥ टेर ॥
अनुभव ज्ञान उदे हुवा अन्दर ॥ परम पुरुषकूं जाणा ॥
वाकी सूझ खबर कर भाकूं ॥ येही वचन परवाणा ॥ १ ॥
नहिं वो अन्दर नहिं वो बाहर ॥ नहीं दूर नाहिं नेरा ॥
नही वो गुप्त नही वो परगट ॥ आपोईं आप रहेरा ॥ २ ॥
वा समर्थकी सत्तासततें ॥ सुते किया कमठाणा ॥
सृष्टि अनन्त अनन्त अवतारा ॥ ब्रह्मंड अनन्त थपाणा ॥ ३ ॥
सारा खेल सता दिखलावे ॥ आतम सोइ कहाणा ॥
रह सब मांय भिले नाहिं किसीमें ॥ निराधार ओलखाणा ॥४॥
सब खिलका माया माहि कहिये ॥ यह मिथ्या दरसाणा ॥

आतम सत् अमर अविनासी ॥ यह विवेक निज छाणा ॥ ५ ॥
परमातम आतम हे एको ॥ यही रमझ निरवाणा ॥
उमाराम विचारा योंई ॥ सारा भरम विलाणा ॥ ६ ॥ १०८ ॥

राग आसा ।

साधो भाई खूब खबर कर हेरा ॥ शुद्ध स्वरूप सुते प्रकाशी ॥
तहां नहीं सांझ सवेरा ॥ टेर ॥
आतम अगम अगोचर सांई ॥ नहीं ज्यां मेरा न तेरा ॥
हूं तूं दोनूं परे परमपद ॥ नाहिं कोई मिल्या विसेरा ॥ १ ॥
नजीकतें नजीक दूरतें दूरा ॥ दूर निकट बिच डेरा ॥
गया न आया ग्रुम्या नहिं पाया ॥ नहिं कोई ढक्या उगेरा ॥२॥
आदि अरु अंत मध्य मायाकी ॥ आतम अनन्त अखेरा ॥
आतममें माया कहां पावे ॥ नित चेतन निरभेरा ॥ ३ ॥
अगम निगम वाणी नहिं पहुंचे ॥ रहता वचनऊं परेरा ॥
उमाराम अलेप असंगी ॥ निरविकार दिष्टेरा ॥ ४ ॥ १०९ ॥

राग आसा ।

साधो भाई यह केवल निरधारा ॥ सत मिथ्याका किया निवेडा ॥
याही जाण सब पारा ॥ टेर ॥
सतस्वरूप आतम नित चेतन ॥ निरमन थया अपारा ॥
उण आतमसूं मन हुवा प्रगट ॥ ज्यूं बंझ्या घरबारा ॥ १ ॥
मन अभिमानी सकल जगतको ॥ मान्या बहुत प्रकारा ॥
द्वैत अरु अद्वैत मानीया ॥ यामें कलपण हारा ॥ २ ॥

ब्रह्मा होयके मानी उतपती ॥ होय शिव मान्या संघारा ॥
विष्णु होयके मानी पालणा ॥ यह मन भाव विचारा ॥ ३ ॥
मनही धरण पवन अरु पाणी ॥ मनही तेज अकाशा ॥
मनही चवदे भवन दिशी च्याहूं ॥ जुदाजुदा कर भ्यासा ॥ ४ ॥
मनही समंद नदी अरु वाला ॥ मनही पर्वत आठा ॥
मनही चंद सूर दिन राती ॥ यह सब मनका थाठा ॥ ५ ॥
मनही तीर्थ व्रत हे जप तप ॥ मन दातार भिख्यारा ॥
मनही मनुष्य देव अरु दानव ॥ मन लिया सब अवतारा ॥ ६ ॥
मनही ज्ञानी ध्यानी अज्ञानी ॥ मनगुरू मन चेला ॥
मनही वरण व्यवहार आश्रम ॥ यह सब मनका खेला ॥ ७ ॥
मनही पाप पुण्य है सुख दुख ॥ स्वर्ग नर्क मन माना ॥
जो माने वाहीकूं भुगते ॥ महा उपाधिकी खाना ॥ ८ ॥
अनन्त कल्पना मनके माहीं ॥ मनहै झूठ पसारा ॥
आतममें मन लेश न पावे ॥ यह निरणा तत्सारा ॥ ९ ॥
अगम अरु निगम ज्ञान योइ गावे ॥ प्रगट करे पुकारा ॥
उभाराम आप सत् जाण्या ॥ खूटा मन विकारा॥१०॥११० ॥

राग आसा ।

साधो भाई ब्रह्म विचार अपारा ॥ चेतन जाण जणाई चेतन ॥
चेतन जाणणहारा ॥ टेर ॥

परमातम परब्रह्म पुरुषोत्तम ॥ परमदयालू मोजी ॥
वेई उदै हुवा महा अनुभौ ॥ सो दरशाऊं सोजी ॥ १ ॥
परम पुरुषोत्तम महा अकरता ॥ महा करताहै सोई ॥

आप निरंतर प्रगट वरते ॥ करण अकरणा दोई ॥ २ ॥
व्यष्टी अरु समष्टी नाना ॥ रचे पलकमें केई ॥
पल पल मांय करे महापरला॥ ऐसा समर्थ वेई ॥ ३ ॥
उपजावण विणसावण हारा ॥ अति परवीण वेई दाता ॥
आप कबूं उपजे नहिं विणसे ॥ रेता अनादू ज्ञाता ॥ ४ ॥
नहिं कोइ भाव अभाव रूप वे ॥ चेतन आप असंगी ॥
नहिं भेला न्यारा नहिं कासूं ॥ निराधार बेरंगी ॥ ५ ॥
अविगत गती ब्रह्मकी कहिये ॥ मती न पहुंचे वांई ॥
विधविध वेद वाक्यकह छूटा ॥ लगे नही है नांई ॥ ६ ॥
बोध स्वरूप अजन्मा आतम ॥ शुद्ध साक्षात आ वाणी ॥
सदा उद्योत सुचेत सर्वगत ॥ उमाराम सोई जाणी ॥७॥१११॥

राग आसा ।

साधो भाई आगम अकथ कहाणी ॥ चेतन गती पिछाणे चेतन ॥
चेतन आप बखाणी ॥ टेर ॥

अगम जाण कहिये आतमकी ॥ सरवां परे विचारा ॥
देख अदेख दृष्टि नहिं पहुँचे ॥ आतम अनन्त अपारा ॥ १ ॥
प्रगट करूं लक्ष आतमकी ॥ हेती नेती सारूं ॥
सोई यथार्थ निरणे करके ॥ अनुभव वचन उचारूं ॥ २ ॥
आतम लियां हेती भ्यासे ॥ नेती सोई जणावे ॥
चेतन आप दोईको द्रष्टा ॥ ठौड ठौड वर्तावे ॥ ३ ॥
हेतीमें हद बंधन वाकी ॥ नेतीसूं निरदाया ॥
निरालंब निरदोप निरंजन ॥ अपना आप रेवाया ॥ ४ ॥

रहत विशुद्ध अनादी आतम ॥ जाण स्वरूपी सोई ॥
मेहरम सदा आपका ऐसा ॥ आप बिना नहिं कोई ॥ ५ ॥
निजपद अज कूटस्थ अजनमा ॥ है नाहैं जां कैसा ॥
उमाराम एक रस आतम ॥ नित जैसाका तैसा ॥ ६ ॥ ११२ ॥

राग आसा ।

साधोभाईयोहीमेहरम महा झीणा॥ अनुभौ उक्त कहीकरनिरणै॥ लखे संत परवीणा ॥ टेर ॥

अनिरवाच आतम पद कहिये ॥ कथा अगोचर वाकी ॥
जाकूं परख पारखा भाखूं ॥ निगम इसीविध दाखी ॥ १ ॥
चेतन ब्रह्म ज्ञान घन स्वामी ॥ निरमल अखंड अनूपा ॥
आदि न अंत मध्य नहिं वाको॥ निकलंक शुद्ध स्वरूपा ॥ २ ॥
सो चेतन सब जगको प्रेरक ॥ सबकूं पैरण हारा ॥
वेही द्रष्टा बहु देख दिखावे ॥ भांती भांत पसारा ॥ ३ ॥
घट मठके भीतर अरु न्यारा ॥ नभ निर्भेद रहवाई ॥
यूं चेतन पैरक यूं द्रष्टा ॥ भजे तजे नहि काई ॥ ४ ॥
जगका भाव अब न पावे ॥ चिदानंद घन मांई ॥
सदा सुचेत विराज्या चेतन ॥ परमानंद गुसांई ॥ ५ ॥
निगे आपकी अनन्त अपारा ॥ आप वडा महाजाणी ॥
आपी लखे आपका निश्चा ॥ परतकही परवाणी ॥ ६ ॥
मम ओलखाण सोहं प्रकाशी ॥ नही विशेष समाना ॥
उमाराम आतमा चेतन ॥ बंध मुक्त नहिं आना ॥ ७ ॥ ११३॥

राग आसा ।

साधो भाई योई सिद्धान्त कहाई ॥ च्यारू वेद हमारी शाखा ॥
प्रगट पुकारे आई ॥ टेर ॥
हमहीं अति अनन्त अलागी ॥ सुते प्रकाश सदाई ॥
आदि अरु अंत मध्य नांहि मेरे ॥ रहता अचल अथाई ॥ १ ॥
हमहीं विधि निषेध उपाई ॥ दोनूं भावना थाई ॥
मेरी जाण इनीतें छानी ॥ ग्रहण तजूं नहिं काई ॥ २ ॥
विधिनिषेध भाव क्षेतरका ॥ आई हुई आनांई ॥
योई कल्पना कहणे मात्र ॥ जाण रह्या हूं मांई ॥ ३ ॥
हमही अकल गमलगे न है नहिं ॥ शिव स्वरूप निज सांई ॥
सो हूं उमाराम अनादू ॥ अपणी सार बताई ॥ ४ ॥ ११४ ॥

रागप्याला ।

जग मिथ्या दरस्यारे ॥ सत् चिद निश्चै थया ॥
भरम ना सबही भागीरे ॥ पूरण प्याला पाया ॥ टेर ॥
सतगुरू स्वामी कृपा कीवी ॥ शिरपर हाथ दिया ॥
दया विचार ज्ञान गुंझ पाया ॥ पीवत उदै भया ॥
निज तत्त्व सारच्या रे ॥ तत्त्व जाण लिया ॥ १ ॥
निराधार अज अव्यय अपारा ॥ निरालम्ब निरमाया ॥
है सब माय सबीसूं न्यारा ॥ ऐसा वो चेतन भाया ॥
गम सत् भाखीरे ॥ सोजी कर वचन कया ॥ २ ॥
अखे अजाती दूर न साथी ॥ आपोई आप रहवाया ॥

निकलंक नूरा पूरण पूग ॥ अखे अनूप अजाया ॥
सैन यो झीणीरे ॥ गुरूमुख संत लख्या ॥ ३ ॥
वाकी महिमा गाइय न जावे ॥ वेद संत थक गईया ॥
फेर कोई केवे तो कह्या नहिं जावें ॥ सैनी सैन समझाया ॥
अक्षर नहि लागेरे ॥ अंदर मांय ओलखाया ॥ ४ ॥
वनानाथ गुरू आदि अनादी ॥ पारब्रह्म निज थाया ॥
उमाराम सत् सोई पिछान्या ॥ अवर धरूं नहि काया ॥
शुद्ध स्वरूप परस्यारे ॥ अस्त जड क्लेश विलाया ॥५॥११९॥

राग प्याला ।

केवल स्वरूप थायारे ॥ नित सत् ज्यूं का त्यूंही ॥
सूझ मेरी ऐसीरे ॥ अगम निगम गाय रेही ॥ टेर ॥
मेरी तो सार मेंहीं पिछाणी ॥ मो बिन दूजा नाईं ॥
मेरी सारका वार न पारा ॥ मैंई जाण रह्या माँई ॥
सोहं प्रकाशीरे ॥ अवर कोई केवे कांईं ॥ १ ॥
मेरी सता कर सब जग भ्यासे ॥ सता दिखावे सोई ॥
मेरी तो सताहे मेरे मांई ॥ मै अरु सता एक सोई ॥
ज्ञान मेरा योई रे ॥ सबको द्रष्टा मैंई ॥ २ ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश चवदा भुवन लग ॥ मोहीतें चालरेया ॥
मेरे बिना कोई पल न चाले ॥ मैंई अपल निरदाया ॥
एकरस ठाडा रे ॥ दूजा मोंमें पावे नांई ॥ ३ ॥
नामरूप जग मोंमें नहिं कोई ॥ मेरी है चाल अचाल ॥
उमाराम सो चेतन आदू ॥ मेरा कया स्वाल ॥

अकल गुंझ मेरारे ॥ लखणेमें आवे नहिं कांई ॥ ४ ॥ ११६ ॥

राग प्याला ।

दूजा नाहिंरे रहता आप अखे ॥ सिद्धान्त योईरे ॥
शाखा दोऊं वचन भखे ॥ टेर ॥
नहिं कोइ दृश्य नहिं अदृश्य ॥ नहिं कोई सूक्षम थूल ॥
नहिं कोई उपज्या नहीं मिटाना ॥ नहीं ज्यां साच न कूर ॥
अनुभव सोजीरे ॥ अपणी आप लखे ॥ १ ॥
कोशाअतीत कोश नहिं लागे ॥ आप निकालस नूर ॥
सबी लोक उनके आधारा ॥ सबको दिष्ट हजूर ॥
निरबंध थायारे ॥ नहिं कोई दूर नखे ॥ २ ॥
कीडी कुंजर ब्रह्मा तिरण मांई ॥ आप रह्या भरपूर ॥
त्याग न संग्रह मारे नहिं तारे ॥ नहिं कोइ कायर सूर ॥
समर्थ ऐसारे ॥ घट वध नाय रखे ॥ ३ ॥
निरभौ निरंतर सदा आतमा ॥ नहीं जां माया आंकूर ॥
सोई है उमाराम चेतन ॥ परब्रह्म निज सूर ॥
कहणी नहिं लागेरे ॥ वायक सबी थके ॥ ४ ॥ ११७ ॥

रागधमाल ।

सतगुरूकी सैना बडी विशाल॥जिन पाई सो भया निहाल ॥टेर॥
सतगुरू मिलिया चतुर सुजान ॥ पारब्रह्मकी दीवी पिछाण ॥
निरखत नैना भया निहाल॥ जनम मरणका मिटगया साल ॥१॥
निराकार निरदोप अज्ञाद ॥ हरप शोक नहिं वाद विवाद ॥

दिवस न रैन घाम नहीं शीत ॥ आपोई आप नहीं हार जीत ॥२॥
आविगत अखे अरूप सुचेत ॥ ज्यां नहिं चेताचेत अचेत ॥
ज्यां नहिं मनमायाका खेल ॥ रहता चेतन अलख अखेल ॥३॥
कहण सुणणकी बात नहिं कोय ॥ गुरू मिलियां आसोजी होय॥
वनानाथ गुरू दीवी सार ॥ उमाराम सत् लीवी विचार॥४॥११८॥

रागधमाल ।

ऐसाउदेहुवाअंदरज्ञानभाण।अनुभौभंडार खुल्यानिजछाण॥टेर॥
खोजी खोज पिछाण्या साच ॥ वाका निरणा कहू वाच ॥
है ज्यूंका ज्यूं देऊं बताय ॥ यह सोजीहै अगम अथाय ॥ १ ॥
पारब्रह्म निरमला नूर ॥ रहता अद्वै अनादि हजूर॥
सोहं रूप सदा एकसार ॥ आपोई आप दूजा नाहिं लिगार॥२॥
अक्षय अजीत अखे निरफंद ॥ ज्ञान अज्ञान नहीं मुक्त बंद ॥
भूत भविष्य नहीं ज्यां वरतमान॥सत्चिद् आनन्दअमितअमान३
चिदानन्द चेतन निरवाण ॥ वोई परम प्रकाशी जाण ॥
चेत अचेत चेतावे सोय ॥ अद्वै आप जां नहिं एक दोय ॥ ४ ॥
दरशन द्रष्टा दृश्य संसार ॥ यह सब माया अलप असार ॥
शेप वोई रह आवे नहि जात ॥ वेद सन्त ऐसेई दरसात ॥ ५ ॥
झीणेसू झीणी यो सैन ॥ मनबुद्धि पहुँचे नाहि वेण ॥
आतमज्ञानका योई विचार ॥ उमाराम सत् जाणण हार६॥११९

राग धमाल ।

त्रिगुणअतीत अव्ययअपार॥ आप आपका किया विचार ॥टेर॥

हमहीं चेतन निराधार ॥ देख अदेख नाहिं गुप्त जहार ॥
लघु दीर्घ नाहिं रंक राव ॥ आपोई आप रह्या समभाव॥१॥
मेरी सता खड़ा किया भेप ॥ ईश्वरी ब्रह्मा विष्णु महेश ॥
यामें भाव दिखाया अनेक ॥ सबमें सता विराजे एक ॥ २ ॥
सता हमारी केवल जाण ॥ आतम सोई चेतन निरवाण ॥
मेरी सताहै हमारे मांई ॥ सता हमार अंतर नांई ॥ ३ ॥
कारण लिंग अरु थूल विकार ॥ त्रिगुण माया सबी असार ॥
सत् चिद् आनन्द निरविकार ॥ नितप्राप्ति अपणा आप अपार४॥
गुंझ हमारा अती अथाय ॥ अगम निगम पहुँचे नहि काय ॥
उमाराम चेतनहै सोय॥ अपणी निश्चै आपकहिजोय॥५॥१२०॥

राग एली।

सार निज आपणी सारी ॥ परखण हारा आप ॥ टेर ॥
भूला स्वरूप आपना आतम ॥ होय रह्या बहुत अजाण ॥
मान अनादि जगतकूं उरमें ॥ यह गिरली परवाण ॥ १ ॥
विपरयांसिंघ शुद्ध सब अपणी ॥ अज्या मानी आण ॥
ऐसे जगत मानली आतम ॥ इचरज योई कहाण ॥ २ ॥
लख चौरासी जूण भोगवे ॥ भोगे च्यारूं खाण ॥
स्वर्ग नर्क सुख दुखकूं भोगे ॥ पड़ी अनतां हाण ॥ ३ ॥
तूं निज ब्रह्म देख तूं तुझकूं ॥ आन नहीं दरसान ॥
तूं नाहिं जगत जगत नाहिं तोमें ॥ छोड़ जगत्की बाण ॥ ४ ॥
रवी मांय रजनी नाहिं पावे ॥ रजनीमे नाहिं भाण ॥
यूं सब जगत लेश नाहिं तोमे ॥ याई थारी ओलखाण ॥ ५ ॥

तूं सत् चिद् आनंद आतमा ॥ तेरी गती पिछाण ॥
नित शुद्ध स्वरूप आतम अखंडी ॥ निराकार महरान ॥ ६ ॥
आपही जाण भूल दिखलावे ॥ आप भूल नाहिं जाण ॥
उमाराम सदा ज्यूंका त्यूं ॥ अनिरवाच निरवाण ॥ ७ ॥ १२१ ॥

राग एली ।

अगमकीवारता भाखीरे साधो ॥ जाणे कोई संत सुजाण ॥ टेर ॥
पूछणकी तो दोय बातहै ॥ एक झूठी एक साच ॥
नाम रूप सब झूठी कहणी ॥ आतम सत् अवाच ॥ १ ॥
दोय बात निरणै करी ॥ वेदा नहीं लिगार ॥
साच बातका भाव हमारे ॥ झूठी तजी असार ॥ २ ॥
लाख बातकी योई बात है ॥ योई बात निरदोष ॥
भावें झालो झूठ बातको ॥ के साचीलो सोच ॥ ३ ॥
झूठी बात गिरीसो डूबा ॥ जुग जुग आवा गूण ॥
साच गिरया सोई पार पहुंता ॥ भेटया अखी अजूण ॥ ४ ॥
इसी बातकूं संत दृढावे ॥ आई वेद दरसाई ॥
वनानाथ गुरू सोजी दीवी ॥ उमाराम लख गाई ॥ ५ ॥ १२२ ॥

राग एली ।

कहणके बार आसोजी रे साधो ॥ कोई गुरूमुख लेसी जाण ॥ टेर ॥
वात करो तो देखके ॥ पीछे बोलो बोल ॥
साच झूठका करो निवेड़ा ॥ आ मनमें लो तोल ॥ १ ॥
योही बात परवाण है ॥ जग मिथ्या ब्रह्म सत् ॥

श्रुति स्मृति खड़ी पुकारे ॥ निज निरणाकी आ मत् ॥ २ ॥
यही बात चेतनकूं सूझे ॥ सबकूं जाणण हार ॥
निरमाया अद्वैत विराजे ॥ आपोई आप अपार ॥ ३ ॥
यही बात गूंगेकी सैनी ॥ गूंगा माने साच ॥
वनानाथ गुरू निरणे दीवी ॥ उमाराम कही वाच ॥४॥१२३॥

रागएली ।

ब्रह्मकी सूझ ना योंई रे साधो ॥ यही जाण सब पार ॥ टेर ॥
छकिया संत बक्या निरधोखे ॥ सतगुरूके प्रताप ॥
प्याला गुरू पाया सच्चिदानन्द ॥ निश्चै ओलख्या आप ॥१॥
अति अनन्त अपार अनादू ॥ पारब्रह्म प्रकाश ॥
विधिनिषेध नहिं थाप उथापा ॥ निष्क्रिये अविनास ॥ २ ॥
सारा खेल दिखावे वोई ॥ समर्थ बडा सुचेत ॥
आप अकरता सबको द्रष्टा ॥ सबी दृश्यते रहेत ॥ ३ ॥
नाम रूप मृग तृष्णा जल है ॥ यह मिथ्या दरसाई ॥
चेतन है नित ज्यूंका त्यूंहीं ॥ ज्यां माया नाहिं काई ॥ ४ ॥
है ज्यूकी ज्यूंई कह दाखी ॥ यह निरबंधण वाक ॥
समझ्या जके सतकरमाने ॥ अगम निगम भरे साख ॥ ५ ॥
वनानाथ गुरू केवल सोई ॥ तिर्गुण नहीं तरास ॥
उमाराम सदा सत् सोई ॥ अनुभव भाखी साच ॥ ६ ॥ १२४ ॥

रागएली ।

ब्रह्मका ज्ञान है योहीरे साधो ॥ चेतन जाणे जाण ॥ टेर ॥

सोहं ब्रह्म अमर अविनासी ॥ पूरण सुते प्रकाश ॥
परखण वाला मेंई चेतन ॥ आपोंई आप निरास ॥ १ ॥
कारण लिंग थूल तिहुं देहा ॥ मेरी सतातें भास ॥
तिर्गुण भाव सताके सारे ॥ मेंई अकरता खास ॥ २ ॥
मेरी सता सतहे सई ॥ जाण हमारे पास ॥
सता हमारे रोम ने अतर ॥ सदा रह्या एक रास ॥ ३ ॥
सबी क्लेश गुणमें कहिये ॥ गुण तीनूंई नास ॥
निर्विकल्प सत् चेतन आनन्द॥नहिं गुण गुणी विलास ॥ ४ ॥
अविगत भेद हमारा कहिये ॥ अगम निगम थकी वाच ॥
तुरीया अतीत उमाराम चेतन॥ मेरा किया अभ्यास॥५॥१२५॥

राग एली।

चेतनका स्वाल हे योईरे साधो॥ परखणवाला आप ॥ टेर ॥
हमहीं निरालेप निरद्वंदी ॥ नहिं कोइ देख अदेख ॥
दूजा लेश नही मो मांहीं ॥ हमहीं निकलंक एक ॥ १ ॥
पांच ततगुण तीन आददे ॥ हमी दिखांई देख ॥
सबी भावना मोतें भ्यासे ॥ मेरा भाव अलेख ॥ २ ॥
अचल अखंड सबीको द्रष्टा ॥ मेरा सई विवेक ॥
नाम रूप सब मोमें मिथ्या ॥ हमहीं सत् विपेक ॥ ३ ॥
शुद्ध स्वरूप सदा सुखदाई ॥ योई हमारी टेक ॥
उमाराम निरबंधण नितही ॥ निर्गुण थया अभेक ॥४॥ १२६ ॥

राग एली ।

सिद्धान्तका छाणहै योहीरे साधो ॥ नहिं कोइ द्वैतं अद्वैत ॥ टेर ॥
एक बिना नहिं दोय है ॥ दोय बिना नहिं एक ॥
चेतन करके एक दोय है ॥ आप दोय नहिं मेक ॥ १ ॥
एक दोयके मध्य विराजे ॥ आतम सदा सुचेत ॥
भजे न तजे खुल्या नहि बंध्या ॥ नहिं कोई चेत अचेत ॥ २ ॥
विखरे बणे अकरता करता ॥ एक दोयके मांई ॥
याहीमें वैकुंठ चौरासी ॥ स्वामी सेवक यांई ॥ ३ ॥
एक दोयमें सबी पसारा ॥ यामें लेख अलेख ॥
चेतनमें याकी सब हाणी ॥ निरअंगी रेया सेख ॥ ४ ॥
एक दोय वामें कहां पावे ॥ कहण अकहण न कोई ॥
उमाराम सोई है चेतन ॥ निष्प्रिये निरमोई ॥ ५ ॥ १२७ ॥

राग देश ।

सूझ सतगुरूजीरी आईए ॥ कर निरधार सार ज्यूंकी त्यूं ॥
प्रगट गाईए ॥ टेर ॥
परमविशुद्ध सूझ सतगुरूकी ॥ परम प्रकाशीए ॥
महासुखरूप स्वरूप सनातन ॥ अमल अनासीए ॥ १ ॥
क्रांती अनंत गुरू समर्थमें ॥ कला अनंताए ॥
सकल सृष्टिकूं धारण हारा ॥ आदि न अंताए ॥ २ ॥
परम गुरूके रोम रोममें ॥ कोट ब्रह्मंडाए ॥
सर्वा अतीत सर्वगत व्यापक ॥ अचल अखंडाए ॥ ३ ॥

जो कोई निश्चै सतगुरूकूं ॥ ज्याविध सेवेए ॥
बडा दयाल सची फलदायक ॥ सो फल देवेए ॥ ४ ॥
सर्व मनोरथ पूरण हारा ॥ सतगुरू स्वामीए ॥
पलपल मांय खबर ले सबकी ॥ वे अंतरयामीए ॥ ५ ॥
मुखहै सहस सहस दोय जिह्वा ॥ शेषजी ध्यावेए ॥
नये नये ले नाम नितो नित ॥ पार न आवेए ॥ ६ ॥
सुर नर असुर संत सनकादिक ॥ गावे साराए ॥
चारूं वेद गाय कह गुरूकूं ॥ अगम अपाराए ॥ ७ ॥
वनानाथ सतगुरू सच्चिदानन्द ॥ अखे सदाईए ॥
उमाराम गुरू मेंई चेला ॥ दुतिया ढाईए ॥ ८ ॥ १२८ ॥

राग प्रभाती ।

निज अनुभवकी पारखा ॥ अनभोई जाना ॥
अनभोई अनभो कया ॥ अनभोका म्याना ॥ टेर ॥
ब्रह्मवेता ब्रह्मरूप है ॥ भाखे ब्रह्म वाणी ॥
उभे अंगकूं ओलखे ॥ ब्रह्मवेत्ता जाणी ॥ १ ॥
ब्रह्म अखंडानन्द है ॥ खंडित नहिं राई ॥
जाण भूल जामें किसी ॥ द्वैताद्वैत न काई ॥ २ ॥
वां समर्थके आसरे ॥ माया प्रगटाणी ॥
वेई अविद्या सुंन्य है ॥ बहुती फैलाणी ॥ ३ ॥
पांच तत्त्व पांचूं विषे ॥ गुण तीन पसारा ॥
पिण्ड ब्रह्मंड खंडहै ॥ माया विस्तारा ॥ ४ ॥
चवदे भवन चउंखाण लो ॥ प्रकृति वंछया ॥

स्वर्ग मृत्यु पाताल लों ॥ भिन्न भिन्न भई इछ्या ॥ ५ ॥
न्यून विशेष समान है ॥ क्रिया करत अनेका ॥
पाप पुण्य दुख सुख सबे ॥ अन आतम लेका ॥ ६ ॥
नाना मार्ग मार्गी ॥ नाना इष्ट उपासा ॥
नाना ज्ञानी ज्ञान है ॥ तिर्गुणमें भ्यासा ॥ ७ ॥
सर्व भेद माया भई ॥ भावाभाव विकारा ॥
ब्रह्म अचल निरलेपहे ॥ निशिदिन एक सारा ॥ ८ ॥
अस्ती भाती प्रिये सिन्धुमें ॥ माया कहां पावे ॥
ब्रह्म सदा साक्षात है ॥ आवे नाहि जावे ॥ ९ ॥
गूढ गति अति ब्रह्मकी ॥ नेती निगम कहावे ॥
उमाराम आतम अखे ॥ आपही लखे लखावे ॥ १० ॥ १२९ ॥

राग प्रभाती ।

यो निरणा निज स्वरूपका ॥ निज जाण जणाई ॥
निज ज्ञानी निश्चे कथा ॥ निज पारख पाई ॥ टेर ॥
परम यथार्थ ओलख्या ॥ परमातम देवा ॥
जाका अर्थ अज्ञाद है ॥ शो भाखूं भेवा ॥ १ ॥
नहिं छाने नहिं जहारहै ॥ आतम अविनासी ॥
नहीं आगा पीछा नहीं ॥ परिपूर्ण प्रकाशी ॥ २ ॥
अरध ऊरध नाहिं बीच है ॥ खोया नाहिं पाया ॥
निश्चल पद नित प्राप्ति ॥ ज्यूंका त्यू थाया ॥ ३ ॥
नहीं वा जोग विजोग है ॥ नहीं वां जाण अजाणी ॥
नाहिं विरक्त नाहिं रागहै ॥ निकलंक निरवाणो ॥ ४ ॥

लघु दीर्घ कोउ वां नही ॥ नहीं कोई झूठ न साचा ॥
नहीं विक्षेप एकाग्र ॥ नहिं स्वामी नाहिं दासा ॥ ५ ॥
नहीं वां च्यारूं अवस्था ॥ देह विदेह न कोई ॥
पांच कोश नहिं भूमिका ॥ चेतन ब्रह्म सोई ॥ ६ ॥
जहां शास्त्र नहिं ज्ञान है ॥ नहिं कोइ सार असारा ॥
चऊं वाणी खाणी नहीं ॥ पारब्रह्म अपारा ॥ ७ ॥
स्वास उस्वासा वां नहीं ॥ नही सफंद निसफदा ॥
शुद्ध अद्वैत निशंक है ॥ नहीं खुल्या नहीं बंदा ॥ ८ ॥
कारण कारज वां नहीं ॥ नहीं अधर नहिं धरता ॥
उमाराम शुद्ध स्वरूप है ॥ नहि कोइ करता अकरता॥९॥१३०

पद राग ।

साधो भाई हमहीं अपार अचाई ॥ शब्द अतीत शब्दनहिं पहुँचे ॥
जाण हमारी आई ॥ टेर ॥
हमही सुते खडा किया मनकूं ॥ मेरी सता कर फोरा ॥
ता मन मांहें करी बहु सृष्टी ॥ कहां सोरा कहां दोरा ॥ १ ॥
पुण्यकियांतें स्वर्ग सुख भोगे ॥ पापांते नर्क सिधाया ॥
पुण्य पाप कारण सुख दुखका ॥ ये मन मांये थाया ॥ २ ॥
सता हमारी सब दिखलावे ॥ सवी भावना सारे ॥
बाहर भीतर सता विराजे ॥ नहि जीते नहिं हारे ॥ ३ ॥
मन संसार कल्पना मिथ्या ॥ सता हमारी साची ॥
हम अरु सता सदा एक सारा ॥ निश्चल थया अवाची ॥ ४ ॥
भाव अभाव नही मेरेमें ॥ ग्रहण त्याग नहिं कोई ॥

नहि कोइ करता नही अकरता॥ उमाराम है सोई ॥५॥१३१॥

पद राग।

साधो भाई पलटा अजब बताया॥ लखे संत पलटांका मेहरम ॥
सो सत् चेतन थाया॥ टेर ॥
चेतन सुते फोरणा फोरी॥ ज्यांमे पलट बणाया ॥
पलट दिखाय आप नहिं पलटचा॥ फुरणा परे रहवाया॥ १ ॥
पलटा विधिनिपेधही पलटा॥ पलटा यो दोउं नाहीं ॥
पलटांकूं परखे निरपलटी॥ सदा सुचेत गुसांई ॥ २ ॥
नहि कोई ऊंचा नहिं कोई नीचा॥ दशूं दिशा नहि कोई ॥
नहि कोइ पलट अपलट न पलटा॥ जाणे चेतन सोई ॥ ३ ॥
सत् विचार किया पलटांका॥ राई वाक नहि कोई ॥
अपणा आप कबूं नहिं पलटचा॥ उमारामहै सोई॥४॥१३२॥

पद राग।

साधो भाई निराकार निरधारा॥निज स्वरूप निरलेप सदाई॥
अनुभव वचन उचारा॥ टेर ॥
अकथ अमान आतमा चेतन ॥ आपोई आप अपारा ॥
नही ज्यां व्यापक नही अव्यापक॥नहीं ज्यां द्वैत लिगारा ॥ १ ॥
वां कोई तीन लोक नहिं तृष्णा॥ नांहिं मन माया हंकारा ॥
ध्याता ध्यान ध्येतां नाही॥ अध्ये स्वरूप हमारा ॥ २ ॥
वां नहिं बंध मोक्ष नहि गुरू शिष्य॥नहिं आश्रम वर्ण व्यवहारा॥
पुण्य पाप सुख दुख तां नाहीं॥ नहीं ज्यां तम उजियारा ॥३॥

ज्यां तो नहीं अधरता धरता ॥ नहीं ज्यां गुप्त जहारा ॥
उमाराम अखे अविनासी ॥ आपही जाणणहारा ॥४॥१३३॥

पद राग ।

साधो भाई अनिरवाच मम सोई ॥ दरशन दृश्य नहीं ज्यां द्रष्टा॥
अप्रमेय निरभोई ॥ टेर ॥
भावाभाव अभावकूं परेहै ॥ आतम तत्त्व अनासी ॥
दृश्यादृश्य अदृश्य न ज्यामे ॥ निराभास अविनासी ॥ १ ॥
जोग विजोग संयोग न ज्यामें ॥ नहीं एक नहिं दोई ॥
ज्ञानी मूढ गुरू नहिं चेला ॥ है ज्यूंका त्यूं सोई ॥ २ ॥
उत्पती थिति लय तहां नाहीं ॥ नही न्यून विशेष समाना ॥
द्वैत अद्वैत तहां कछु नाहिं ॥ निज स्वरूप निरवाना ॥ ३ ॥
वां सगुण निर्गुण नहि कोई ॥ नहिं अकार निराकारा ॥
विश्व अरु तैजस प्राज्ञ तहां नहिं॥नहीं ज्यां सार असारा ॥ ४ ॥
वनानाथ गुरू कोशां अतीत है ॥ आपोई आप रहवाया ॥
उमाराम सोई है चेतन ॥ अमल अछेद अजाया ॥५॥१३४॥

रागआसा ।

साधो भाई निज प्रत्यक्ष परवाण॥करी पिछाण आप आपीकी॥
आप जाणरया जाणा ॥ टेर ॥
वेदांतकी रमझ बताऊं ॥ तुरीया अतीत है ज्ञाना ॥
न्यून विशेष समानं न ज्यामें ॥ निर्विशेष निरवाना ॥ १ ॥
जाग्रत स्वप्न सुषुपत- तुरीये ॥ लखूं अवस्था च्यारूं ॥

है ज्यूंका त्यूं कहूं निवेडा ॥ अनुभव उक्त उचारूं ॥ २ ॥
पनरे तत् जाग्रत अस्थूला ॥ वरतत सकल शरीरा ॥
सब इन्द्रियांके साव अलूझ्या ॥ भुगत रया विप खीरा ॥ ३ ॥
नव तत्त्व स्वप्न भटकता डोले ॥ सूक्ष्म शरीरही धारा ॥
जाग्रत प्रपंच स्वप्नमें वर्ते ॥ सुख दुख गिरया अपारा ॥ ४ ॥
जाग्रत् स्वप्न मिटया दोनूंई ॥ सपुपतीके माईं ॥
अप्रमाण समान सदाई ॥ हरप शोक नहिं काई ॥ ५ ॥
तुरीये आदि अनादू चेतन ॥ आपोई आप हजूरा ॥
सबहीमे इकसार विराजे ॥ तुरीये निकलंक नूरा ॥ ६ ॥
च्यारूं अवस्था परे परमपद ॥ द्वैत अद्वैत न कोई ॥
स्वप्रकाश अपार अक्रिय ॥ उमाराम है सोई ॥ ७ ॥ १३७ ॥

राग आसा ।

साधो भाई आतम ज्ञान बताया॥ च्यारूं मुखका किया निवेडा॥
है ज्यूं कह दरसाया ॥ टेर ॥
वे मुख जुगत मुक्त नहिं दरसे ॥ वाद विवाद हलाया ॥
दुरमत धार पडया भव माहीं ॥ विपे रस मांय समाया ॥ १ ॥
मन मुख मान लिया आपेकूं ॥ सत्यासत्य कहाया ॥
करता कलेह कल्पना मनकी ॥ मन कल्पत ज्यूं छाया ॥ २ ॥
गुरू मुख गोप दरसीया प्रगट ॥ ज्ञान गूझ ठहराया ॥
समझ निरंतर भेद मिटाया ॥ तन मन लगे न दाया ॥ ३ ॥
निज मुख आतमहैं निरद्वंद्वी ॥ सब व्यापक निरदाया ॥
निरभौ निरालंभ निरबंधण ॥ नहिं कोई गया न आया ॥ ४ ॥

सुखा अतीत चेतन निरमुखहै॥ सत् चिद् आनंद अजाया ॥
उमाराम सोई निरवाणी ॥ निरउपाधि निरमाया ॥५॥१३८॥

राग आसा ।

साधो भाई यह अनुभौ निरभोजी॥ अनआतम आतमपरमातम॥
कर निरणै कही सोजी ॥ टेर ॥

अन आतम आतम परमातम ॥ तिहुं निरणै कह दाखूं ॥
एक नीरमे तीन भावकर ॥ है ज्यूं की त्यूं भाखूं ॥ १ ॥
इच्छा आदि अनातम कहिये ॥ ज्यूं पर्वत हिमाला ॥
न्यून विशेष समान अन आतम ॥ मूल अज्ञान दिखाला ॥२॥
महा दरियाव पाल विन पूरा ॥ निरबंध सदा अथाया ॥
यूं परमातम सुते प्रकाशी ॥ आपोई आप रहवाया ॥ ३ ॥
महा हेमाला महा समन्दके ॥ बीच नदी महा धारा ॥
यूं अन आतम यूं परमातम ॥ आतम मध्य विचारा ॥ ४ ॥
हेमाला ज्यू हे अन आतम ॥ परमातम ज्यूं दरिया ॥
महा नदी ज्यूं आतम कहिये ॥ आप चेतन सब भरिया ॥ ५ ॥
सलिता समन्द अनादि एक रस ॥ नहीं हेमाला वांई ॥
यूं आतम परमातम एकही ॥ ज्यां अन आतम नांई ॥ ६ ॥
तूं तत असी नहीं ता मांही ॥ नही ज्यां रूप अरूपा ॥
उमाराम अखे अविनासी ॥ चेतन शुद्ध स्वरूपा ॥ ७ ॥ १३९॥

राग आसा ।

साधो भाई योई ज्ञान निरवाणा ॥ अपणा आप लखेआ सोजी॥
प्रत्यक्षही परवाणा ॥ टेर ॥

चर्मदृष्टि अरु दिव्य दृष्टिहै ॥ समदृष्टी तिहुं जाणा ॥
केवल ज्ञान दिष्ट निज चौथी ॥ भिन्न भिन्न कहूं पिछाणा ॥१॥
तरु जर दृष्टी सर्पकी दृष्टी ॥ दृष्टि पहुमी दरारा ॥
रज्जू दृष्ट परम प्रकाशी ॥ अनुभव खोज विचारा ॥ २ ॥
तरु जर दृष्ट ज्यूंई सब जाग्रत ॥ वर्ते सकल व्यवहारा ॥
पाप पुण्यकूं भुगते प्रत्यक्ष ॥ यह चर्म दृष्ट निहारा ॥ ३ ॥
सर्प दृष्ट ज्यूं स्वप्न शरीरा ॥ मन मंनण भरमाणा ॥
ऊंच अरु नीच मानियां बहुविध ॥ यह दिव्यदृष्टि बखाणा ॥४॥
पहुमी दरार दृष्ट ज्यूं सुपोपत ॥ नित समान रहाई ॥
जाग्रत स्वप्न दोनूं ज्यां खूटा ॥ सम दृष्टीहै याही ॥ ५ ॥
रज्जू दृष्ट ज्यूं चेतन तुरीये ॥ चम सम दिव्य दिखाया ॥
तिहूं दृष्टतें आप निरंतर ॥ निज दृष्टी सोई थाया ॥ ६ ॥
तीन दृष्टिमें हाण लाभहै ॥ एक एकके मांई ॥
निज दृष्टी चेतन ज्यूं का त्यूं ॥ तीन दृष्ट ज्यां नांई ॥ ७ ॥
तुरीये है सोई तुरीये अतितंग ॥ दृष्ट अदृष्ट न ज्यांई ॥
उभाराम सोई शुद्ध चेतन ॥ ॥ सुते प्रकाशी सांई ॥ ८ ॥ १४० ॥

राग आसा ।

साधो भाई चेतन जाणण हारा ॥ चेत अचेत चेतावे चेतन ॥
आप दोईतें न्यारा ॥ टेर ॥
दार्ष्टान्त दृष्टान्त बताऊं ॥ है ज्यूं कर निरधारा ॥
दार्ष्टान्त निराकार निरंतर ॥ है दृष्टान्त अकारा ॥ १ ॥
रस अरु खांड खिलूणा तिर्गुण ॥ गुणा अतीत मिठीयासा ॥

जाग्रत स्वप्न सुषुपत ऐसे ॥ तुरीयेते तिहुं भ्यासा ॥ २ ॥
स्वप्न खांड खिलूणा जाग्रत ॥ सुषुपती रसधारा ॥
तुरीये मिठास सबमें साखी ॥ आर पार एक सारा ॥ ३ ॥
रस विना न है खांड खिलूणा ॥ ख्याल खांड रस मांई ॥
यूं सुषुपततें स्वप्न जाग्रत ॥ तिहुं तुरीयेमें नांई ॥ ४ ॥
तुरीये चेतन नित निरबंधण ॥ निरालेप अविकारा ॥
सुते प्रकाश आदि अविनाशी ॥ नाहिं हलका नाहिं भारा ॥ ५ ॥
ख्याल खांड रस मिठास च्यारूं ॥ रसणा आरसमे खूटा ॥
अवस्था अतीत आतमा चेतन ॥ भाव अभाव ज्यां झूठा ॥ ६ ॥
गुण अरु गुणा अतीत न ज्यामें ॥ नहिं हेती नेती वाणी ॥
उमाराम सोई शुद्ध चेतन ॥ कही प्रत्यक्षही निरवाणी॥७॥१४१॥

राग आसा ।

साधो भाई यह निश्चै निरदाई ॥ वाच अवाच लगे नहिं कहणी ॥
अपणा आप रहवाई ॥ टेर ॥

सत सुख परम प्रकाश सनातन ॥ शुद्ध स्वरूप मम सोई ॥
लाग अलाग अशुद्ध न शुद्धा ॥ ज्यां नहिं यह वह कोई ॥ १ ॥
ज्ञान अज्ञान विज्ञान न वांई ॥ नहिं कोई जोत अजोता ॥
श्रोता अरु वक्ता ज्यां नांई ॥ नहि निरभौ नहिं भोता ॥ २ ॥
नहि ज्यां उत्तम मध्यम कनिष्ठा ॥ नहिं कामी निष्कामी ॥
अनुलोम प्रतिलोम न कोई ॥ नहीं ज्यां नाम अनामी ॥ ३ ॥
वां तो बुद्धि बोध न कोई ॥ नहीं तिर्गुण विस्तारा ॥
ईश्वर जीव ब्रह्म ज्यां नाई ॥ नहिं कोई पार अपारा ॥ ४ ॥

कहां अन आतम आतम परमातम ॥ कहां बंध निरबंधा ॥
उमाराम निजानन्द सोई ॥ नित चेतन निरफंदा ॥५॥ १४२॥

रागआसा।

साधो भाई सच्चिदानन्द सुखदाई ॥ योहि सिद्धान्त वेद संत वर्णे॥
अवस्था अतीत रहवाई ॥ टेर ॥
आतम अखे अदाय अथापं ॥ नहि छूटा नाहि ग्रिया ॥
चेताचेत अचेतन ज्यामे ॥ स्वयं स्वरूप सधरिया ॥ १ ॥
वां तो शब्द अशब्द न कोई ॥ नाहि रीता नाहिं भारिया ॥
ज्यां नाहि चिन्ता नही अचिन्ता ॥ नहिं सूका नाहिं हरिया ॥२॥
गिणती अगिणती उवां कछु नाही ॥ नहिं जीवत नहि मरिया ॥
ज्यां नाहि करणा नहीं अकरणा ॥ नित चेतन निष्प्रिया ॥ ३॥
वां तो प्रमाण प्रमे नहि परमाता ॥ नहिं डूबा नाहि तिरिया ॥
सारासार बुद्धि ज्यां नाहीं ॥ नहीं अधर नहिं धारिया ॥ ४ ॥
देखण सुणण कहण अरु जाणण ॥ सब आतममे गलिया ॥
अनुभौ स्वरूपउमाराम द्रष्टा॥नहिंन्यारा नाहिं मिलिया५॥१४३॥

राग आसा।

साधो भाई आ चेतनकी सोजी॥ अपणा आप मिट्या नाहिं हुवा॥
नहीं एक नहिं दोजी ॥ टेर ॥
प्रगटसूं प्रगट गुप्तसूं गुप्ता ॥ निज स्वरूप निरमुक्ता ॥
प्रगट गुप्त दोऊंको द्रष्टा ॥ आप प्रगट नहिं गुप्ता ॥ १ ॥
चेतन सदा परम प्रकाशी ॥ ज्यां नहिं भोगता अभोगता ॥

वां नहिं प्रोक्ष अप्रोक्ष ॥ नहीं दीर्घ नाहिं लघुता ॥ २ ॥
ज्यां तो नहीं अविनासी नासी ॥ नहिं प्रात नहि हाणी ॥
परमार्थ स्वार्थ ज्यां नांई ॥ नहिं कोइ जाण अजाणी ॥ ३ ॥
तां नहिं किंचिन नहीं आकिंचन ॥ शिवशक्ती तां नांई ॥
अगम अरु निगम दोऊं कहथाकी ॥ अव्यय चेतन सांई ॥४॥
सर्वातीत अलाग आतमा ॥ निजानंद निरमाया ॥
उमाराम सोई नित चेतन ॥ प्रत्यक्ष कह दरसाया ॥५ ॥१४४॥

राग आसा ।

साधो भाई आ चेतनकी जाणा ॥ प्रत्यक्षही निरणै कह दाखी ॥
आई जाण निरवाणा ॥ **टेर** ॥

तीनूं भाव चेतावे चेतन ॥ आप तिहूंतें न्यारा ॥
अज कूटस्थ अलागी द्रष्टा ॥ सोई जाणण हारा ॥ १ ॥
अब यह तीनूं भाव बतांऊं ॥ रती फरक नहिं राखूं ॥
यह निश्चै निरलेप निरंतर ॥ अनुभव उक्ती भाखूं ॥ २ ॥
प्रथम भाव कहीजे हेती ॥ द्वितीय कहीये नेती ॥
तृतीये भाव कहीजे योंही ॥ नहिं नेती नहिं हेती ॥ ३ ॥
कर्म उपासना ज्ञान तीनूंही ॥ आ हेती ठहराई ॥
जाग्रत कर्म उपासना स्वप्न ॥ ज्ञान सषुपती गाई ॥ ४ ॥
हेती है सोई भइ नेती ॥ हेती रही न काई ॥
सो है नेती नही कोइ हेती ॥ आ नेती कह थाई ॥ ५ ॥
हेती नही नेती नाहीं ॥ महा निषेध आ सोजी ॥
ज्यूं होती ज्यूंई करी निरणै ॥ खोज बताया खोजी ॥ ६ ॥

विधिनिषेध निपेध न विधि ॥ नहिं चेतनके मांई ॥
आपोई आप अवर नहिं दूजा ॥ निरविभाग निज सांई ॥ ७ ॥
सर्वातीत निजानन्द चेतन ॥ नित निरमल निरभोई ॥
परिपूर्ण प्रकाश परम पद ॥ उमाराम है सोई ॥ ८ ॥ १४५ ॥

राग आसा ।

साधो भाई चेतन अमित अथाई ॥ चेतनकी चेतनकूं मालुम ॥
चेतन जाणे आई ॥ टेर ॥
निकलंक निरातंक निरबंधण ॥ निरद्वन्द्वी निरमाया ॥
अणघड़ अलख अजूणी चेतन ॥ अखे अनंत अजाया ॥ १ ॥
चेतन वचन दिखावे च्यारूं ॥ सोई परखण हारा ॥
चहूं वचनमें आप न आवे ॥ रहत सदाई न्यारा ॥ २ ॥
आतम ज्ञानी आप आतमा ॥ शुद्ध स्वरूप निज ज्ञाना ॥
सो च्यारांका निरणा भाखे ॥ जुदा जुदा दे स्याना ॥ ३ ॥
है में नहीं नहीं में हैई ॥ हैमें नहीं समाया ॥
नहींके मांय हैहै सबही ॥ प्रथम वचन बताया ॥ ४ ॥
हैके मांय नहीं कां पावे ॥ नही में है नहिं कोई ॥
इनके विरोध रवी रजनी ज्यूं ॥ दूजा वायक योई ॥ ५ ॥
हैभी हैई नहींभी हैई ॥ यह दोनूं है थाया ॥
इनका मेहरम कहिजे योई ॥ वचन तीसरा गाया ॥ ६ ॥
है सोइ नहीं नहि सोई नांई ॥ महा नहीं योई वखाणी ॥
चौथा वचन बताया हैज्यूं ॥ आतमज्ञानी छाणी ॥ ७ ॥
वचना अतीत विराज्या चेतन ॥ ज्यां चहुं वचन विलाणी ॥
उमाराम आपणा आपही ॥ नित चेतन निरवाणी ॥८॥१४६॥

इति श्रीउमारामजीमहाराजकृतवाणियाँ सम्पूर्ण ॥

इति

श्रीउमारामजी महाराजकृत-

वाणियाँ समाप्त।



॥ श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः ॥

श्रीसच्चिदानन्दाय नमः ।

अथ श्रीउमारामजीमहाराजकृत-
अनुभवप्रकाशप्रारम्भः ।

दोहा-छन्द ।

अनुभवस्वरूप अनन्त अज, पारब्रह्म निज सोय ॥
जिहें जाण्या जग है नहीं, बिन जाण्या जग होय ॥ १ ॥
पारब्रह्म परमात्मा, सत् चिद् आनँदरूप ॥
सो अनुभव उर प्रगट्यो, नमो अखंड अनूप ॥ २ ॥

छन्द-छप्पय ।

नमो ब्रह्म गुरू संत, देह वाणी अरु मनतें ।
गुरू दियो निज ज्ञान, परख पाई संतनतें ॥
अचल अखंड अनंत । ओलख्यो आतम साँई ॥
निराकार निरलेप ॥ अजनमा आदि गुसाँई ॥

गुरू बराबर विश्वमें। हुवो न होसी है अबै॥
उमाराम वंदन कियां। मिटे भर्म संशय सबै॥ ३॥
गुरू वनानाथ उरधार। अवल अक्षर गुरू साचा॥
जगत् जाल अज्ञान। जाणकर तजीया काचा॥
पूर्व उदे आंकूर। ज्ञान सूरज प्रकाशा॥
कले कल्पना तिमिर। भर्मका भयाज नाशा॥
उमाराम सत्त् सत्गुरू। कही वेद सन्त वाचा॥
गुरूवनानाथउरधार। अवलअक्षरगुरूसाचा॥४॥

कुंडलिया।

वनानाथ सत्गुरूके चरणे। कहा करूं बकशीश॥
जेती चीज ब्रह्मंडमें। मिथ्या विश्वा बीस॥
मिथ्या विश्वा बीस। सत्त सत्त गुरूहें आपू॥
गुणातीत अरूप। नहीं ज्यां तिर्गुण तापू॥
उमाराम सत्सत् गुरू। ईशनहूके ईश॥
वनानाथ सद्गुरूके चरणे। कहा करूं बकशीश॥ ५॥
बहुत जन्मकी भूलकूं। पलमें दी गुरू टाल॥
तिमिर मिट्या तड़का भया। दरस्या निज अकाल॥
दरस्या निज अकाल। सोई समर्थ सत् जाणा॥
अब दरसे नहिं और। आपई है निरवाणा॥
उमाराम् सतगुरू बिना। मिटे नहीं जमजाल॥
बहुत जन्मकी भूलकूं। पलमें दी गुरू टाल॥ ६॥
गुरू वनानाथ निर्भय निज पूरा। वन वस्ती इकसार॥

शुद्ध स्वरूपी सकलमें। लिपे न कोउ विकार॥
लिपे न कोउ विकार। गगन ज्यूं सदा असंगी॥
आदि मध्य नहिं अंत। अनंत अनूप अभंगी॥
सत् चेतन आनन्द गुरू। कही उमाराम विचार॥
गुरू वनानाथ निरभय निज पूरा। वन वस्तीइकसार ॥७॥
गुरू वनानाथ निरबंधन सांई। सत् चिद् आनॅद अभंग॥
ज्यूं नभ अन्दर बाहर है। यूं गुरू सबके संग॥
यूं गुरू सबके संग। रंग बेरंगी थाया।
फटिकमणी ज्यूं फर्क। अज कूटस्थ अजाया॥
उमाराम गुरू निज चेतन। निरमाया निरअंग॥
गुरूवनानाथनिर्बंधन सांई।सत्चिद् आनन्द अभंग॥८॥
दातारां दातार गुरू। शिष्य कहिये निजभक्ता॥
शिष्य हुवा सतगुरूके सन्मुख।मिटयाअज्ञान रु अज्ञता॥
मिटया अज्ञान रु अज्ञता। आपके मायें मिलाया॥
रती न राख्या फेर। आप सरीसा ही थाया॥
वनानाथ गुरू शुद्ध स्वरूपा। उमाराम सोई लखता॥
दातारां दातार गुरू। शिष्य कहिये निज भक्ता॥ ९॥
धन्य सतगुरू दीदारकूं। दरशन दिया दयाल॥
देह इन्द्रयां मन बुद्धि परे। निरखत भया निहाल॥
निरखत भया निहाल। स्वच्छन्द निजानन्द नित्यं॥
नहीं द्वंद ज्यां कोय। अनन्त स्वरूपा सत्यं॥
सत् सतगुरू सत् शिष्यहे। सत्का योही स्वाल॥

धन्य सतगुरू दीदारकूं । दरशन दिया दयाल ॥ १० ॥
वनानाथ गुरू अभै अगोचर । पारब्रह्म निरवाण ॥
उतपति थिति लय तहां नही । आपोई आप पिछाण ॥
आपोई आप पिछाण । अमल अणभंग रहवाया ॥
अप्रमेय अद्वैत । द्वैतका लेश न पाया ॥
उमाराम चेतन है । गुरू सोई शिष्य जाण ॥
वनानाथ गुरू अभै अगोचर । परब्रह्म निरवाण ॥११॥
शिंष्य सतगुरूकूं परखीया । निष्प्रिये निरमान ॥
सतसुख परमप्रकाश है । निरविभाग निज ज्ञान ॥
निरविभाग निज ज्ञान । आन मायाकी हाणी ॥
वेद कतेब पुरान । तहां नाहिं पहुंचे बानी ॥
उमाराम गुरू सोई चेला । जैसे किर्ण अरु भान ॥
शिष्य सतगुरूकूं परखीया । निष्प्रिये निरमान ॥ १२ ॥
गुरू मिल्या जब वेदा छूटा । सतकूं लिया पिछान ॥
साध सङ्गतसूं सधर ठहराना । कबूं डिगे नहि जान ॥
कबूं डिगे नहिं जान । अखे अद्वैत अलागी ॥
तहां कोई जीत न हार । नाहि सग्रह नाहिं त्यागी ॥
उमाराम अनुभौ प्रकास्या । रही न खेचातान ॥
गुरू मिल्याजब वेदा छूटा । सतकूं लिया पिछान ॥ १३ ॥
दोहा—त्रिलोकीमें है नहीं । सतगुरू जैसा और ॥
सत सतगुरू दूजा सब मिथ्या । यामें रत्ती न फौर १४ ॥

कुण्डलिया।

वनानाथ गुरू चेतन देवा। अखे अनूप अपार ॥
गुणातीत निर्लेप निरंतर। दूजा नहीं लिगार ॥
दूजा नहीं लिगार। सदा शुद्ध निकलंक सांई ॥
ज्ञाता ज्ञान रु ज्ञेय। तहां कोउ पावे नाई ॥
उमाराम सोई निरवाणी। स्वते प्रकाशण हार ॥
वनानाथ गुरू चेतन देवा। अखे अनूप अपार ॥ १५ ॥

दोहा–निज चेतन गुरू देवहै। द्वितीये लेश न कोय ॥
उमाराम शिष्य ऐसे जाणो। चेतन कहिये सोय ॥ १६ ॥

कुण्डलिया।

ब्रह्म चेतन गुरू चेतन है। चेतन सबही संत ॥
चेतनकूं चेतन लखे। शुद्ध अद्वैत अनंत ॥
शुद्ध अद्वैत अनंत। अंत तिहुंको नहिं आई ॥
नाम त्रियेहै एक। ब्रह्म गुरू संत एकराई ॥
उमाराम चेतन है सोइ। अनुभौ भाकंत ॥
ब्रह्म चेतन गुरू चेतनहै। चेतन सबही संत ॥१७॥

दोहा–शेष गणेश रु कवी मुनी। सब गुरूका गुन गाय॥
नारद शारद सरस्वती। कथ कथ कहत अथाय ॥ १८ ॥
गुरूदेवका अनंत गुन। कापे वरण्या जाय ॥
शिव विष्णु ब्रह्मादिले। खोज खोज थकजाय ॥ १९ ॥
ब्रह्म गुरू अरु संतकी। जिनपे कृपा होय ॥

पुनि कृपा अपणा आपकी । तव दरसे निज सोय ॥२०॥

इति श्रीअनुभवप्रकाश गुरुमहिमा निरूपणंनाम
प्रथमोअंग समाप्तम् ॥ १ ॥ २० ॥

दोहा–शब्द गुरूका सत् है । जो कोई लेवे धार ॥
तातें जग पासी मिटे । गुरू शब्द तत्सार ॥ १ ॥

चौपाई ।

भवसागरका दुख अति भारी । सब जीव पचे कर मारी थारी ॥
गुरू शब्द बिन यह नहि छूटे।गुरूशब्द लख्यां भवबंदण तूटे॥२॥
सत् शब्द निरमलहे अति । निरबंदण निरआसे गति ॥
सत् शब्द कोई लेवे विचार । सोई है भवसागर पार ॥ ३ ॥

दोहा–गुरू शब्द सुण कानमें । करे न कछू विचार ॥
विन विचार पावे नहीं । सत् शब्दकी सार ॥ ४ ॥
श्रवण मात्र गुरूसूं । सुणे शब्द शिष्यकोय ॥
नितप्रति करे विचार पुनि ॥ निरभै होवे सोय ॥ ५ ॥
शब्द गुरूका निरमला । लागतही मल जाय ॥
कर्म काट दूरा करे ॥ जन्म मरण मिटजाय ॥ ६ ॥
कर्मभूत भारी लग्या । बहुविध बंध्या विकार ॥
उमाराम सत् शब्दतें । तूटे कर्म आकार ॥ ७ ॥

चौपाई ।

शब्द विचारे सो बडभागी । ममता रंग वासना त्यागी ॥
वे जिन जगसूं रहत उदासी । निरभै पद पाया अविनाशी॥८॥

दोहा–जिनपाया सत् शब्दकूं । तिनकी मिटी उपाध ॥
निरभै विचरे जगतमें । वे धिन जगमें साध ॥ ९ ॥
सत् शब्द श्रद्धा कर लेह । तजै विषयकी वास ॥
जिनकूं है सत् प्राप्ति । सोई है निरवास ॥ १० ॥
शब्द सैल गुरू दिया । समझ श्रद्धा करलिया ॥
ले चढ्याशील संतोप । पकड मनकूं वश किया ॥११॥

रेखता ।

सत्का खडक गुरू देव तीक्षण दिया।लीया जू शिष्य श्रद्धा सूं सूरा॥
पांच पचीस गुण तीनकूं ढायके । भरमका मोरचा किया दूरा ॥
महा अज्ञानकी फौजकूं जीतके । किया अज्ञानकूं चकचूरा ॥
सत् चेतन आनन्द अखंड सु । पाईया पद निरवाण पूरा॥१२॥
गुरूका शब्द अछेद अदायहै । अलख अनूप नही अंत आया॥
तत् तिर्गुण ब्रह्मंड ज्यां नायहै । अखे निज नूर एक सार थाया॥
वाहूके रोमतें कोट ब्रह्मंड जू । होय मिटजाय क्षण भंग माया ॥
गुरूके प्रसाद उमाराम कहतहै।जाण सत्शब्द सुखधाम पाया१३॥

कुण्डलिया ।

सत् शब्द प्रकाशतें । चिन्त्या रही न काय ॥
राग द्वेप राती मिटी । ममता गई विलाय ॥
ममता गई विलाय । विप हंकारा भागा ॥
गुरू कृपा सतसङ्ग । रङ्ग वेरंगी लागा ॥

निराकार सत् शब्दहै । खंडित सब आकार ॥
उमाराम सत् शब्दमई । गुरू दीवी निजसार ॥ १४ ॥

इति श्रीअनुभवप्रकाशगुरूशब्द प्राप्तिनिरूपणंनाम
द्वितीयोअंग समाप्तम् ॥ २ ॥ २४ ॥

दोहा—निर्गुणभक्ती निरमली । लिया ज्ञान विचार ॥
तन मन वचनसूं ईशकूं । वदित वारंवार ॥ १ ॥

इन्दव छन्द ।

थावर जंगम जीव चराचर । एकही ईश्वर है सब माईं ॥
तन अरु मन वचनसूं । काहुकूं सोई भक्त दुखावत नाईं ॥
दूसरा भाव कबूं नहिं ठानत । जहां तहां देखत ईश, गुसांईं ॥
उमाहीराम कही समदृष्टिजू । ये निज ज्ञान भक्त कहवाईं ॥ २ ॥
भूमीके मांय कठोर शक्ति जू । नीरके माय द्रवता जू वोईं ॥
तेजके माय उष्ण शक्तिजू । वायुके माय सर्फंद जू होई ॥
व्योममें पोल शक्तिजू ईशकी । व्यापक ईश घटो घटसोई ॥
बाहर ईश्वर भीतर ईश्वर । ईश बिना नहिं रंचक कोई ॥ ३ ॥
चन्दकूं शीतलता दीवी ईश्वर । रवकूं तेज दियो इधकाई ॥
जिनदियो विधिकूं विधितापन । जिनदीवी शिवकू शिवताई ॥
जिन दीयो विष्णूपन विष्णुकूं । ईशनहूके वे ईश सदाई ॥
उमाही रामके घटमें प्रगट । सो निज ईश भक्ति चेताई ॥ ४ ॥

दोहा—ज्यां भक्ती ज्यां आप हैं । ईशनहूके ईश ॥
प्रगट गुप्त वेही प्रभु । निज केवल जगदीश ॥ ५ ॥

कुण्डलिया ।

बाजीगर बाजी करी । रचना रची अपार ॥
तीन गुणा आंटी पडी । भूलगया संसार ॥
भूलगया संसार । मोह मायाके माईं ॥
मिथ्याकूं लिया मान । आपकूं जाणत नाईं ॥
उमाराम् लखी आपकूं । पाई भक्ति विचार ॥
बाजीगर बाजी करी । रचना रची अपार ॥ ६ ॥
कारीगर कर्तारहै । हुंनर किया हजार ॥
हुंनरसूं न्यारा है कर्ता । ज्यूं भंजन रहित कुंभार ॥
ज्यूं भंजन रहित कुंभार । सबी हुंनर जड जाना ॥
चेतन ईश्वर आप । संत जाणे यो म्याना ॥
उमाराम समझ्या सही । सबमाहीं सब पार ॥
कारीगर कर्तारहै । हुंनर किया हजार ॥ ७ ॥
कर्ताकी कुदरत सबे । कुदरतमें कर्तार ॥
सर्वव्यापी ईश्वर विभु । यो निश्चै उर धार ॥
यो निश्चै उर धार । सोई है साहब साचा ॥
आदि अंत मध्य एक । कही सबही सन्त वाचा ॥
उमाराम निरभै भया । भक्ति ज्ञान विचार ॥
कर्ताकी कुदरत सबे । कुदरतमें कर्तार ॥ ८ ॥
रह साहब सबते परे । कोउ न पहुंचे दौड़ ॥
भक्ति बिना पहुंचे नहीं । आदि पुरुपकी ठौड ॥
आदि पुरुपकी ठौड । भक्ति ईश्वर उर आणों ॥

दूजा तजो जंजाल। जगत सुपना कर जाणों ॥
उमाराम ईश्वर में। मिटी जन्मकी खोड ॥
रह साहब सबतें परे। कोउ न पहुँचे दौड ॥ ९ ॥
तन मनकी ममता गई। समझ मिटाई हाण ॥
ज्यूं का त्यूं भरपूर है। कहीं न दीसे काण ॥
कहीं न दीसे काण। भेद भर्म रह्या न कोई ॥
बाहर भीतर एक। सत् ईश्वरहै सोई ॥
उमाराम ईश्वरकी कृपा। अनुभव प्रगट्या भाण ॥
तन मनकी ममता गई। समझ मिटाई हाण ॥ १० ॥
ईश्वर अगम अज्ञाद है। अनन्त शक्ति कर्तार ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश सब। ईश्वरके आधार ॥
ईश्वरके आधार। ईश निज चेतन सांई ॥
भक्ति पिछाणे ईश। भक्ति हरि अन्तर नांई ॥
उमाराम दरसिया। ईश्वरका दीदार ॥
ईश्वर अगम अज्ञाद है। अनन्त शक्ति कर्तार ॥ ११ ॥
देह इन्द्रियनका कर्मगुन। मुझकूं लगे न कोय ॥
ईश्वर चेतन ब्रह्म निज। मम स्वरूप है सोय ॥
मम स्वरूपहै सोय। ईशकर ईश उपासा।
द्वैत रह्या नहिं लेस। भक्त भगवत इकरासा ॥
उमाराम सोई ईश प्रभु। आपही आपकूं जोय ॥
देह इंद्रियनका कर्म गुन। मुझकूं लगे न कोय ॥ १२ ॥

चौपाई।

ापही रूप अरूप अपारा। आपही निकट रु दूर मँझारा॥
पही भक्त आप भगवंत। उमा आपही आप अनंत॥ १३॥
—भगवत माँई भक्त है। भक्त माँई भगवंत॥
ाम अनुभव कही। निर्गुण भक्ति सिधंत॥ १४॥
अनुभवप्रकाश ज्ञानभक्तिमिश्रितनिरूपणं नाम
ृतीयोअङ्ग समाप्तम्॥ ३॥ ४८॥

चौपाई।

कठिन जगजाल मोह माया। बँध्या सबी जीव पकड़ काया॥
अनहोती मानी कर होती। भूलगया निज आतम मोती॥ १॥
दोहा—बन्दर देख चुगो भुडकीमें। मूठी भीच बँधाना॥
यूं जीव बंध्या मोह माया भीतर। जन्म जन्म अलुजाना॥२॥
ज्यूं मरकट मूठी गही। मूरख छोड़े नाय॥
ऐसेही सब जीव जगतका। बंध्या विषै रस माय॥३॥

चौपाई।

बदरकूं बाजीगर जैसा। त्रिया नाच नचावे ऐसा॥
बहुविध नाच नचावे नारी। कह सन्त अरु वेद पुकारी॥ ४॥
लख चौरासीकी ये खाण। जन्म मरण सब याहीतें जाण॥
जन्म मरणका मेटो दुख। तजो सबी त्रियाका सुख॥ ५॥
नारीसा बंदण नाहि और। चिन्ता रहै आठही पौर॥
इनका रस जो त्यागे कोई। सो भव दुखते निर्भै होई॥ ६॥

नारीका रस सबतें मोटा । जीव बन्ध्या सब बडा छोटा ॥
येही जग वंदणका रस । ब्रह्मा इन्द्रादिक सबही बस ॥ ७ ॥
जो तनधारी जीव अनेक । मनुष्य देह सब माये विपेक ॥
और न जाणे सारासार । मनुष्य देहमें ब्रह्म विचार ॥ ८ ॥
यह देह पाय विषै हित करही।सो ब्रह्मद्वार चढ पीछाही पडही ॥
बहुऱ्यो औसर मिले न कबहूं । कहि उमाराम चेतहु अबहूं॥ ९ ॥
दोहा—ब्रह्म विचार घटमे प्रगट । सो नर देही सत् ॥
विषै मायामें रत रहे । वे पशु मनुष्य असत् ॥ १० ॥

कुण्डलिया ।

भेड चाल संसार है । एक एककी लार ॥
भिष्टापर भागी फिरे । कैसे होय उधार ॥
कैसे होय उधार । सार कोई सूझत नाही ॥
मोह ममताकी झाल । लगी तन मनके माहीं ॥
उमाराम सब जगत यूं । बेहत विषैकी धार ॥
भेड चाल संसार है । एकएककी लार ॥ ११ ॥
कर्मनके झोले पड्या । अन्तर रहत उदास ॥
माया ममता मोहनी । गिऱ्यो जीव दे पास ॥
गिऱ्यो जीवदे पास । भार भवसागर दीना ॥
भूत भविष्य वर्तमान । तीन पोरायत कीना ॥
उमाराम तीनां परे । रहत पुरुष निरवास ॥
कर्मनके झोले पड़्या । अन्तर रहत उदास ॥१२॥
कर्म कुत्ता को गत करे । भर्म भुसे अज्ञान ॥

जात एक जाणे नहीं। ऐसे भूले श्वान ॥
ऐसे भूले श्वान। दर्द दूजा कर पावे ॥
जैसे सकल जहांन। आप तज आपा ध्यावे ॥
आप भरचो आपा बिना। उमा ब्रह्म विज्ञान ॥
कर्म कुत्ता को गतकरे। भर्म भुस्से अज्ञान ॥१३॥

दोहा–श्वान मुकरका मेहलमें। भुस्स भुस्स मरे व्यर्थ ॥
यूं निज आतम भूलके। गिरचो जीव अनर्थ ॥१४॥
शुद्ध स्वरूपकूं भूलके। गिरचो जीव अज्ञान ॥
लखे न आपण आपकूं। व्यर्था पचे अजान ॥ १५ ॥
तजो जीव अज्ञानकूं। सत् आतम लो धार ॥
ताहि क्षण संशय मिटे। येही ज्ञान लो सार ॥ १६ ॥

सोरठा।

नरदेहीकूं पाय। सत् असत् नहिं जाणियो ॥
वृथा धरी नरकाय। विषैप्रवाह भवसिन्धु बह्यो ॥ १७॥
सोई जगमे वडभाग। भक्ति ज्ञान वैराग उर ॥
महा अज्ञानतें जाग। कही उमाराम चेतावणी ॥ १८॥

इति श्रीअनुभवप्रकाशसर्वज्ञचेतावणीनिरूपणंनाम
चतुर्थोअंग समाप्तम् ॥ ४ ॥ ६६ ॥

सोरठा।

जेती जीवा जूण। दीर्घ रोग सबके लग्यो ॥
लखे न अलख अजूण। बिन लखियां जन्मे मरे॥१॥

दोहा–रोग असाध्य अनादिको । कटे न आन उपाय ॥
निज गुरू सन्त वैद्यमिले । ताही क्षण मिटजाय ॥२॥
अस्त रु जड़ क्लेशका । लग्या सबीकूं रोग ॥
कुटक गुटक गुरुज्ञानकी । लै सोइ होय अरोग ॥३॥

चौपाई ।

सत् चिद् आनँद अखे स्वरूप । नित निरमल कूटस्थ अनूप ॥
यह औषधि गुरू देवे पाय । यातें रोग अनादी जाय ॥ ४ ॥
अमल अच्छेद अभङ्ग अनन्त । जाको नहीं आदि मध्य अन्त ॥
सो मम चेतन शुद्ध अवाच । गुरू ज्ञान औषधि यह साच ॥५॥
दोहा–औषध ले गुरू ज्ञानका । पचे जदे परमाण ॥
अस्त अज्ञ जड़ क्लेशका । मूल गमावे जाण ॥ ६ ॥
औषध ले रखे साधना । तहँ नहिं दुखका लेश ॥
आठ पहर सुख एकसा । परम सुखी रहे शेश ॥ ७ ॥
औषध साधन दोऊं सजे । तब पावे सुखसीर ॥
बिन साधन वेदन वधे । दिन दिन दूणी पीर ॥ ८॥
सत् सन्तोष विवेक पुनि । सत् सङ्गत निज सार ॥
या साधनतें प्राप्ति । शुद्ध स्वरूप अपार ॥ ९ ॥

चौपाई ।

साधन लियां ज्ञान तत् सार । विन साधन को ज्ञान असार ॥
अगम निगम शाखा कह दोई । उमा राम निश्चै कर जोई॥१०॥

गुरू ज्ञान औपधि निरवास । कर्म रोगका करे है नास ॥
तत्व आप स्वरूप कर लेवे । ह्वै कीट भृंगी कीट न रहवे ॥११॥

इति श्रीअनुभवप्रकाशगुरूज्ञानऔपाधिनिरूपणनाम
पंचमोअंग समातम् ॥ ५ ॥ ७७ ॥

सोरठा ।

ज्यूं शशि किरण प्रकाश । नाम त्रिये पुनि एक हैं ॥
एक बिना दोइ नाश । यूं संचित क्रिया प्रारब्ध॥१॥

दोहा—संचित शशि अमावस्या । क्रिये मान किर्ण होय ॥
प्रारब्ध प्रकाश ज्यूं । मिटे रवीमें सोय ॥ २ ॥

इन्दव छन्द ।

क्रिये जू मान संचितको कारण । संचित कारज कारण क्रिये ॥
संचित कारण प्रारब्ध को । प्रारब्धते संचित क्रिये ॥
एकको एक कारंज रु कारण । त्रिगुणी तापका संचाय त्रिये ॥
उमाहीराम उपाधिरहित जू । बोध स्वरूप सदा निष्प्रिये ॥ ३ ॥

कुण्डलिया ।

अधिदेव अध्यातमा । अधिभूत तिहुँ ताप ॥
ता माहीं सब जग जले । लीवी साच कर थाप ॥
लीवी साचकर थाप । भर्म यो कैसे छूटे ॥
होय निश्चै निज ज्ञान । तबी सारा दुख तूटे ॥
उमाराम तिहुँ ताप तज । परस्या आपो आप ॥
अधिदेव अध्यातमा । अधिभूत तिहुँताप ॥ ४ ॥

प्रारब्धतें सब जग चाले । प्रारब्धही करता ॥
प्रारब्धही भोग भोगता । प्रारब्धही धरता ॥
प्रारब्धही धरता । दुख सुख भाव संभाया ॥
ये शरीरका धर्म । आत्मा रह निरदाया ॥
उमाराम प्रत्यक्ष कही । आतम जाण अकरता ॥
प्रारब्धतें सबजगचाले । प्रारब्धही करता ॥ ५ ॥

दोहा–प्रारब्ध प्रत्यक्ष दिखलावे । संचित केरा साव ॥
क्रिया मान कारण हैं याको । तीनूं मान्या भाव ॥ ६ ॥
क्रिया मान कारणकूं मेटो । संचित रहे न कोय ॥
प्रारब्ध कहां पाइये । उमाराम कही जोय ॥ ७ ॥

इति श्रीअनुभवप्रकाशसंचितक्रिया प्रारब्धनिरूपणंनाम षष्ठोअंग समाप्तम् ॥ ६ ॥ ८४ ॥

दोहा–कर्म धर्म अरु शर्म धर्महै । आन धर्म यह तीन ॥
परमधर्म इनते परे । ले बडभागी चीन ॥ १ ॥
च्यार धर्मका दोय भागहै । स्वारथ अरु परमार्थ ॥
वेद कह भिन्न भिन्न मरम । ज्यूंका त्यूंही यथार्थ ॥ २ ॥
मृतक जन्म ब्याव बन्धू जाती । जुदाजुदा कर्म धारे ॥
दुख रु सुख कल्पना माने । ये कर्म धर्म उचारे ॥ ३ ॥
मांगण भाट ब्राह्मण स्वामी । पुत्री बहन मा तात ॥
अपणी लज्जा इनकूं पोखे । यह शर्म धर्मकी बात ॥४॥
सबी देवकी संख्या राखे । माने हाण रु लाभ ॥
हाण लाभ दोनूंकी पूजा । यह आन धर्मका जाव॥५॥

निरआपे साराकूं पोखे । षट्दर्शन इकसार ॥
यही धर्म परमार्थ आदू । पावे मोक्ष द्वार ॥ ६ ॥
साध सती परमार्थ झाले । स्वारथ धर्म विडारे ॥
परमधर्मतें अनन्त उधरिया । श्रुति संत पुकारे ॥७॥
स्वारथकूं सैंठा गह्या । परमारथ नहिं जोया ॥
उमाराम वे जीव अभागी । जुग जुग जन्म बिगोया॥८॥
परमारथ साचा गहे । स्वारथ देह मिटाय ॥
उमाराम उन सन्तकी । सहज मुक्ति होय जाय॥९॥
स्वारथमें सब जग बँध्या । हैं हुसियार समाया ॥
परमारथ हाथे नहीं । तातें भव दुख पाया ॥ १० ॥
सोरठा–सत्त परमारथ थरप । तजी स्वार्थ तन मनको ॥
सब ईश्वरकूं अरप । मुक्त स्वरूपी जे सदा ॥ ११ ॥
दोहा–स्वारथ धर्म बताया झूठा । परमारथ सत्त भाख्या ॥
अनुभौ छाण करी ज्यूंकी त्यूं । रती फरक नहिं राख्या॥१२॥
परमारथ स्वार्थका निश्चय । प्रगट कह्या पुकार ॥
उमाराम सत्‌ले परमारथ । स्वारथ दिया बिसार ॥ १३ ॥
इति श्रीअनुभवप्रकाशस्वार्थपरमार्थनिरूपणं नाम
सप्तमोअंग समाप्तम् ॥ ७ ॥ ९७ ॥

कुण्डलिया ।

बारे पंथ षट दरशन साधू । हिन्दू तुर्कले जान ॥
पखापखीमे मती बन्धो । कोऊ रखो न खेचातान॥
कोऊ रखो न खेंचातान । सकलको साहब एका ॥

प्रारब्धतें सब जग चाले। प्रारब्धही करता॥
प्रारब्धही भोग भोगता। प्रारब्धही धरता॥
प्रारब्धही धरता। दुख सुख भाव संभाया॥
ये शरीरका धर्म। आत्मा रह निरदाया॥
उमाराम प्रत्यक्ष कही। आतम जाण अकरता॥
प्रारब्धतें सबजगचाले। प्रारब्धही करता॥ ५॥

दोहा–प्रारब्ध प्रत्यक्ष दिखलावे। संचित केरा साव॥
क्रिया मान कारण है याको। तीनूं मान्या भाव॥ ६॥
क्रिया मान कारणकूं मेटो। संचित रहे न कोय॥
प्रारब्ध कहां पाइये। उमाराम कही जोय॥ ७॥

इति श्रीअनुभवप्रकाशसंचितक्रिया प्रारब्धनिरूपणंनाम
षष्ठोअंग समाप्तम्॥ ६॥ ८४॥

दोहा–कर्म धर्म अरु शर्म धर्महै। आन धर्म. यह तीन॥
परमधर्म इनतें परे। ले बडभागी चीन॥ १॥
च्यार धर्मका दोय भागहै। स्वारथ अरु परमार्थ॥
वेद कह भिन्न भिन्न मरम। ज्यूंका त्यूंही यथार्थ॥ २॥
मृतक जन्म व्याव बन्धू जाती। जुदाजुदा कर्म धारे॥
दुख रु सुख कल्पना माने। ये कर्म धर्म उचारे॥ ३॥
मांगण भाट ब्राह्मण स्वामी। पुत्री बहन मा तात॥
अपणी लज्जा इनकूं पोखे। यह शर्म धर्मकी बात॥४॥
सवी देवकी संख्या राखे। माने हाण रु लाभ॥
हाण लाभ दोनूंकी पूजा। यह आन धर्मका जाब॥५॥

निरआपे साराकूं पोखे । षट्दर्शन इकसार ॥
यही धर्म परमार्थ आदू । पावे मोक्ष द्वार ॥ ६ ॥
साध सती परमार्थ झाले । स्वारथ धर्म विडारे ॥
परमधर्मतें अनन्त उधरिया । श्रुति संत पुकारे ॥७॥
स्वारथकूं सैंठा गह्या । परमारथ नहि जोया ॥
उमाराम वे जीव अभागी । जुग जुग जन्म विगोया॥८॥
परमारथ साचा गहे । स्वारथ देह मिटाय ॥
उमाराम उन सन्तकी । सहज मुक्ति होय जाय ॥ ९ ॥
स्वारथमें सब जग बँध्या । है हुसियार समाया ॥
परमारथ हाथे नही । तातें भव दुख पाया ॥ १० ॥
सोरठा–सत् परमारथ थरप । तजी स्वार्थ तन मनको ॥
सब ईश्वरकूं अरप । मुक्त स्वरूपी जे सदा ॥ ११ ॥
दोहा–स्वारथ धर्म बताया झूठा । परमारथ सत् भाख्या ॥
अनुभौ छाण करी ज्यूंकी त्यूं । रती फरक नहिं राख्या॥ १२॥
परमारथ स्वार्थका निश्चय । प्रगट कह्या पुकार ॥
उमाराम सत्‌ले परमारथ । स्वारथ दिया बिसार ॥ १३ ॥
इति श्रीअनुभवप्रकाशस्वार्थपरमार्थनिरूपणं नाम
सप्तमोअंग समाप्तम् ॥ ७ ॥ ९७ ॥

कुण्डलिया ।

बारे पंथ पट दरशन साधू । हिन्दू तुर्कलो जान ॥
पखापखीमें मती बन्धो । कोऊ रखो न खेंचातान॥
कोऊ रखो न खेंचातान । सकलको साहब एका ॥

गर्क भन्यो निरपक्ष । अजाती अखण्ड अभको ॥
उमाराम समदृष्टि कही । ये समझो परवाण ॥
बारे पंथ षट दरशन साधू । हिन्दू तुर्कलोजान ॥ १ ॥
जब लग पखांपखीमें वन्ध्या । तबलग मिटेन हान ॥
कोउ काज सीझे नहीं । साधु करी पिछान ॥
साधू करी पिछान । पखापखी रखो न कोई ॥
परि पूरण निरपक्ष । लक्ष निश्चैकर जोई ॥
सब हितार्थ उमाराम । कही यथारथ जान ॥
जबलग पखापखीमें वन्ध्या । तबलग मिटे न हान २
श्रुति सन्त वेद कहताहै । साच झूठकी रीत ॥
पखापखी सब झूठहै । साच साहबसूं प्रीत ॥
साच साहबसूं प्रीत । करे सो सर्वज्ञ राखे ॥
येही आदू रीत । पलकभर झूठ न भाखे ॥
उमाराम लखकहतहै । आदि अन्तका गीत ॥
श्रुति सन्त वेद कहताहै । साच झूठकी रीत ॥ ३ ॥
पखापखीके भावतें । कारज ह्वै न कोय ॥
निरापक्ष सबमे हरि देखे । भला याहितें होय ॥
भला याहितें होय । भाव योही ततसारा ॥
श्रुति अरु स्मृति कहे । सन्त सब करत पुकारा ॥
उमाराम निरपक्ष पद । गुरु मुख लेसी जोय ॥
पखापखीके भावतें । कारज ह्वै न कोय ॥ ४ ॥
पक्ष अरु निरपक्षकी । है ज्यूं भाखी जाण ॥

पखापखी सब अस्तहै । निरपक्ष सतपिछाण ॥
निरपक्ष सत पिछाण । भाव दोनूं दरसाया ॥
पखापखीकूं त्याग । सत् निरपक्ष उर थाया ॥
उमाराम विचारके । निरपक्ष कियो छाण ॥
पक्ष अरु निरपक्षकी । है ज्यूं भाखी जाण ॥५॥
दोहा–निज स्वरूपका ज्ञान है । तब पक्ष रहे न कोय ॥
विना ज्ञान पक्ष ना मिटे । उमाराम कहि जोय॥६॥
इति श्रीअनुभवप्रकाश निरूपणंनाम अष्टमोअंग
समाप्तम् ॥ ८ ॥ १०३ ॥

सोरठा ।

कहणी एकहि होय ॥ वाचककी अरु लक्षकी ॥
परि निश्चय है दोय ॥ रवि रजनी ज्यूं आंतरो॥ १ ॥

कुंडलिया ।

वाचार्थ अरु लक्षार्थके । बहुत आंतरो होय ॥
रजनी ज्यूं वाचार्थ कहिये । लक्ष रवी ज्यूं जोय॥
लक्ष रवी ज्यूं जोय । रहत लियां वोही ठाढा ॥
वाचारथ नहिं रहत । अज्ञानमें जुडिया गाढा ॥
परमसुखी लक्षार्थ उमा । वाचारथ दुख सोय ॥
वाचार्थ अरु लक्षार्थके । बहुत आंतरो होय ॥ २ ॥
वाचार्थ बहु बातां करे । सुरत विषैमें लीन ॥
कोउ बातके राह न चाले । थोथी बातां कीन ॥

थोथी बातां कीन । बात लक्षार्थ जाने ॥
चले बातकी रीत । रीत बिन और न माने ॥
उमाराम लक्षार्थ सतहै । वाचारथ मत हीन ॥
वाचारथ बहु वातां करे । सुरत विषयमें लीन॥३॥

इन्दव छन्द ।

हंस बुगल जुगल स्वरूपमे । वाणी रु खाणीमे पारख होती ॥
बुगके नित उपाय अनर्थकी । मार मच्छी कर पेट भरोती ॥
हिंसा रहित सदा शुद्धकेवल । हंस चुगे अर्थानिज मोती ॥
हंस लक्षार्थ बैण अमोख । वाचक बुगकी कहणी है थोती ॥४॥

सोरठा ।

वाचक थोथा बोल ॥ निज पदमाहि थिति नही ॥
भरिया अर्थ अमोल ॥ लक्ष कह निज पद लियां ॥५॥

कुंडलिया ।

लक्षार्थकी खोड खुडावे । सीख बात वाचक ॥
सत् आत्माकूं चीन्या नाही । कबहुं न पावे जक॥
कबहुं न पावे जक । लक्ष ज्ञानी सुखदाई ॥
प्राप्ती परमानद । कल्पना रही न काई ॥
उमाराम उदय निज ज्ञाना ।अनुभव भाखी लक॥
लक्षार्थकी खोड़ खुड़ावे । सीख बात वाचक॥६॥

चौपाई ।

वाचकका निश्चयहै ऐसा । विन चितवन चिन्तामणि जैसा ॥

अनुभव चितवन लक्षार्थ । नितही प्राप्ती आत्म सत ॥ ७ ॥

दोहा ।

लक्षार्थ ज्ञानी सोई । तजी असार गहसार ॥
उमाराम यथार्थ जाने । नित्यानित्य विचार ॥ ८ ॥
वाचककी तोता ज्यं कहणी । बहुविध बात बणाय ॥
साच झूठ नहिं ओलखे । उदर भरणकी चाय ॥ ९ ॥

सोरठा ।

ज्यूं पंछी चंडूल । बोली बोले सबनकी ॥
निजस्वरूपकी भूल । यूं वाचक संसारमें ॥ १० ॥

दोहा ।

लक्षार्थकी नित थिति । शुद्ध स्वरूपके माय ॥
वाचार्थकी थिति विषयमें । मुक्ती पावे नाय ॥ ११ ॥

इति श्रीअनुभवप्रकाशवाचकलक्षनिरूपणं नाम
नवमोअंग समाप्तम् ॥ ९ ॥ ११४ ॥

दोहा ।

रह रहणी कहणी कहे । सोइ सन्त निज ज्ञानी ॥
बिन रहणी कहणी कहे ॥ पाखंडी अज्ञानी ॥ १ ॥

चौपाई ।

कहणीसूं रहणीहे न्यारी । सब सन्तां रहणीकूं धारी ॥
कहणी ज्यूं रजनीमें चमका । रहणी ज्यूं प्रकाश रवीका ॥ २ ॥

रहणी सो कहणीहे साची। बिन रहणी कहणी सब काची
चिन्तामणि ज्यूं रहणी सत्। कहणी कागर जाणे असत् ॥ ३

दोहा।

कहणी ज्यूं कागद कासीदी। तन दुख कटे न कोय ॥
रहणी हुण्डी वाल ज्यूं। शुद्ध सदा सुख सोय ॥ ४ ॥
रहणीकूं राजा ज्यूं समझो। बिन रहणी ज्यूं भंगी ॥
वो सारांका भिष्ठा बोरे। वे सब सुखका संगी ॥ ५ ॥
कहणी कह्या काज नहिं सीझे। बातां करो हजार ॥
तारांसूं रजनी नहिं जावे। यूं कहणी आसार ॥ ६ ॥
रहणी रह्या परमसुख पावे। दुख नहि रहे लिगार ॥
रवि माये रजनी नहिं जैसे। यूं रहणी तत्वसार ॥ ७ ॥

चौपाई।

रहणी कल्पवृक्षकी वाड। कहणी ज्यूं एरंडका झाड
मन वांछित आनंद रहणीतें। नहिं मिटे क्लेश कछू कहणीतें॥८

सोरठा।

कह कहणी दिनरात। अस्त रु जड क्लेश ॥
बिन रहणी नहिं पात। सत आनन्द ॥
रहणी रहे जु साद। सो सि
शिव विष्णु ब्रह्माद। वंछे

दोहा

सब सतां ।

रहरेणी कहणी कही । उमाराम यो साची ॥ ११ ॥
इति श्रीअनुभवप्रकाश रहणीकहणीनिरूपणं नाम
दशमोअंग समाप्तम् ॥ १० ॥ १२९ ॥

चौपाई ।

आशा तृष्णा चिन्ता नारी । ममता रोग बधावण हारी ॥
सुर नर असुर ब्रह्मादिक लागी । इनतें बचे साध वड़ भागी॥१॥
इनतें जन्म मरण आशंका । रंकही इन्द्र इन्द्र होय रंका ॥
भरम्या फिरे जगत सब जूणी । साधू मिटावे आवागूणी ॥ २॥
ममता रोग तजे जन सूरा । इच्छा सबी काटरहे दूरा ॥
सो साधू सुख माये सदाई । आवागवण कबूं नहिं आई ॥३॥
हूं तूं आपा रखे न मांई । सब घटमें देखे एक सांई ॥
हरष शोक व्यापे नहिं कोई । उमाराम निज साधू सोई ॥ ४ ॥

दोहा ।

हूं तू हरप शोक ज्या घटमे । सो घट भरचो विकार ॥
उमाराम उपाधीसवे । तजी सो साधू सार ॥ ५ ॥
साध छता काचा मता । नहिं तत्व वस्तुको भेद ॥
उमाराम कैसे कटे । जन्म मरणकी खेद ॥ ६ ॥
साध सोई विसरे नहीं । परम गुरूका भेद ॥
उमाराम लवलीन नित । सब कर्मनकूं छेद ॥ ७ ॥
मन आपा छूटा नहिं । कहा कथ्यो जिन ज्ञान ॥
लह्यो न शुद्ध स्वरूपकूं । तब लग होत अज्ञान ॥ ८ ॥

तन मनतें निरलेप है। सदा असंग विचार ॥
उमाराम संसारमें। सो साधूजन सार ॥ ९ ॥
मन आपा मानें नहिं। रखे नहीं कोउ आस ॥
उमाराम साधू सोई। सदा रहे निरवास ॥ १० ॥
मन मूडा है कालका। सब जग मन मुख माय ॥
सत् मूडाहै सन्तका। ज्यां मन पावे नाय ॥ ११ ॥
सत् मार्ग साधू चले। अखी वसाई धाम ॥
मिथ्या मार्ग जग चले। उपे खपे वे काम ॥ १२ ॥
नैणा निरमल वचन अमोलक। तनमन गलत सहे जू॥
निर अभिमानी संत जन। गुरूका ज्ञान गहे जू ॥ १३ ॥
पांच तीन पंट जीत। रीत समज्यां की योंई ॥
साधू सदा निष्काम। काम व्यापे नहिं कोई ॥ १४ ॥
साधू वोही सत् है। दुरमत दे खोय ॥
समदृष्टी आतम लखे। निज साधू है सोय ॥ १५ ॥
जब लग दृष्टी अज्ञकी। तबलग ज्ञान न जानी ॥
ज्ञान भया अज्ञ ना रहे। ज्यूं काष्ट अग्नि समानी ॥१६॥

चौपाई।

समझ्या सन्त अज्ञे नहि धारे। जैसे सर्प कंचरी डारे ॥
केवल सदा निरंतर सोई। नहि शत्रु मित्र जिनके कोई ॥ १७॥
ज्ञान सोई अज्ञान मिटावे ॥ ब्रह्म तिरण एक कर थावे ॥
सारामें सच्चिदानन्द जाणे ॥ उमाराम सोइ साधु बखाणे ॥ १८ ॥
अज्ञ जाणकूं मिथ्या माने ॥ सर्वज्ञ सदा सतकूं जाने ॥

सो साधू जगमें निरभोई ॥ अगम निगम यूं भाखे दोई ॥ १९ ॥

दोहा ।

अज्ञानीकी दिष्टमें । ऊंच नीचकी जाण ॥
केवल दृष्टी सन्तकी । सर्वज्ञ सत् पिछाण ॥ २० ॥

कुंडलिया ।

सत्पुरुषांकी रमझ न जाणे । करे उणारी होड ॥
तीन गुणामें खाय गुलेटा ॥ विषयमें डूबा डोड ॥
विषयमें डूबा डोड । संत षटगुणतें दूरा ॥
पारब्रह्म लवलीन । परमारथ भाखे पूरा ॥
उमाराम संत या जगमें । कहिये बंदी छोड़ ॥
सत्पुरुषोंकी रमझन जाणे । करे उणारी होड ॥ २१ ॥
सिंह सर्प ज्यूं जगत छेडियां । तहॉ होवे कछुहाण ॥
साधूकूं भल छेडिये । शुद्ध बतावे जाण ॥
शुद्ध बतावे जाण । अंतर वे रखे न काई ॥
सबी कर्म दे काट । दीखावे पूर्ण सांई ॥
उमाराम साधू या जगमें । जैसे प्रगट भाण ॥
सिंह सर्प ज्यूं जग छेडिया । तहां होवे कछु हाण ॥ २२ ॥

दोहा ।

उमाराम सन्त बहु दयालू । अधम उधारणहार ॥
परमारथकारणया जगमें । लियासंतअवतार ॥ २३ ॥
साधू पद निन्दे कोइ भोदू । जिनकूं ज्ञान न कोय ॥

तन मनतें निरलेप है । सदा असंग विचार ॥
उमाराम संसारमें । सो साधूजन सार ॥ ९ ॥
मन आपा माने नहिं । रखे नहीं कोउ आस ॥
उमाराम साधू सोई । सदा रहे निरवास ॥ १० ॥
मन मूडा है कालका । सब जग मन मुख माय ॥
सत् मूडाहे सन्तका । ज्यां मन पावे नाय ॥ ११ ॥
सत् मार्ग साधू चले । अखी वसाई धाम ॥
मिथ्या मार्ग जग चले । उपे खपे वे काम ॥ १२ ॥
नैणा निरमल वचन अमोलक । तनमन गलत सहे जू ॥
निर अभिमानी संत जन । गुरूका ज्ञान गहे जू ॥ १३ ॥
पांच तीन पंट जीत । रीत समज्यां की योई ॥
साधू सदा निष्काम । काम व्यापे नहिं कोई ॥ १४ ॥
साधू वोही सत् है । दुरमत दे खोय ॥
समदृष्टी आतम लखे । निज साधू है सोय ॥ १५ ॥
जब लग दृष्टी अज्ञकी । तबलग ज्ञान न जानी ॥
ज्ञान भया अज्ञ ना रहे । ज्यूं काष्ठ अग्नि समानी ॥१६॥

चौपाई ।

समझ्या सन्त अज्ञे नहि धारे । जैसे सर्प कंचरी डारे ॥
केवल सदा निरंतर सोई । नहि शत्रु मित्र जिनके कोई ॥ १७ ॥
ज्ञान सोई अज्ञान मिटावे ॥ ब्रह्म तिरण एक कर थावे ॥
सारामें सच्चिदानन्द जाणे ॥ उमाराम सोइ साधु बखाणे ॥ १८ ॥
अज्ञ जाणकूं मिथ्या माने ॥ सर्वज्ञ सदा सतकूं जाने ॥

सो साधू जगमे निरभोई ॥ अगम निगम यूं भाखे दोई ॥ १९ ॥

दोहा।

अज्ञानीकी दिष्टमें । ऊंच नीचकी जाण ॥
केवल दृष्टी सन्तकी । सर्वज्ञ सत् पिछाण ॥ २० ॥

कुंडलिया।

सत्पुरुषांकी रमझ न जाणे । करे उणारी होड ॥
तीन गुणामें खाय गुलेटा ॥ विषयमें डूबा डोड ॥
विषयमें डूबा डोड । संत षटगुणतें दूरा ॥
पारब्रह्म लवलीन । परमारथ भाखे पूरा ॥
उमाराम ,,संत या जगमें । कहिये बंदी छोड़ ॥
सत्पुरुषोंकी रमझन जाणे । करे उणारी होड ॥ २१ ॥
सिंह सर्प ज्यूं जगत छेडियां । तहाँ होवे कछुहाण ॥
साधूकूं भल छेडिये । शुद्ध बतावे जाण ॥
शुद्ध बतावे जाण । अंतर वे रखे न काई ॥
सबी कर्म दे काट । दीखावे पूर्ण सांई ॥
उमाराम साधू या जगमे । जैसे प्रगट भाण ॥
सिंह सर्प ज्यूं जग छेडिया । तहां होवे कछु हाण ॥ २२ ॥

दोहा।

उमाराम सन्त बहु धालू । अधम उधारणहार ॥
परमारथकारणया जगमें । लियासंतअवतार ॥ २३ ॥
साधू पद निन्दे कोइ भोदू । जिनकूं ज्ञान न कोय ॥

[illegible] ॥
[illegible] । [illegible] ॥
[illegible] । [illegible] ॥ २५ ॥

सोरठा ।

अनुभ आतमा सोइ । जातु सत चित स्वरूपमें ॥
नहीं उपाधी कोइ । अनुभव निश्चै करी ॥ २६ ॥

इति श्रीअनुभवप्रकाश साधुअसाधुलक्षणनिरूपणं नाम
एकादशो अंग समाप्तम् ॥ ११ ॥ १५० ॥

दोहा ।

करुणा मैत्री सुहृदता । पर उपकार हियेजु ॥
दांत रु शांत सुछंदता । शम दम साध लियेजु ॥ १ ॥

सोरठा ।

नित आतम आराम । निर्मल अचल अगाध मति ॥
निष्प्रिये निहकाम । कृपासिन्धु गंभीर अति ॥ २ ॥

दोहा ।

ज्ञान वैराग संतोष सत । शील साच सुधरम ॥
परम विवेकी भक्ति निज । वेत्ता वेद मरम ॥ ३ ॥
ज्ञाता अगम रु निगमका । अति प्रवीन सब बात ॥
असत तजी सत्में थिति ॥ लिपे नहीं निज गात ॥ ४ ॥
इन्द्रिये जीतन चिन्त नित । त्यागी महाविचार ॥

पट उरमी ते रहित है । जाणे सारासार ॥ ५ ॥
गुणातीत निरविकल्प जिन । सदा तृप्ति सुख भाय ॥
कोमल वचन दयालु ह्वै । कह वेद मुक्तिको राय ॥ ६ ॥
बोध स्वरूप विज्ञानतें । चिद जड़ ग्रन्थी तूटी ॥
कनक कामणी महाबली । नहिं सके साधुकूं लूटी ॥ ७ ॥
निर आशा निरमल सदा । नहिं राव रंककी चाय ॥
हाण लाभ सुख दुख सम । शत्रु मित्र एक भाय ॥ ८ ॥
कंचन काच रु अमृत विष । निंद्या अरु स्तुती ॥
ब्रह्मा आदि अरु कीटलू । सम दृष्टी एक सूती ॥ ९ ॥
महंत नहिं साधू जिसो । ब्रह्मंडमें कोय ॥
परिलघुता सबते रखे । अन्तर आतम जोय ॥ १० ॥

सोरठा ।

नख शिख सेती संत । पहरया आतम कवचकूं ॥
नहिं माया बाण लगंत । शूरवीर महन्तकूं ॥ ११ ॥
अमित अनूप अनंत । लक्षन सन्त महन्तके ॥
नहिं सके वेद ले अंत । उमाराम कछु कछु कही ॥ १२ ॥

इति श्रीअनुभवप्रकाशसाधूलक्षणनिरूपणंनाम
द्वादशोअंग समाप्तम् ॥ १२ ॥ १६२ ॥

सोरठा ।

नाना विधके भोग । इन्द्रादिक ब्रह्मादिके ॥
तज्या जाण यह रोग । तुच्छानंद सब जगतको ॥ १ ॥

दोहा ।

अति तीव्र वैराग ले। विषकूं दिया विडार ॥
तीन लोगका भोगकू । तजिया जाण असार ॥ २ ॥

कुंडलिया ।

क्या राजा क्या बादस्या । ब्रह्मा इन्द्र स्वर्गलोग ॥
याकूं मैं मानूं नहीं । झूठा इनका भोग ॥
झूठा इनका भोग। सबी मायाके माहीं ॥
छिनमें जाय विलाय। कवूं थिर रेवे नाहीं ॥
उमाराम आतम सुख पाया।यह सब त्याग्या रोग॥
क्या राजा क्या बादश्या।ब्रह्मा इन्द्र स्वर्ग लोग३॥
आतमवानं पदार्थ त्यागा। मोक्ष अर्थ धर्म काम ॥
नौ निद्धी चौईसूं सिद्धी। जाणी अल्प निकाम ॥
जाणी अल्प निकाम। कामना रही न काई ॥
नित तृप्ती वैराग। निजानन्द आनंद मांई ॥
उमाराम वैराग योई । कह रह्या संत तमाम ॥
आतमवान पदार्थ त्याग्या।मोक्ष अर्थ धर्म काम४ ॥
हद बेहद व्यवहारा त्यागा। त्याग्या हरष रु सोग ॥
बंदण मुक्त दोनूंकूं त्यागा । त्याग्या जोग विजोग॥
त्यागा जोग विजोग। भोगता भोग मिटाया ॥
सत् चेतन आनन्द। सोई सुख केवल पाया ॥
उमाराम नाचिंत सदाई । नाम रूप तज रोग ॥

हद बेहद व्यवहारा त्यागा। त्यागा हरपरु सोंग ॥ ५ ॥

सोरठा।

केवल अमल आनन्द। उमा आपही आपमें ॥
कबहुं न जाण सनन्द। सुर नर इन्द्र ब्रह्मादि सुख ॥६॥

इति श्रीअनुभवप्रकाशवैरागानिरूपणं नाम
त्रयोदशोअंग समाप्तम् ॥ १३ ॥ १६८ ॥

दोहा।

फिकर मांय सबही रहे। कीडी अरु ब्रह्मादि ॥
हाण लाभकी कल्पना। सबके लगी उपादि ॥ १ ॥
फिकर बडीहै महा बली। तीन लोक वश कीन ॥
फक्कर मेटी फिकरकूं। निज आतमकूं चीन ॥ २ ॥

कुंडलिया।

फक्कर फिकर फाकके ॥ ममता सबी मिटाय ॥
गुण इन्द्रियनकूं जीतके ॥ दिया विषैरस ढाय ॥
दिया विषैरस ढाय। नित निर आसे थाया ॥
आपा द्वैत बिसार। निजानंद आनन्द पाया ॥
निज केवल निरलेप है। चेतन ब्रह्म जु शुद्ध ॥
उमाराम फक्करकी निश्चै। जाण सके नहिं बुद्ध॥३॥
फक्कर लक्ष सबतें परे। निरमाया निरवाण ॥
ऊंच नीच घट बध नहीं। ज्यां कोई लाभ न हाण॥
ज्यां कोई लाभ न हाण। गगन ज्यूं सदा असंगी॥

अन्दर बाहर स्वछन्द । नहिं विछड्यां नाहिं संगी॥
उमाराम फक्कर सोइ चेतन । सर्वातीत पिछाण ॥
फक्कर लक्ष सबतें परे । निरमाया निरवाण ॥४॥
फक्करकी निश्चै है योई । फिकर रखे नहिं कोय ॥
हूं तूं राग द्वेष अहं आपो । द्वैत भाव दे खोय ॥
द्वैत भाव दे खोय । फक्कर सोई है पूरा ॥
शुद्ध केवल अद्वैत । सदा निरबंदण नूरा ॥
उमाराम फक्कर कही । फक्कर लेसी जोय ॥
फक्करकी निश्चैहै योई । फिकर रखे नाहिं कोय॥५॥
फक्कर सबी फिकरसूं न्यारा।दीवी अविद्या खोय॥
सत् अरु चिद आनन्दकूं । प्रत्यक्ष लिया जोय ॥
प्रत्यक्ष लिया जोय । फक्कर चेतन एकसारा ॥
नाम रूपकी हाण । आपही जाणण हारा ॥
उमाराम फक्करकी सोजी । फक्करहीकूं होय ॥
फक्कर सबी फिकरसूं न्यारा।दीवी अविद्या खोय६॥

दोहा ।

राव रंक सब वश भया । कनक कामणी भीतर ॥
उमाराम फक्कर सोई । इनते रहे निरंतर ॥ ७ ॥
तनमनके स्वारथ बंदे । जठे फकीरी काची ॥
उमाराम तन मन तजे । सोइ फकीरी साची ॥ ८ ॥
लाभहाण दोउ त्याग करी । फक्कर सदा शुद्धचित्त ॥
विचरे सबही लोकमें । कनक कामणी रहित ॥ ९ ॥

स्वर्ग मृत्यु पातालमें । चौदेहि लोक स्थान ॥
सुर नर असुर रूपसूं पंछी । सब रखे फक्करको मान ॥१०॥

चौपाई ।

फक्करकूं चेतनको ज्ञान । फिकरमाया रखे न आन ॥
आपोई आप अवर नहिं काई।अनुभव स्वरूप सदा सुखदाई ११॥

दोहा ।

निजानंद आनंदमें । नित थिति फक्करकी जु ॥
उमाराम अवधूतके । नाहिं उपाधि रहीजू ॥ १२ ॥

इति श्रीअनुभवप्रकाशनिश्चैफकीरीनिरूपणं नाम
चतुर्दशोअंग समाप्तम् ॥ १४ ॥ १८० ॥

दोहा ।

साच माहि प्रगट नित्यं । समर्थ सत् अलेख ॥
साच बिना पावे नहीं । कहा गृहस्थी कहा भेख ॥१॥

कुंडलिया ।

बुरी भली छूटी नहीं । तबलग मोटी पास ॥
सकल रोगको मूल यही।झिले नहीं निज साच॥
झिले नही निजसाच । संत सब कहता आया ॥
मै तूं तजो विकार । सत् जब सूझत भाया ॥
उमाराम निश्चै कही । करो दुईका नास ॥
बुरी भली छूटी नहीं । तबलग मोटी फास ॥२॥
झूठा घटमें बंद रह्या । मान लिया करसाच ॥

सदा साच देखे नहीं । यही भूल गल फास ॥
यही भूल गलफास । झूठ घट छोडो सारा ॥
जब दरसे निज साच । परम पद सुख अपारा ॥
उमाराम सत कही निश्चै । सन्त लखे यह वाच ॥
झूठा घटमें बंद रह्या । मान लिया कर साच ॥३॥
साच ग्रिह्यां ऐसी हुवे । जम झेडा टलजाय ॥
जन्म मरण दुखद्वन्द मिटे । ज्यूंका त्यूं ठहराय ॥
ज्यूंका त्यूं ठहराय । अमर आदू घर पावे ॥
ज्ञान भक्ति वैराग । साच ज्यां सब चल आवे ॥
उमाराम साचकी महिमा । सब संतां कहिगाय ॥
साचग्रिह्यां ऐसी हुवे । जमझेड़ा टलजाय ॥ ४ ॥

इन्दव छन्द ।

साचसूं सबी जगतका झबका ॥ दीसत आपनी आपनी ठाई ॥
साचसूं सती अग्नि जले पुनि ॥ साचसूं सूरा लडे रन माई ॥
साचसूं सती रु जती जगतमें ॥ साच बिना कोई सीझत नांई ॥
उमाजु राम विचारिया साचही॥अन्दर बाहर साच गुसांई ॥५॥

सोरठा ।

सत् चिद् आनंद साच । नाम रूप मिथ्या सबे ॥
आतम अज अवाच । उमाराम निरणे करी ॥ ६ ॥

इति श्रीअनुभवप्रकाशसाचनिरूपणंनाम पंचदशो
अंग समाप्तम् ॥ १५ ॥ १८६ ॥

कुंडलिया।

राम लखे सोइ रामका ॥ सब परपंच दे खोय ॥
निन्दता विन्दता ना करे ॥ राम सनेही सोय ॥
रामसनेही सोय ॥ सकलमें रामही देखे ॥
राग द्वेष बिसराय ॥ राम बिन और न पेखे ॥
उमाराम रत राममें ॥ संशय रही न कोय ॥
राम लखे सोई रामका ॥ सब परपंच दे खोय॥१॥
सकलसृष्टिमें रामविराजे ॥ रोम रोम भरपूर ॥
रह सबमें सबतें परे ॥ ज्यूं सरवामें सूर ॥
ज्यूं सर्वामें सूर ॥ राम निरबंदण सांई ॥
अचल अखंड अपार ॥ सदा शुद्ध राम गुसांई ॥
उमाराम राम यूं जाण्या ॥ सब संशय भई दूर ॥
सकल सृष्टिमें राम विराजे ॥ रोमरोम भरपूर॥२॥

दोहा।

रमतीत राम सब माहे यूं ॥ जैसे पुहुप सुगन्ध ॥
ज्ञान घ्राणमें प्रगटहीं ॥ राम निजानन्द कन्द ॥ ३ ॥
निराकार निज रामजी । ज्यूं घृत माहे स्वादि ॥
रसना विवेकमें प्राप्ति । सत् चिद् राम अनादि ॥४॥
ज्यूं काष्ठमें अग्निहे । ऐसे राम अरूप ॥
चक्षु विचारतें निरखिया । राम निरंजन रूप ॥ ५ ॥
स्पंद निस्पंद वाय ज्यूं । प्रगट गुप्त यूं राम ॥

स्पर्श साच पिछाणियां । राम अनामी नाम ॥ ६ ॥
निर्विकार नित रामजी । नभ ज्यूं नहीं लिपंत ॥
श्रोत्र शुद्ध अनुभव लह्यो । आतमराम अनंत ॥ ७ ॥
ज्ञान विवेक विचार पुनि । साच सहित अनुभोज्ञ ॥
सर्व स्वतंत्र रामजी । या विध लियाज्ञ सोज्ञ ॥ ८ ॥

चौपाई ।

अज कूटस्थ रामरमतीत ॥ ताते नाम अनाम उदीत ॥
महा अकरता राम गुसांई ॥ महा करत वेई समर्थ सांई ॥९॥

दोहा ।

लखे लखावे रामजी । राम सदा सुखधाम ॥
निर्विभाग थित रामजी । उमाराम सोई राम ॥ १० ॥
इति श्रीअनुभवप्रकाशरामनामनिश्चयनिरूपणं नाम
षोडशोअंग समाप्तम् ॥ १६ ॥ १९६ ॥

सोरठा ।

विद्याकी विधि दोय ॥ निज पण्डित दोनूं पढे ॥
सत् असत् भल जोय ॥ तजे असत् सत्कूं लहे ॥१॥
मिटे नहीं अज्ञान ॥ अक्षरकी विद्या पढ्यां ॥
अन अक्षर निज ज्ञान ॥ आतम विद्या सन्तकी ॥२॥

चौपाई ।

नानाविध बहु ग्रन्थ अपारा । बावन अक्षरका विस्तारा ॥
आतम अक्षरमें नहिं आवे । रहे निरंतर सब चेतावे ॥ ३ ॥

रवि प्रकाशतें जगकी क्रिये। सब क्रियामें रवि निष्प्रिये॥
यूं आतमतें अक्षर भ्यासे। आतम अन अक्षर निर आसे॥४॥
अक्षरमें है नाना भेद। अन अक्षर आतम निरभेद॥
जो उपज्या सोई अक्षर नासी। अन अक्षर आत्म अविनासी॥५॥
अक्षर विद्या सबी अविद्या। अन अक्षर आतम सत् विद्या॥
योई सत् अस्तका छाण। यूं जाण्या बिन मिटे न हाण॥ ६॥

दोहा।

सुर नर असुर विद्यार्थी। लिवी अविद्या थाप॥
सत् असतका छाण बिन। भुगते तीनूं ताप॥ ७॥
पचीसूं शस्त्र ले वांधे। और मारणके तांई॥
अपणा कारज होय एकमें। मार कलेजा मांई॥ ८॥
च्यार वेद नव व्याकरण। पटमत पढो पुराण॥
आतम विद्या ओलख्यां बिना। पढिया मिटे न हाण॥ ९॥
विद्या सोई आतमा चीन। योइ विद्या परवाण॥
पढ विद्या बैदा नहि छूटे। सोई अविद्या जाण॥ १०॥

कुंडलिया।

पण्डित परपंच छोडदो। दूर करो सब झोड॥
आतमकी विद्या बिना। कबहुं न पावो ठोड॥
कबहुं न पावो ठोड। भाव अक्षरका मेटो॥
अन अक्षर निज स्वरूप। अपणा आपही भेटो॥
उमाराम सत्विद्या भाखी। सबी वासना तोड॥
पंडित परपंच छोडदो। दूर करो सब झोड॥११॥

अन अक्षरतें अक्षर सबे । वो अक्षरतें बार ॥
अन अक्षर निज मूलहे । सन्तां किया विचार ॥
सन्तां किया विचार । सबी अक्षर खर मानो ॥
सत् चिद् आनंद अखंड । सोईआतम सत् जानो॥
पंडित सोई सुजाणहे । लखे जू सारासार ॥
अन अक्षरतें अक्षर सबे । वो अक्षरतें बाहर॥१२॥

दोहा ।

पढे सुणे कई जन्मलों । ग्रन्थ अनेक विचार ॥
आतमकी विद्या विन । संशय बधे अपार ॥ १३ ॥
विद्या असल ज्ञान आत्मको । सब विद्याको नूर ॥
यह विद्या तत्व सारहे । अक्षर विद्या कूर ॥ १४ ॥
आत्मविद्या शुद्ध स्वरूपी । निरविकार सुख सार ॥
जहँ अक्षरका लेश न कोई । आपोई आप अपार ॥१५॥
श्रुती अरु स्मृती कही । आतम विद्या साच ॥
नाम रूप खंडण कही । उमाराम सत्वाच ॥ १६ ॥

इति श्रीअनुभवप्रकाशविद्याअविद्यानिरूपणं नाम सप्तदशो अंग समाप्तम् ॥ १७ ॥ २१२ ॥

दोहा ।

क्रिया करे कइ जन्मलूं । जन्म मरण नहिं छूटे ॥
ब्रह्मज्ञान उद्योत होतही । छिनमें जेड़ा तूटे ॥ १ ॥

सोरठा।

कह उपाय यह वेद । ब्रह्मज्ञान उद्योतकी ॥
विषयवास सब छेद। सत् चिद् आनँद ब्रह्म तूं ॥ २ ॥

दोहा।

पंचभूत हंकार सहित । तजे मन मन आस ॥
ताहि क्षीण चेतन ब्रह्मप्राप्ति। आप ब्रह्म एक रास ॥ ३ ॥

चौपाई ।

जबलग ब्रह्मज्ञान नहिं आवे। तबलग भर्म कर्म नहि जावे ॥
होतांहीं ज्ञान कटे कर्म सारा।ज्यूं उगत भानु मिटे अँधियारा॥४॥
दीपक अरु चंद्रमा तारा । रातलियां प्रकाशे सारा ॥
यूं बुद्धीमें जगत विलास। नाना ज्ञान बुद्धि प्रकास ॥ ५ ॥

दोहा ।

बुद्धि आदि जग कल्पना । कहिये अल्प अज्ञान ॥
सदासुचेती शुद्ध सत् । अखे ब्रह्म निज ज्ञान ॥ ६ ॥
और ज्ञान सब है उरे । ब्रह्मज्ञान सब पार ॥
ब्रह्मज्ञान सोइ ज्ञान है। दूजा ज्ञान असार ॥ ७ ॥

त्रिभंगी छंद।

वाहण थके पूगन सके । पंछीये पके गरुड तिहां ॥
रस जो नाना अल्प वखाना । अमृत पाना पिया जिहां ॥
यूं ब्रह्म ज्ञाना रवी समाना। सब जग जाना दीप दिहां ॥
सन्तसुजाना जानत म्याना। केवल ज्ञाना सब परिहां ॥ ८ ॥

दोहा ।

और ज्ञान वुध्यादि ले । मृग तृष्णाको नीर ॥
ब्रह्मज्ञान अद्वैत अज । आपोई आप सधीर ॥ ९ ॥
कारण लिंग स्थूल जो । महाविकारी भर्म रूप ॥
नित असंग इनतें जुदो । चेतन ब्रह्म स्वरूप ॥ १० ॥
ब्रह्मज्ञान निज ज्ञान है । सबी ज्ञानको द्रष्टा ॥
तिर्गुण ज्ञान उपाधिमें । नही रुष्ट नहिं तृष्टा ॥ ११ ॥
ब्रह्म अजन्मा शुद्ध घन । अनुभौ स्वरूप अनादि ॥
द्वैताद्वैत भेद नहिं कोई । नहिं ज्यां माया आदि ॥१२ ॥

इति श्रीअनुभवप्रकाशब्रह्मज्ञाननिरूपणं नाम
अष्टादशोअंग समाप्तम् ॥ १८ ॥ २२४ ॥

दोहा ।

यह मन अन्धा असर । पसर मायामें भूलो ॥
आतमरूप बिसार । बंध्यो अज्ञ आपे दूलो ॥ १ ॥
मन है बड़ा खराब । रूप अपणा नहिं जोवे ॥
कामा कर निष्काम । जुगोजुग जन्म बिगोवे ॥ २ ॥
मन उलज्या विषय माये । जुगोजुग नाहि छूटे ॥
झूठा मान्या साव । याहीते उपजे खूटे ॥ ३ ॥
जंबका जाय करकपर ठाडा । ऐसे मनको भाव ॥
माया करकमें उलज्या । मिथ्या मानत साव ॥ ४ ॥
सब प्रपंच मनमानिया । विषयभोग ससार ॥

दुख सुखकूं सैंठा गह्या । हरष शोक उरधार ॥ ५ ॥
मलमूत्रका पींजरा । लिया साच मन थाप ॥
भरमें भवसागर माहिं । भुगते तीनूं ताप ॥ ६ ॥

चौपाई ।

शुभ अशुभ कर्म मन साथे । पाप रु पुण्य लिया दोइ माथे ॥
अर्थ रु धर्म काम विस्तारे । कबहूं जीते कबहूं हारे ॥ ७ ॥
काम क्रोध मोह लोभ हंकारू । यह निशिदिन मन संगबटपारू॥
मन इनके रंग माहे राता । जगे काम जब गिणे न नाता ॥ ८ ॥
मनमें क्रोध प्रगटे जबही । महाविराल दुखी है तबही ॥
मनके चढ्यो क्रोधको जहर । ताते फिरे चौरासी फेर ॥ ९ ॥
मोह मलेच्छ भया मनसात । मान्या मात रु तात जमात ॥
झूठी जग मनमाने साच । मोह मायामें रह्या जराच ॥ १० ॥

सोरठा ।

मन उर उदै हुवा जु । लोभ पापको बाप जो ॥
लोभ बडी है दाजु । जन्म जन्म छूटे नहीं ॥११॥

दोहा ।

अहंकारते प्रगट्या । मनमें अनन्त विकार ॥
सब परिवार अज्ञानको । रह जू मनकी लार ॥ १२ ॥
सबही जग मन मानियो । बिन मन जगहै नाय ॥
अरध उरध अरु लघु दीर्घ । ये सब मनके माय ॥१३॥

चौपाई ।

मनही धरणी मनहै नीर ॥ मनहै तेज रु मनी समीर ॥
इनके आगे मनहै नभ ॥ पंचरूप मन जगहै सभ ॥ १४ ॥
रजनी दिवस चंद अरु सूर ॥ ये सबहीहैं मनको नूर ॥
मन ब्रह्मा विष्णु शिव शेष ॥ नाम रूप सब मनको भेष ॥१५॥

इन्दव छन्द ।

होतीकूं करे अनहोती पलकमें । होय अनहोती सो होती ठहरावे॥
महाविपरीत गती मनकी पुनि । जैसे बाजीगर बाजी दिखावे ॥
मन अनंग अपर बली अति । तीनूंही लोककूं नाच नचावे ॥
मनही विधि निषेधको करता । मनही थापत मन उठावे ॥१६॥

कुण्डलिया ।

मन जालम जोरावर योधा । महा बलीहै दूट ॥
तीन लोक पर हुक्म चलावे । बंद लगाया झूठ ॥
बंदलगाया झूठ । विषयमें डूबा बैठा ॥
सत् संभाले नाही । अस्तकू गहिया सैठा ॥
उमाराम अनुभव प्रकाश्या । मनका रह्या न लेस॥
शुद्ध सनातन आतमा । अपणा आप महेश॥ १७॥

दोहा ।

जीव ईश अरु ब्रह्मका । मनही मान्या भेद ॥
उमाराम निज बोध ले । मनकूं दियाज छेद ॥ १८ ॥

इति श्रीअनुभवप्रकाशमननिरूपणं नाम एकोनविंशो अंग सम्पूर्णम् ॥ १९ ॥ २४२ ॥

दोहा।

दृश्यादृश्य अदृश्य तिहुं । यह जडमाया रूप ॥
तूं चेतन इनते जुदो। अमल अनादि अनूप ॥ १ ॥

चौपाई।

जबही विषय वासना ग्रेही। तब निज चेतनता विसरेही ॥
विषय वासना सबही तज। तूं चेतन निरमल नित अज ॥ २ ॥

दोहा।

अस्त अज्ञ जड तूं नहीं । देह इन्द्रिय नहिं कोय ॥
तूं चेतन सुख रूप है । आपही आपकूं जोय ॥ ३ ॥
मनमानी मुक्ती चौरासी । आपे बन्धा विख्यासी ॥
निरालम्ब निर्वाण तूं । निर्विकार द्रष्टासी ॥ ४ ॥

चौपाई।

नीर दिष्ट एकूं इकसारा। तरंग दिष्ट भ्यासे बहु धारा ॥
यूं नाम रूप आपा तज दूर। तूं चेतन निरबंदण नूर ॥ ५ ॥

दोहा।

पट्विकार दे त्याग । जाग जो रूप तुमारा ॥
बाहर भीतर एक। तूंई निर्लेप अपारा ॥ ६ ॥
धर्म कर्म डूबण तिरण। यह तन मनकूं जोय ॥
हाण विरध तोकूं नही। तूं नित न्यारा सोय ॥ ७॥
पंच तत्व गुण तीन सबै। जग तेरे आधार ॥
निराकार निरबंद तूं। शुद्ध चेतन एक सार ॥ ८ ॥

देह इन्द्रिये मन बुध जड़ । तोय सके नहिं जान ॥
तोहीतैं चेतन ह्वै । यह सब माया आन ॥ ९ ॥
विन चेतन चलता नही, चेतन चले न कोय ॥
चलता नाम रूप सब मिथ्या । तूं चेतन थिरसोय॥ १०॥
जग स्वप्न दे खोय । समझ सत् स्वरूप तुमारा ॥
निर्विकल्प निरधुंद । सोई तूं चेतन प्यारा ॥ ११ ॥
नाम रूप तोमें नहीं । तूं नाम रूप क्यों होय ॥
जैसे भूषण हेममे । हेम न भूषण कोय ॥ १२ ॥
अनहोती जग तरंग सम । तोय बिना नहिं आन ॥
सुखसागर चेतन तूं । आपही आपकूं जान ॥ १३ ॥
नाना रूप ज्यूं नभमें । बणे रहे लय होय ॥
तू चेतन निरलेप यू ॥ ज्यूंका त्यूं थित सोय ॥१४॥

चौपाई ।

मृतकातें नाना घट भ्यासे ॥ यूं तूं सब जगकूं प्रकाशे ॥
ब्रह्मादिक उपजे होय भंग ॥ तू चेतन शुद्ध स्वरूप अभंग॥१५॥
बणें मिटे देहादिक सोई ॥ तोकूं हाण विरध नहिं कोई ॥
चिदाकाश चेतन निरधुन्ध ॥ तेरे नहीं मुक्ति अरु बंध ॥ १६ ॥
पांच पचीस देहके सात ॥ निशिदिन करत रहे उत्पात ॥
निराकार चेतन तू शुद्ध ॥ तिर्गुणी देहादिक अशुद्ध ॥ १७ ॥

दोहा ।

कारण लिग स्थूल जू ॥ तिहूं अवस्था जाण ॥
यह सव धर्म शरीरको ॥ तूं चेतन निरवाण ॥ १८ ॥

चौपाई।

जाग्रत स्वप्न सुषुपती तीन । एक एकमें होवे खीन ॥
नित व्यभिचार गुणाके माई ॥ तू चेतन ज्यूंका त्यूं सांई ॥१९॥

दोहा।

उत्पति स्थिति लय गुणनमें ॥ गुण होवे मिटजाय ॥
तूं उपजे विणसे नहीं ॥ चिंता करे वलाय ॥ २० ॥
फेन बुदबुदा लहर तिहूं ॥ जलतें जुदी न कोय ॥
ऐसे विश्व तोहिमें ॥ तोमे न विश्व होय ॥ २१ ॥
तेरेही अज्ञानते ॥ रज्जु सर्पवत जगत ॥
पुनि तेरे निज बोधते ॥ नहिं कोई जगत् अजगत ॥२२॥

चौपाई।

तूं है सब मायाको पती ॥ ज्ञान स्वरूपी निर्मल अति ॥
सब माया तेरे आधार ॥ अजं कूटस्थ स्वरूप तुमार ॥ २३ ॥

दोहा।

पंचभूत माया मई । इनमें तिरगुण ताप ॥
सदा शान्ति सुख धाम तूं । निरमाया निज आप ॥२४॥

सोरठा ।

निरउपाधि निरद्वंद । सतसुख परम प्रकाश तूं ॥
निजानन्द आनन्द । शिव स्वरूप शुद्ध बोध निज ॥ २५ ॥

इति श्रीअनुभवप्रकाश स्वरूपज्ञानउपदेशनिरूपणं
नाम विंशमोअंग समाप्तम् ॥ २० ॥ २६७ ॥

दोहा।

मेरी भूल मोतें पडी। मोतें मिटी जु सोय॥
हूं चेतन अद्वैत शुद्ध। मोमें भूल न कोय॥ १॥
मेरेतें सब जग भया। मैंई लिया जगधार॥
मैंई जगसूं न्यारा थया। मोमें जगत असार॥ २॥
अन होतो होतो सो भ्यासे। ज्यूं स्वप्नो निद्रा मांई॥
यूं जगहै मो मांहे अनोतो। हूं चेतन जग नांई॥ ३॥
हूं चेतन निर्दोषहूं। सब मेरेतें चोज॥
सबी चोजमें मेहूं पूरा। निज स्वरूप थित मोज॥ ४॥
मिटणे में हूं ना मिटूं। हूणमें नहीं हुवा॥
हूंणे मिटणे बीचहु। नहीं हूं मिल्या न जुवा॥ ५॥
कहा आस्ती कहा नास्ती। स्वप्ना कैसी काणी॥
मेरे अद्वै स्वरूपमें। इन दोनोंकी हाणी॥ ६॥
आस्ती नास्ती अज्ञकी। अज्ञ ज्यूं लहरीवत॥
हूं चेतन दरियाव सम। परमप्रकाशी सत॥ ७॥
रज्जूमें सर्प सीपमें रूपा। अन होता परवाण॥
यूंही है सब जग मो मांही। हूं चेतन निरवाण॥ ८॥
चेतन द्रष्टा आपमें। और न दीसे कोय॥
विधिनिषेध कहां पाइये। ज्यूंका त्यूं थित सोय॥ ९॥
भजण तजण मोमें नहीं। हूं भजूं भजाऊं नाय॥
निरमल शुद्ध स्वरूप हूं। भजूं तजूं कहो काय॥ १०॥

भजणा तजणा भूलमें। यह महा अज्ञान ॥
हूं चेतन्य अनन्त गति । शुद्ध स्वरूप निज ज्ञान ॥११॥
इति श्रीअनुभवप्रकाशनिजज्ञाननिरूपणंनाम
एकविंशमो अंग समाप्तम् ॥ २१ ॥ २७८ ॥

दोहा।

शुद्ध चेतन अद्वैत अज । निर्विकार सुखधाम ॥
ताकी इच्छा शक्तितें । या अनन्तां नाम ॥ १ ॥

मनहर छन्द।

पुरुष प्रकृति मेहतत्व अहंकार पुनि ॥
रज तम सत् गुन इच्छाहीके नाम है ॥
व्योम रु समीर तेज नीर भूमी चंद सूर ॥
लोकहु चतुर्दश इच्छाहीका धामहै ॥
सुर नर असुर चौरासी लक्ष च्यारूं खाणि॥
सबहीका कारण जु इच्छा माया नाम है ॥
गिणती करत कछु पार नहिं आवे कोय॥
करही विवेक निज होय उमाराम है॥ २ ॥

दोहा।

निज विवेकतें ज्ञान है। बिन विवेक है नाय ॥
जोग आदि क्रिया सबै। है मायाके माय ॥ ३ ॥
माया अति प्रचंड है। सब जग लियाजु घेर ॥
बहु रस जाली नाखके। सबकूं कियाज जेर ॥ ४ ॥

कुंडलिया ।

माया वडी अपरवल कहिये । बहुत मचाया फैल ॥
चवदेई लोक समेटके । लिया उदरमें मेल ॥
लिया उदरमें मेल । नचावे बहु विधि माया ॥
कई वार उपजाय । कई फेर वार खपाया ॥
उमाराम माया है ऐसी । किम कर छूटे गैल ॥
माया वडी अपरबल कहिये । बहुत मचाया फैल ॥ ५ ॥
माया कहिये वासना । मिथ्या मानी योय ॥
निरालेप चेतन अनादू । सत्कर जाण्या सोय ॥
सत्कर जाण्या सोय । इसी विध माया जीता ॥
आतममें गलतान । रह्या निरभोय न चिन्ता ॥
उमाराम तजी वासना । माया रही न कोय ॥
माया कहिये वासना । मिथ्या मानी योय ॥ ६ ॥
तोयतें बीज वृक्ष बहु भ्यासे । सर्व प्रकाशी तोय ॥
उलटा देखो तोयमें । बीज वृक्ष नहि कोय ॥
बीज वृक्ष नहिं कोय । बीज ज्यूं माया झांई ॥
उतपाति थिति अरु लय । सबी मायाके मांई ॥
उमाराम निरमाया चेतन । तोय ज्यूं है सोय ॥
तोयते बीज वृक्ष बहु भ्यासे । सर्व प्रकाशी तोय ॥ ७ ॥

रेखता छन्द ।

शुद्ध चेतन अनन्त अनूप है । आपही आप नहीं लेस माया ॥

वाहूकी सत्तातें कोट ब्रह्मंड है ॥
रहे मिट जाय लघु दीर्घ काया ॥
आदि अरु अन्त पुनि मध्य वाको नहीं ॥
सत् सुख परमप्रकाश थाया ॥
रमझ ऐसी लखी उमाराम आपमें
मिट्या अज्ञान शुद्ध स्वरूप पाया ॥ ८ ॥
अलककी पलकतें खलक केता भया ॥
पलकते खलकका काम सारा ॥
सच्चिदानन्द इण पलक अरु खलकतें ॥
आप अपल नित रहत न्यारा ॥
तहां जगत नहीं जात कोई पुण्य नहि पाप ॥
कोई दिवस नही रात नहीं जीत हारा ॥
सन्त सूरा लखे भेद अलेखका ॥
कहत है उमाराम रमझ प्यारा ॥ ९ ॥

मनहर छंद।

अखंड अपार दधी आरही न पार कोउ ॥
अनन्त अकथ गति निर्गुण कहत है ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश नाम रूप सब जग ॥
ब्रह्म दरियाव ज्यांमें लेरांसी भ्यास तूहे ॥
सत् चिद्र सुखरूप चेतन विराजे आप ॥
निराधार निकलंक अचल रहतु है ॥
ऐसी जाण जाणी हम अपणा आपके मांई ॥

उमाराम निस्संदेह वचन भखतु है ॥ १० ॥
आतम अगाध अति पारही न आवे कोउ ॥
निरमल नचिन्त नित आतम अपार है ॥
आत्मा चेतावे चेत अनेकां देखावे भेक ॥
दिष्टा सबीको आप अन्दर बाहर है ॥
साराही प्रपंच भर्म आत्मामें पावै नाहीं ॥
अक्रिये नहचल निज आप सुखसारहै ॥
अनुभवप्रकाश उदै उमाराम आप मांई ॥
प्राप्ति आत्मस्वरूप संशय न लगार है ॥ ११ ॥

कुंडलिया ।

चेतनके आधारहै । चेत अचेत विलास ॥
आप इनमें मिटे न होवे । नित न्यारा प्रकाश ॥
नित न्यारा प्रकाश । आप निरबंधन सांई ॥
विधि निषेध विकार । नहिं चेतनके मांई ॥
निजानंद निरवास है । उमाराम थित स्वरूप ॥
चेतनकी चेतन लखे । नहिं कोई रूप अरूप॥१२॥
उत्पतिथिति लय भावना । नहि चेतनमें कोय ॥
थाप उथाप न पाईये । नहीं एक नहिं दोय ॥
नहीं एक नहिं दोय । आपही आप रहवाया ॥
नित ज्यूंका त्यूं आप । नहीं कोई गया न आया ॥
उमाराम चेतनकी निश्चै । चेतन जाणे सोय ॥
उत्पतिथिति लय भावना । नहिंचेतनमे कोय१३॥

दोहा।

पंचतत्त्व गुण तीन तें। रहित आतमा आप ॥
सो आतम आवे नहिं जावे। नहीं क्रिया कर्म ताप ॥१४॥

चौपाई।

चेतन बिन क्रिया नहिं कोई ॥ क्रियामें चेतन नहिं होई ॥
ज्यूं रवितें जग क्रिया भ्यासे । यूं चेतन सबतें निरआसे ॥१५॥
तंतु कर भ्यासे घट पट। घट पटमें तंतू अविघट ॥
पट पूतरी सत्या सत दोई। चेतन है सदा सत सोई ॥ १६ ॥

दोहा ।

मन मायाका खेल । होत पूतरी पट तांई ॥
अरु तंतू अलख अखेल। तहां मन माया नांई॥ १७॥
सत् बाजी वर खेल पसारा। भांत भांत दिखलाया ॥
जड़ खिलका उन्हीं तें भ्यासे। आप रहत निरदाया॥१८॥
निरदाया दायांसूं दूरा । नहिं दायामें हेत ॥
नहि चुम्बक मांहि चेष्टालोहकी।लोहचुम्बकाबिनानचेत॥१९॥
निरबंधि बँधिया नहीं । नहीं बंधणमें निरबंध ॥
चेतनमें कहां पाईये । क्रिया कर्म अरु फंद ॥ २० ॥
चेतन सर्वातीतहै । अद्वितीय अविनाश ॥
निरद्वंदी निरवाण नित । अनुभव स्वयं प्रकाश ॥ २१ ॥

चौपाई।

अनन्त घटामें सूरज भ्यासे। है सब मांहे रहत निरआसे।

यूं आतम निरलेप रहवाया । बाहर भीतर अलख अजाया ॥२२॥
नाम रूप अन आतम मांई । आतममें अनातम नांई ॥
अन आतम मिथ्या आकार । आतम चेतन अखंड अपार॥२३॥

दोहा ।

नाम रूप कल्पत सबे । ज्यूं मृग तृष्णा नीर ॥
आतम सत् प्रत्यक्ष है ॥ चेतन शुद्ध गँभीर ॥ २४ ॥

कुण्डलिया ।

नित केवल सत् ब्रह्म है । जग सब अस्त असार॥
गीता वेद पुराण कहत है।सन्त भाखत यह सार॥
सन्त भाखत यह सार । इनीमें झूठ न कोई ॥
यह विवेक निज छाण । लख्या सोई निरभै होई॥
उमाराम अनुभौ उदे । जाण्यां सारासार ॥
नित केवल सत् ब्रह्महै।जग सब अस्त असार॥२५॥

इति श्रीअनुभवप्रकाशनिजविवेकनिरूपणं नाम
द्वाविंशमोअंग समाप्तम् ॥ २२ ॥३०३॥

दोहा ।

परमातम विज्ञान है । आतम है निज ज्ञान ॥
नाम रूप अनातमा । यह कहिये अज्ञान ॥ १ ॥
भानू बिन नाहिं घाम है । घाम बिना नहिं भान ॥
यूं आतम परमात्मा । अद्वितीय निज ज्ञान॥२॥
रजनी ज्यूं अनातमा । तामें भेद अपार ॥

तारा चंद मशाल पुनि। एकू एक अधिकार॥३॥
चींटी ब्रह्मा आदि ले। लघु दीरघ बहु देह॥
न्यून विशेष समान पुनि। अनातम है येह॥४॥
अनआतम अज्ञान न पावे।निज आतमके मांय॥
जैसे प्रत्यक्ष रविमें। रजनी पावे नांय॥५॥
आतम सोई परमात्मा। स्वते शुद्ध प्रकाश॥
शुद्ध चेतन केवल सदा।आपही आप अविनाश ६

इति श्रीअनुभवप्रकाशअनात्माखण्डन आत्मापरमात्माएकता-निरूपणं नाम त्रयोविंशमोअंग समाप्तम्॥२३॥ ३०९॥

दोहा।

पंचभूत देह इन्द्रिये नहिं। चित्त मन बुध अहंकार॥
शिवरूप थित मोहिमें। नहिं सुंन्य असुंन्य लिगार॥ १॥
निवृत्ति प्रवृत्ति नहीं। नहीं प्राप्त नहिं हाणी॥
नही बन्ध निरबन्ध कोउ। मम स्वरूप निरवाणी॥२॥

सोरठा।

नहिं बाणी खाणी च्यार। निरवाणी वाणी में॥
शिव स्वरूप मम सार। परमाणी परमाण नही॥ ३॥

दोहा।

नहीं साच नहिं झूठ है। नही पक्ष निरपक्ष॥
अनिरवाच मम स्वरूपमें। नहीं मूर्ख नहिं दक्ष॥ ४॥
नहीं वर्ण आश्रम नहीं। नहीं पुण्य नहि पाप॥

निरअंजन मम स्वरूपमें । नहीं पुत्र नहि बाप ॥ ५ ॥
नहीं स्वार्थ परमार्थ नहीं । नहीं मोक्ष नहिं बन्द ॥
अज कूटस्थ स्वरूप मम । निरउपाधि निरद्वन्द ॥ ६ ॥
नहीं शास्त्र बकता नहीं । नहीं दान जिज्ञासु ॥
निरविभाग चैतन्यमें । नहीं वास निरवासु ॥ ७ ॥
नहि कोइ ज्ञान अज्ञान है । नहिं कोइ काम अकाम ॥
संग वियोग न पाइये । शुद्ध स्वरूप सुखधाम ॥ ८ ॥
नहीं दीर्घ नहिं लघु पुनि । नहिं सूक्षम नहिं स्थूल ॥
नही प्रगट नहिं गुप्तहै । मम स्वरूप निज मूल ॥ ९ ॥
नहिं कोई चित्त अचित्तहै । नही प्रोक्ष अप्रोक्ष ॥
निरविकार चैतन्य अज । नहीं रोक्ष नहिं तोक्ष ॥ १० ॥
नहीं आस्ती नास्ती नहीं । नहीं एक नहिं दोय ॥
सतसुख परम प्रकाश मम । भेद अभेद न कोय ॥११॥
निष्प्रिये प्रिये नहीं । नहि कोइ शेष अशेष ॥
स्वते प्रकाश स्वरूप निज । नहिं कोइ देख अदेख ॥१२॥

सोरठा ।

ध्याता ध्यान न ध्येय । ज्ञाता ज्ञान रु ज्ञेय नहिं ॥
निजानन्द मम हेय । ज्ञाता ज्ञात अज्ञात नहीं ॥१३॥

दोहा ।

द्रष्टा दर्शन दृश्य नही । ना कोइ विधि निषेध ॥
अमल अच्छेद्य स्वरूपकूं । नाही खेद अखेद ॥ १४ ॥

लेख अलेख न भज्य तज्य। नहिं कोइ भोक्त अभोक्त ॥
निष्क्रिये क्रिये नहीं। चिदानन्द निरमोक्त ॥ १५ ॥
भावाभाव अभाव नहिं। नहीं द्वैत अद्वैत ॥
शुद्ध सनातन स्वरूप मम। नहिं कोइ मिथ्यान द्वैत॥१६॥

सोरठा।

ईश्वर जीव नाहीं जु। नहिं कारण कारज नहीं ॥
अपर स्वरूप माही जु। नहीं ब्रह्म माया नहीं ॥ १७॥

दोहा।

विश्व रु तेजस प्राज्ञ नही। नहिं बिसरचा नहिं जुत ॥
निज प्रकाश चेतनमें। नहिं कोई सुमति कुसुत॥ १८॥
जाग्रत स्वप्न सुषुपति नहीं। नहीं तुरीये प्रकाश ॥
अचल अनन्त स्वरूपमें। नहि कोइ भास अभास॥१९॥
अन आतम आतम नहीं। नाहिं अन्दर नाहिं बाहर ॥
अनिरस्वभाव स्वरूपमे। नहिं कोई सार असार॥२०॥
नहीं जोग जोगी नहीं। नहिं कोई लोय अलोय ॥
नहिं निर्गुन सर्गुन नहिं। अखिल स्वरूप ममसोय॥२१॥

सोरठा।

नहि कोई मान अमान। गुरू शिष्य नहिं अथिर थिर॥
नहीं भूल नहि जान। विमल सदा सुख स्वरूपमें॥२२॥

दोहा।

नहि नासी अविनासी नही। नित्य अनित्य न कोय॥

अनुभव स्वरूप अनन्त मम। आपही आप निज सोय॥
इति श्रीअनुभवप्रकाशस्वरूपअनुभवनिरूपण नाम
चतुर्विंशोअंग समाप्तम् ॥ २४ ॥ ३३३ ॥

छप्पय छन्द ।

यह अनुभवप्रकाश अंग चौवीस कहाई। कुंडलिया॥५५॥इक्कावन है चौपाई ॥ ५१ ॥ सप्त जु इन्दव छन्द ॥ ७ ॥ मनहर तीन बखाने ॥ ३ ॥ तीन छप्पय पुनि छन्द ॥ ३ ॥ रेखता चतुर्थ जु ठाने ॥ ४ ॥ एकसौ तिरासी दोहा ॥१८३॥ सोरठा छन्द छब्बीस ॥ २६ ॥ एक त्रिभंगी छन्द है ॥१॥ यह तीनसौ अरु तैंतीस ॥ ३३३ ॥

दोहा ।

उमाराम अवधूत कृत । अनुभवप्रकाश निजसार ॥
तीनसौ अरु तैतीस छन्द। सुखराम लिख्या जु विचार॥ १॥३३३॥

इति श्रीउमारामजीमहाराजकृत-
अनुभवप्रकाश समाप्त ।

श्रीअचलूरामजीमहाराजकृत-छन्द ।

छन्दमनहर ।

कबहुँक इहै मन ब्रह्ममे लगावे ध्यान ।
कबहुँक इहै मन योगी निराधारहै ॥
कबहुँक इहै मन त्यागी होय माने मोद ।

कबहुँक इहै मन विषयको विकार है ॥
कबहुँक इहै मन अनुभव वाणी कथै।
कबहुँक इहै मन करत विचार है॥
कहै अचलूराम मन तेराही सर्व काम।
तेरी तो गतीको कोई वारनहिं पारहै ॥ १ ॥

छन्दइन्दव।

कहै मन आपकूं न्यून गिने पुनि। कहै मन आपकूं श्रेष्ठबखाने॥
कहै मन आपकूं पण्डित मानत। ग्रन्थ पढे बहु चातुरी ठाने ॥
कहै मन सबकूं मूरख मानत। आपनि बात कहै परवाने ॥
अचलूराम ये मनकी मायाजू। मनकूं त्याग रहो निरवाने ॥२॥

छन्दमनहर।

मायाको प्रचण्ड वेग पारनहि जाने देत।
कोऊ साधु शूर वीर मायागुण जीती है॥
ऋद्धी होय छललेत सिद्धी होय छललेत।
छललेत नवनिधी योगी भोगी जती है॥
मायाचिह्न ज्ञानी ध्यानी मायाचिह्नअभिमानी।
माया चिह्न गृही त्यागी सबकूं नचातीहै॥
कहै अचलूराम मायाको प्रचण्ड काम।
मुवांते छोड़े नाहीं लारे होत सती है॥ ३ ॥

छन्दमनहर।

अनुभवरूपी बोध भान हृदयमाहिं ऊगो आन।
माया अन्धकार जाके मिटगई रातीहै ॥

जाके नेडी काया नाहिं जाके नेडी माया नाहिं ।
निर्गुण अखण्ड निराकार एक ज्योति है ॥
त्रिगुण अतीत होय माया सब दूर करी ।
निर्गुण ब्रह्ममें जाय करी स्थिती है ॥
कहे अचलूराम हम पायो है परमधाम ।
जहाँ नही माया नाम ज्योतिमें ज्योति है ॥ ४ ॥

कुण्डलिया ।

आपा तो ओलख्या नहीं, पढ्या चारों वेद ।
भेदग्रंथी तूटी नही, लख्या नहीं अभेद ॥
लख्या नहीं अभेद, शास्त्र उक्तही बक्या ।
वाचक हुआ विशाल, विद्यामद छक्या ॥
अचलूराम गुरूकृपा बिन, भेद भ्रम नहिं छेद ।
आपा तो ओलख्या नहीं, पढ्या चारों वेद ॥५ ॥
परधनकी बातां किया, घरकी भूख न जाय ।
घरकी भूख जब जायगी, जो धन हाते आय ॥
जो धन हाते आय, तबी दालिद्र जावे ।
जबी होय संतोष, जाणिये बैठो खावे ॥
अचलूराम मुखते कह्यां, ब्रह्म धन्न नहिं पाय ।
परधनकी बातां कियां, घरकी भूख न जाय ॥६॥

इति ।